

YOGA
AND
PERFECTION
SWAMI PURNANANDA

साधना और
सिद्धि

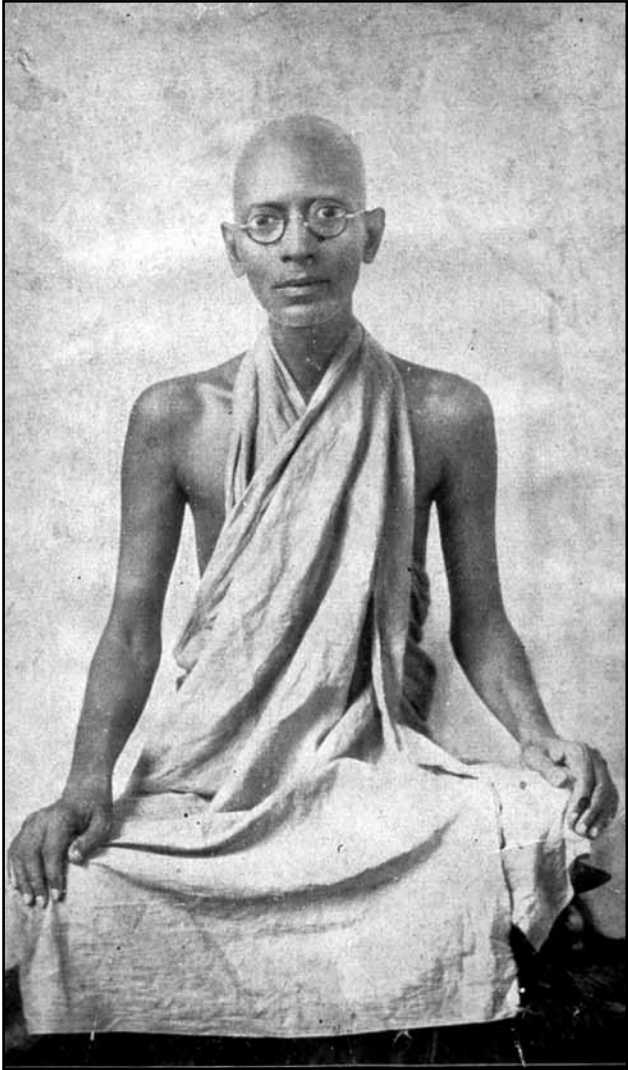
(भावानुवाद)

जयप्रकाश अग्रवाल

ॐ सत्यं शिवं सुन्दरम्



इसी रूप में प्रकट हो भगवान शिव ने
स्वामी जी को स्वयं दीक्षा दी ।



पूज्यपदा स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज

YOGA AND PERFECTION

SWAMI PURNANANDA

(With Translation in Hindi)

साधना और सिद्धि

(भावानुवाद)

अनुवादक : जयप्रकाश अग्रवाल

प्रकाशक

ब्रजनिधि-प्रकाशन, चार संप्रदाय के पीछे

गौरानगर कालोनी, वृन्दावन, (उ.प्र)

दूरभाष : 0565-2456189

Published By:

Brajnidhi Prakashan

Back of Chaar Sampradaya

Gauranagar Colony, Vrindawan (U.P)

Phone: 0565-2456189

साधना और सिद्धि

(स्वामी पूर्णानंद जी महाराज रचित Yoga and Perfection, मूल अंग्रेजी सहित)

- अनुवादक : जयप्रकाश अग्रवाल
प्रकाशक : सुश्री सुशीला शर्मा, एम.ए.
ब्रजनिधि प्रकाशन, वृंदावन, उ.प्र. (भारत)
दूरभाष 0091-565-2456189
सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन सुरक्षित
प्रकाशन वर्ष : ई. सन 2011
प्रथम संस्करण
न्यौछावर : भारू 140/-, नेरू 225/-

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

1. निर्मला शर्मा, एम.ए.बी.टी., चार संप्रदाय के पीछे
गौरानगर कालोनी, वृंदावन (उ.प्र.)
दूरभाष: 0565-2456189
2. छैल बिहारी खंडेलवाल, खंडेलवाल एण्ड संस, अठखम्भा,
वृंदावन, दूरभाष: 0565-2443101
3. जयप्रकाश अग्रवाल, काठमान्डू, नेपाल
ईमेल : jpnpag@yahoo.com, दूरभाष: 98510-68847

अनुक्रमणिका

1.	प्रकाशकीय – पूजनीया सुशीला शर्मा एम.ए.	VI
2.	नम्र निवेदन – जयप्रकाश अग्रवाल	IX
3.	कथ्य-अकथ्य – जयप्रकाश अग्रवाल	1
4.	साधना और सिद्धि – खंड-१	3
5.	साधना और सिद्धि – खंड-२	153
6.	परिशिष्ट A – साधना और सिद्धि-अर्थ व संदर्भ	250
7.	परिशिष्ट E – ब्रजनिधि-प्रकाशन के अन्य ग्रन्थ	262

Contents

8.	Yoga and Perfection – Part-1	2
9.	Yoga and Perfection – Part-2	152
10.	Appendix B – Yoga and Perfection-Glossary	253
11.	Appendix C – Yoga and Perfection-Publisher's Note	257
12.	Appendix D – Yoga and Perfection-Gist	259

॥ श्री हरिः ॥

प्रकाशकीय

पूज्य पाद श्री पूर्णानंदजी महाराज, मेरे पिताजी पं. जयनारायणजी के गुरुदेव, बंगाली शिवालय, हरिद्वार रोड, ऋषिकेश में लगभग १४० वर्ष पूर्व हुए। इनको साक्षात् भाललोचन, त्रिशूल-बाघम्बर धारी शिवजी ने प्रकट होकर दीक्षा दी। शिवालय में इनका समाधि मंदिर है जहाँ शिवजी महाराज का चित्र स्वामीजी के श्री विग्रह के साथ विराजमान है। सन १९३६ में इनका दीपावली के दिन देहावसान हुआ था।

पूर्व जीवन के विषय में थोड़ा बहुत पिताजी से सुना था। बंगलादेश में शायद बारिसाल में शरदचंद्र घोष नाम से ज्ञात हुए। पहिले वकालत की पर इस भ्रूठ-सच के महकमे को छोड़ पढ़ाना शुरु किया पर वहाँ भी अधिक टिक न सके। पढ़ाते-पढ़ाते कुछ विद्यार्थी इनसे प्रभावित हुए। लगता है, आगे चलकर वही इनके शिष्य हुए। इनका यह पता नहीं कैसे गृहत्याग और संन्यास हुआ। सभी शिष्य पूर्णतः त्यागी-विरागी, आध्यात्मिक शिष्टाचार से युक्त थे- कुछ शिष्यों के नाम और दर्शन महाराजजी के साथ मैंने किए थे- पूज्यपाद स्वतंत्रानंदजी, ज्ञानानंदजी, तुरियानंदजी, निरंजनानंदजी, अमलानंदजी, स्थिरानंदजी, अच्युतानंदजी, भूमानंदजी महाराज प्रभृति हुए थे।

स्वामीजी का आदेश शिष्यों के प्रति विशेष था कि वे अपने शिष्य नहीं बनायेंगे और न ही स्टेज पर जाकर अपना प्रचार-प्रसार करेंगे। इस चेतावनी का इनके शिष्यों ने दृढ़तापूर्वक पालन किया। परिणामतः आज इस भव्य शिवालय की स्थिति यह है कि किसी अन्य पार्टी के अधिकार में है।

शिवालय के तीन द्वार हैं। भक्तिमार्ग, ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग। भीतर दीवार पर चारों संप्रदायों के आचार्यों के चित्र लगे हुए हैं। इससे प्रमाणित है कि स्वामीजी सब प्रकारों के भेदभावों से रहित एक समन्वयात्मक जीवनोपयोगी आध्यात्मिकता के प्रवर्तक थे। इन्होंने अपने शिष्यवर्ग को जो पत्र बंगला तथा अंग्रेजी भाषा में लिखे हैं, उन सबका हिन्दी अनुवाद पूज्य सनातन देवजी सोलन ने किया था। ये पत्र तीन भागों में “वेदवाणी” नाम से पुस्तक रूप में ब्रजनिधि प्रकाशन, वृंदावन से प्रकाशित हैं। पहला भाग तो महाराजजी के जीवन काल में ही १९३४ में प्रकाशित हो चुका था, शेष दो भाग आठवें दशक में प्रकाशित हुए। “वेदवाणी” को अनेक अनुभवी संत महात्माओं ने हर प्रकार से सराहा है।

स्वामीजी के अनेक कृति-साहित्य संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषा में प्राप्त हैं। संस्कृत में “पूर्ण ज्योति” अत्यंत जीवन उपयोगी ग्रंथ है। अंग्रेजी में Yoga and Perfection नाम से गेय काव्य है। शिवालय में इन सब ग्रन्थों को संरक्षण के अभाव में दीमक कीटाणु ने जीर्ण-शीर्ण कर दिया।

मेरे पिताजी एक गुरुभक्त गृहस्थी थे। जब भी गुरुजी की चर्चा हम बच्चों को सुनाते तो उनका गला भर आता- आँख, नाक बह जाते थे। मेरा विद्या संस्कार और मेरे भाई लक्ष्मी नारायण का नामकरण संस्कार उन्हीं महाभाग ने करवाया था। इस प्रकार हम बहिन-भाइयों में भी स्वामीजी के प्रति विशेष श्रद्धा बनी रही। पिताजी ने उनके ग्रन्थों से उनके विचार सुना-सुना कर हममें उनके प्रति विशेष श्रद्धा बढ़ाई। पिताजी की प्रबल कामना बनी रही कि इन ग्रन्थों का पुनरोद्धार हो। उनके जीवनकाल में उनकी कामना पूर्ण न हो सकी परंतु भाई की प्रबल इच्छा के फलस्वरूप Yoga and Perfection का पुनरोद्धार हो चुका है। महाराजजी की यह कृति १९२६ में कश्मीर में संपन्न

[VIII]

हुई थी। लगभग ८५ वर्ष बाद यह कृति पुनः सत्पात्रों में प्रेरक सिद्ध हो रही है।

नेपालवासी श्री जयप्रकाश अग्रवाल ने इस कृति का पुनरोद्धार किया। यह पुस्तक ज्यों की त्यों प्रकट कर दी है, केवल इतना ही नहीं इनको इससे इतनी आनंदोपलब्धि हुई कि वह अपने आपे में न रहे और अंग्रेजी पदों का बड़ी सुंदर मधुर हिन्दी भाषा में अत्यंत भावपूर्ण पद्यात्मक अनुवाद प्रस्तुत कर दिया। जयप्रकाशजी की पत्नी उषा ने उन पदों को अपनी सुरीली स्वर लहरी में मुझे मोबाइल पर गाकर कई बार सुनाया और प्रायः सुनाती हैं। केवल इतना ही पर्याप्त नहीं, हिन्दी नाम “**साधना और सिद्धि**” देकर और भी रोचक बनाने में संलग्न हैं। प्रयास था कृति को इस प्रकार प्रस्तुत करें कि पुस्तक की बाईं ओर अंग्रेजी पद और उसके ठीक सामने हिन्दी पदानुवाद आये। इसी प्रयास से यह अद्भुत सर्वोपयोगी रचना ब्रजनिधि प्रकाशन, वृंदावन से प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक जन-जन को एक नई जीवन शैली जीने का संदेश देगी ऐसी हमें पूर्ण आशा है।

जयप्रकाश जी का एक और प्रयास स्फुरित हो रहा है। वह Yoga and Perfection का नेपाली भाषा में भी पद्यानुवाद करने में संलग्न हैं। उन दोनों पति-पत्नी के आनंद की अनुभूति को कैसे प्रस्तुत करूं ! मैं और मेरे बहिन-भाई किसी प्रकार का आभार प्रकट करके इन्हें किसी प्रकार की ठेस नहीं पहुंचाना चाहते।

-सुशीला शर्मा

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

नम्र निवेदन

साक्षात् भगवान् शिव द्वारा प्रत्यक्ष दीक्षा प्राप्त स्वामी पूर्णानन्दजी महाराज द्वारा अंग्रेजी में रचित गेय काव्य Yoga and Perfection हर मानव को ऐसा जीवन जीने का उपाय बताता है जिसकी उसको चाह होती है। आनंद, संतोष और शांति जो सभी के सच्चे अभीष्ट हैं, पाने के लिए परमानंद स्वप्रकाश से योग ही राह है, लक्ष्य है। समभाव, इंद्रिय निग्रह, अनुशासित पवित्र दिनचर्या के साथ सात्विक आहार, विचार द्वारा ही सद्गुरु के निर्देशन में योग संभव है। भय, “मैं” और “मेरा” को नष्टकर पूर्ण समर्पण के द्वारा ही योग की पूर्णता और लक्ष्य की प्राप्ति होती है। हरेक मनुष्य की लक्षित अभिलाषा आनंद और शांति उसके अंदर ही है, फिर भी कस्तूरी मृग की तरह वह भागता रहता है। परमात्मा ही जाता, पालन कर्ता एवं संहारक है। वही सभी कार्यों का कर्ता, कारक और कारण है। इसी सत्य को आत्मसात करना योग है। सब चराचर में परमात्म को देखते हुए आनंद बाँटकर ही आनंद प्राप्त किया जा सकता है। सुख शांति मांग कर नहीं मिलते, बाँट कर मिलते हैं। अधिकांश बातें अधिकांश जानते हैं परंतु अनुसरण नहीं करने से सारी समस्या है। सरल भाषा में विस्तार के साथ स्वामीजी ने क्या करना और क्या नहीं करना समझाया है।

स्वामीजी का महान संदेश अंग्रेजी में है, अगर हिन्दी में भी यह उपलब्ध हो तो आज के संदर्भ में मानवता के लिए अति उपयोगी होगा इसी भाव से **साधना और सिद्धि** नाम से हिन्दी में पदानुवाद प्रभु कृपा तथा गुरु और संतों के असीम अनुग्रह से संपन्न हुआ है। मेरी पुत्री रचना तथा जमाता नीलेश केडिया को पूजनीया सुशीला बहिनजी ने कृपा कर Yoga and Perfection के

[X]

पुनर्मुद्रण का कार्य सौपा और उन दोनों ने जब इसका जिक्र मुझसे किया तो मैंने पुनर्मुद्रण का काम सम्हाल लिया। कार्य प्रारंभ हुआ Yoga and Perfection के पुनर्मुद्रण से और उस कार्य के दौरान जागृत स्वप्रेरणा प्रभुकृपा ही थी जिसका फल यह अनुवाद है। प्रभुकृपा से मैं निमित्त बना हूँ। निमित्त से अधिक मैं कुछ नहीं हूँ क्योंकि मुझमें न वह सामर्थ्य ही है और न ही योग्यता जो संतवाणी पर कुछ लिख सके। मूलकृति के स्वामीजी के संदेश को यथाशक्ति मूलभाव में ही रखा गया है। फिर भी यह भावानुवाद ही है, शब्दानुवाद नहीं। अंग्रेजी और हिन्दी दोनों पाठ साथ-साथ होने से मूलभाव और स्पष्टता के साथ उभरेगा यही विश्वास पुस्तक को द्विभाषी बनाने की प्रेरणा है। मुझपर तथा मेरे परिवार पर हुई इस महती प्रभु कृपा और सत्संत अनुग्रह के प्रति मैं अति कृतार्थ हूँ। विशेष रूप से अति उदारमना पूजनीया सुशीला बहिनजी और उनके ठाकुर जी के प्रति जिन्होंने यह अवसर हमें दिया और इतना ही नहीं इसे पूर्ण करने की प्रेरणा तथा निरंतर आशीर्वाद जिसके बिना यह निमित्त अनुवाद कभी भी संभव नहीं होता। इस सत्य को मैंने बार-बार अनुवाद कार्य के दौरान अनुभूत किया है। उषा ने भी इन पदों को गाना ईश्वर अनुकंपा से शुरू किया। शब्दों का मोल स्वर से कई गुणा हो गया ऐसा पूजनीया सुशीला बहिनजी ने हमें बताया।

मूल अंग्रेजी में तथा हिन्दी अनुवाद में प्रयुक्त कुछ संस्कृत शब्दों का अर्थ तथा कुछ संदर्भों को दो परिशिष्टों में देकर स्पष्ट करने के प्रयास के साथ मूल अंग्रेजी पुस्तक के प्रकाशकीय तथा पुस्तक सार को भी अंग्रेजी में ही परिशिष्टों में रखा गया है। प्रभु से प्रार्थना है कि कृपा जनित यह अनुवाद पाठकों को अर्थपूर्ण लगे और स्वामी जी का मूल संदेश उन्हें मिले।

-जयप्रकाश अग्रवाल

कथ्य - अकथ्य

मानव ने कब डाली फूल में,
आती सुगंध, सुरंग फूल से ।
कथ्य-अकथ्य इतना ही है बस—
अक्षर से अक्षर, भाव मूल से ।

आग्रह ने किया लेखन है,
अनुग्रह ने ही किया अनुवाद ।
अवसर की लेखनी से ही—
मिला ये गुरुओं का प्रसाद ।

जिसने दिया उसको हर शब्द,
हर भाव समर्पित एक सुमन ।
कृत्य-कृत्य, कृपा माँ की सारी—
माँ के चरणों में मिले शरण ।

योग एण्ड परफेक्शन के भाव,
साधना और सिद्धि में अनुदित ।
स्वामी पूर्णानन्द संदेश ये—
जिज्ञासु पाठकों को समर्पित ।

YOGA AND PERFECTION

PART I.

Torch of knowledge held in hand,
 Non-attachment's armour grand,
 Longing look on Grief-less Land—
 March with these, O Nectar's Son !

1

Grief-less Land doth ever shine,
Chit-ful, bliss-ful, causeless, fine,
 Pure, though *nâms*' and *rûpas*' mine;—
 This thy Goal, O Nectars' Son !

2

Goal is boundless, changeless, lo !
 Goal alone is real, know;
 All but Goal is *Mâyâ*'s show;
 Mâyâ foe, O Nectar's Son !

3

Mâyâ foe misleads, remember,
 Binding thee to body's chamber,
 Pain and pain gives out of number !—
 Kill thou *Mâyâ*, Nectar's Son !

4

साधना और सिद्धि

खण्ड - १

ज्ञान दीप को लेकर हाथ,
विराग कवच को लेकर साथ ।
परम लोक की ओर बढ़ो तुम—
बिन रुके चलो, हे अमृत सुत !
(१)

‘पावन मेरे नाम और रूप,
चिन्मय-आनंदमय और अनूप ।’
पर ‘परम प्रकाशित-परम लोक’,
लक्ष्य तुम्हारा, हे अमृत सुत !
(२)

असीम निर्विकार लक्ष्य तुम्हारा,
लक्ष्य ही तेरा, सत्य सहारा ।
लक्ष्य सिवा सब माया क्रीड़ा—
माया शत्रु है, हे अमृत सुत !
(३)

माया करती पथ भ्रष्ट सदा,
तन से बंधन, दे कष्ट सदा ।
पीड़ा-पीड़ा माया पीड़ा,
कर माया मर्दन, हे अमृत सुत !
(४)

Be past *Mâyâ*, blissful be,
 Painless, formless, boundless ye,
 Purest *Âtman* ever-free,
 Thou *asangam*, Nectar's Son !

5

Thou *asangam* Self Divine,
 Body-ness is bondage thine;
 Evil sure are *me* and *mine*;
 Be not worldly, Nectar's Son !

6

World-affections sever, sever;
 Mix with worldlings never, never;
 Move sincerely ever, ever;
 March thy way, O Nectar's Son !

7

March thy way with heart and soul,
 Stop not till thou reach the Goal;
 Goal for thee, and thou for Goal;—
 March with hope, O Nectar's Son !

8

Hope and zeal and faith and care,
 Meekness, calmness, pureness rare,
 Keen intelligence acquire;
 Move content, O Nectar's Son !

9

माया छूटी, परमानंद मय,
अनंत आनंदित प्रभु में लय ।
परम आत्मन सदा मुक्त हो—
तुम्हीं असंगम, हे अमृत सुत !
(५)

तुम्हीं असंगम, आत्म देव,
देह ही बंधन, एक मेव ।
'मैं' 'मेरा' भ्रम सब माया के—
संसारी ना, हे अमृत सुत !
(६)

मन ! जग बंधन तोड़ो-तोड़ो,
मन ! संसारी से ना जोड़ो ।
मन ! दूरी रखकर माया से—
राह चला चल, हे अमृत सुत !
(७)

चलते रहना बिन रुके लक्ष्य तक,
मन भाव भरे हों प्रभु के लक्ष्य तक ।
लक्ष्य तुम्हारा, तुम्हीं लक्ष्य के—
विश्वास लिए, हे अमृत सुत !
(८)

आशा, उत्साह मन में वर कर,
शांति, दीनता, शुचिता भर कर ।
परम ज्ञान की ओर बढ़ो अब—
संतुष्टि लिए, हे अमृत सुत ।
(९)

Calm, content thou patient be;
Opposites all do bear ye;
Don't do harm to any ye,
Be thou selfless, Nectar's Son !

10

Selfless, fearless, truthful be,
Badness shun and blameless be.
Living plain, alone, must ye
Yog perform, O Nectar's Son !

11

Yog requires a teacher true,—
Perfect seer and selfless too,
Learn'd in books and prideless who,
Pure and kind, O Nectar's Son !

12

Such a teacher when thou get
Faith in whom thou have direct,—
Free to be from *Mâyâ*'s net
Sit at his feet, Nectar's Son !

13

Sit at feet of teacher kind;
Yog perform with body, mind;—
Word and thought to *Brahman* bind;
Aum is *Brahman*, Nectar's Son !

14

शांत, संतुष्ट, बन धैर्यवान,
 समदृष्टि सभी, समभाव मान ।
 मन, वचन, कर्म से बुरा न कर—
 सहना विरोध, हे अमृत सुत !
 (१०)

बन निःस्वार्थ, अपना सच्चाई,
 निष्कलंक हो, छोड़ बुराई ।
 सादा जीवन, एकाकी मन—
 योग करो अब, हे अमृत सुत !
 (११)

‘योग’, चाहिए सद्गुरु सच्चा,
 ऋषि, निःस्वार्थ, सद्गुरु अच्छा ।
 अभिमानहीन, योगी, ज्ञाता—
 पवित्र, दयालु, हे अमृत सुत !
 (१२)

पाओ ऐसा गुरु जब पास,
 जिसमें मन को हो विश्वास ।
 माया जाल से मुक्ति हेतु—
 चरण पकड़ ले, हे अमृत सुत !
 (१३)

लो सद्गुरु के तुम पकड़ चरण,
 योग करो, कर तन-मन अर्पण ।
 जोड़ ब्रह्म से मनसा-वाचा,
 ओंकार ब्रह्म है, हे अमृत सुत !
 (१४)

Aum-ful word and *Brahm*-ful thought,
 Posture, attitude as taught,
 Ardent love for Object sought;—
 This one way, O Nectar's Son !
 15

Thousand ways for thousand men;
 Way thine own from teacher ken;
 March thy way till Goal attain,
 Ceaseless march on, Nectar's Son !
 16

Ceaseless, breakless, earnest work;
 Work of *Yog* thou must not shirk;
 Think not future to be dark ;—
 Help behind, O Nectar's Son !
 17

Helping Hand, oh, Guiding Hand
 Leads thee on to Bliss-ful Land !
 Mother's Hand, lo ! Mother's Hand !—
 Love and love Her, Nectar's Son !
 18

Love Her with thy heart and soul;
 Give to Her thy heart the whole;
 Love is She, and She thy Goal;—
 Whom else to love, Nectar's Son ?
 19

ओंकार नाद और ब्रह्म विचार,
मुद्रा, भाव भी गुरु अनुसार ।
उत्कट प्रेम, लक्ष्य से मन में—
राह एक ये, हे अमृत सुत !
(१५)

हजारों राहें, हजारों राही,
तेरी राह तो गुरु आज्ञा ही ।
चलते जाना लक्ष्य प्राप्ति तक—
बिन रुके चलाचल, हे अमृत सुत !
(१६)

अनवरत, निरंतर, सच्चा कार्य,
योग कार्य कर शिरोधार्य ।
भविष्य बहुत ही उज्ज्वल सबका—
हैं माँ संबल, हे अमृत सुत !
(१७)

मार्गदर्शक, माँ है आलोक,
ले जाती माँ परम लोक ।
है कृपा-दया सारी माँ की—
माँ का हो जा, हे अमृत सुत !
(१८)

हो अंतस्तल में माँ का रूप,
कर पूर्ण समर्पण रूप अनूप ।
माँ ही लगन, बस माँ में मगन—
और कौन अब, हे अमृत सुत !
(१९)

Love alone Her, be thou Her,
 Be thou ever child to Her,
 Love resignéd, selfless, Her;
 Think and love Her, Nectar's Son !

20

Hear and think and sing of Her;
 Crying, weeping pray to Her;
 Work to worship dearest Her;
 Busy with Her, Nectar's Son !

21

Busy with Her with devotion;
 As thou likest form relation;
 Be sincere in thought and action.—
 Thus get love thou, Nectar's Son !

22

Love Her, — Source of life and light,
 Mercy, wisdom, glory, might;
 Feel Herself in every sight,
 Everywhere, O Nectar's Son !

23

Everywhere and all is She,
 Every action's doer free;—
 Thou not doer, Hand Her see;
 Self surrender, Nectar's Son !

24

भाव यही, हम माँ के बालक,
 माँ ही जातक, माँ ही पालक ।
 अनुरक्ति उसी में, भक्ति उसी में—
 शरणागत माँ, हे अमृत सुत !
 (२०)

देखो, सोचो, माँ गुण गाओ,
 जागो, सोओ माँ मय पाओ ।
 काम करो, माँ पूजा मान—
 माँ में मस्त, हे अमृत सुत !
 (२१)

मात, पिता, सखा, सखी, प्रिया ।
 उत्सर्ग भाव ने रूप दिया ।
 माँ से तो मनचाहा नाता—
 अभी जोड़ ले, हे अमृत सुत !
 (२२)

कीर्ति, कृपा, ज्ञान का दाता,
 बल, वैभव, बुद्धि का ज्ञाता ।
 जीवन, प्रकाश का नित्य श्रोत—
 खो जा उसमें, हे अमृत सुत !
 (२३)

घट घट में व्यापी प्रभु मिला,
 बिन उसके कब पात हिला ।
 तुम नहीं, कर्ता बस ईश्वर—
 आत्म समर्पण, हे अमृत सुत !
 (२४)

Self surrender, peaceful be;
 Don't thou think at all for thee;—
 Welfare thine own best knows She;
 All She does, O Nectar's Son !
 25

All for thee does Mother, see;
 Nature's ample bounties free
 By Her grace but come to thee;—
 Mercy's Main She, Nectar's Son !
 26

Mercy's Mine – the Hand Divine
 Holds thy life and makes thee shine;
 See how system works so fine ;—
 Grateful be, O Nectar's Son !
 27

Grateful be, and ever see
 Hand Divine pour grace on thee, —
 Helping, guiding weakling thee !
 Folded – hands be, Nectar's Son !
 28

Folded hands and bended knee,
 Tearful eyes and feelings free,
 Speak to dearest Loving Sea.—
 What else can thou, Nectar's Son ?—
 29

सच अपनी तो है चिन्ता व्यर्थ,
जब भला करने में माँ समर्थ ।
कर समर्पण, पा ले शांति—
सब माँ करतीं, हे अमृत सुत !
(२५)

निज संतति का माँ को ध्यान,
कितना बड़ा, प्रकृति वरदान ।
वनस्पति, खनिज, धूप, जल, वायु—
कृपा मूल माँ, हे अमृत सुत !
(२६)

कृपा सिंधु माँ कृपा निधान,
जीवन, प्रकाश उसका विधान ।
सबकुछ नियमित, सबकुछ अद्भुत—
कृत्य-कृत्य हो, हे अमृत सुत !
(२७)

दाता की तो सब कठपुतली,
सब कठपुतली, दाता असली ।
जिसमें चाबी भरता है वह—
वही नाचता, हे अमृत सुत !
(२८)

करबद्ध हो, घुटनों के बल,
आँखें भरकर, भाव विह्वल ।
प्रियतम से माँगो प्रियतम को—
और करो क्या, हे अमृत सुत !
(२९)

“Can’t I *Râm*-like pluck out eye !
 Can’t like lark on sky rely !
 Can’t like *Buddha Mâr* defy !—
 Thou the prop of helpless son !

30

“Helpless I am, helpless sure !
 Body, mind—unfit, impure !
 Can’t approach Thee;— take to Your
 Lap benign this helpless son !

31

“Take me to Thee, Mother dear,
 Let me see Thee far and near,
 Everywhen and everywhere;
 Open eyes of love-less son !

32

“Give me heart of love and love;
 Only want I love, Thee love !
 May I love Thee, ever love !
 More I want not, I Thy son !

33

“Want not else but love for Thee;
 Want not earth’s and heaven’s glee;
 Want not *Moksha*’s bliss for me;
 Grant me love,—I stone-like son !

34

“पास नहीं कुछ मेरे प्रभुवर ।
 बेर, कदली और आर्त्तस्वर ।
 शबरी, विदुरनी और गजराज—
 अवलंब तुम्हीं, हे अमृत सत !”
 (३०)

“असहाय, निरीह, जीवन मेरा—
 अयोग्य, अक्षम है तन-मन मेरा ।
 संबल बन जा, हाथ बड़ा कर—
 गोद तुम्हारी, हे अमृत सत !”
 (३१)

“ले ले माँ चरणों के पास,
 मुझको बस तेरा आभास ।
 यत्र-तत्र-सर्वत्र तुम्हीं माँ,
 अब आँख खोल दे, हे अमृत सत !”
 (३२)

“कृपा ये, करूँ पूर्ण समर्पण,
 लगन लगे, खुद को कर अर्पण ।
 रोम-रोम में बस जा मेरे—
 मीरा सी मैं, हे अमृत सत !”
 (३३)

“नहीं और कुछ तुझसे प्यार,
 नहीं लोक परलोक अपार ।
 न भुक्ति-मुक्ति का सुख चाहिए—
 भर दे प्रेम रस, हे अमृत सत !”
 (३४)

“If I love Thee, care not sure
 Thousand births all low and poor;
 Grace Thou me, this boy impure,—
 Grace with love this helpless son !”—

35

Then doth Grace Divine descend,
 Thy defects all early mend,
 Lead thee on to wished-for end.—
 Grace is needed, Nectar’s Son !

36

Till is showered Grace on thee,
 Can’t thou cross the *Mâyâ*’s sea;
 All thou do and all know ye—
 Vain without Grace, Nectar’s Son !

37

Saving Grace success doth give;
Tâpas life for Grace thou live;
 Do thy best; and then, believe,
 Grace will come, O Nectar’s Son !

38

Try thy best, and do thy might,
 Try the methods sound and right,
 Work for *tapas* day and night;
 Take no rest, O Nectar’s Son !

39

“प्रभु पारसमणि, मैं पत्थर ।
जनम-मरण का लंबा चक्कर ।
स्पर्श मिले चरणों का तेरे—
बनूँ अहिल्या, हे अमृत सुत !”
(३५)

तब दिव्य कृपा की वर्षा होती,
देदीप्यमान की अद्भुत ज्योति ।
सब कमियाँ मिट जाती क्षण में—
कृपा चाहिए, हे अमृत सुत !
(३६)

पा लो दैवी कृपा उपहार,
होगा माया सागर पार ।
कर्म-ज्ञान सारे के सारे—
व्यर्थ कृपा बिन, हे अमृत सुत !
(३७)

कृपा से ही मिलती सफलता,
तापस का जीवन बदलता—
प्रयास करो, विश्वास करो,
कृपा मिलेगी, हे अमृत सुत !
(३८)

पूरी लगन, ऊर्जा के साथ,
तपस करो तुम दिन और रात ।
गुरु आज्ञा का पालन करके—
विश्राम नहीं, हे अमृत सुत !
(३९)

What is rest, O Nectar's Son,
 When the Goal is not yet won,
 When thou, fire-girt, painful run ?—
 Bitter is life, Nectar's Son !

40

Bitter life, enjoyments all;
 Gall and worm-wood sure this all;
 Earth appears a fired ball;—
 Burning fire, O Nectar's Son !

41

Fire all objects, firing, lo !
 Fire above and fire below,
 Fire around, within too, oh !
 When Goal far off, Nectar's Son !

42

Lord not seen and Goal not gained,
 When true *yog* is not obtained
 Peaceless sure is life that's chained !—
 Yogins feel this, Nectar's Son !

43

Be thou *yogin*—all-wise seer;
 Thou for *yog* do first prepare;
 Step by step thou move with care;
 Haste makes waste, O Nectar's Son !

44

कैसा रुकना, कैसा विश्राम ?
 नहीं राम तो, नहीं आराम ।
 है राह कठिन पर बढ़ता चल—
 दुःखमय जीवन, हे अमृत सुत !
 (४०)

कड़वे सारे जग के प्रमोद ।
 कड़वाहट, तपिश और अवरोध ।
 भू-जैसे आग का गोला—
 आग चतुर्दिक, हे अमृत सुत !
 (४१)

आगे-पीछे ऊपर-नीचे,
 जलता जग जब, आँखें मींचे ।
 अंतर-बाहर, आग ही आग—
 लक्ष्य दूर हो, हे अमृत सुत !
 (४२)

ना लक्ष्य प्राप्ति, ना प्रभुदर्शन,
 और मिले नहीं योग पावन ।
 बेड़ीबद्ध जीवन अशांत—
 योगी जाने, हे अमृत सुत !
 (४३)

पाना पहले योग अधिकार,
 योग से पहले होना तैयार ।
 हर पग ध्यान से रखना तुम—
 हड़बड़ बुरी, हे अमृत सुत !
 (४४)

Step by step must thou proceed
 As does teacher kindly bid;
 Self-willed whims to ruin thee lead;
 Selfness harmful, Nectar's Son !
 45

Self-assertion, self-conceit,
 Self-esteem are bad, mind it;
 Self-blind men fall into pit—
 Thou obey, O Nectar's Son !
 46

Do obey, thou to obey;
 Blind thou art to *Moksha's* way;
 So then, must thou, come what may,
 Follow teacher, Nectar's Son !
 47

Guide thou follow; bring it would
 Heart's and mind's and body's good;
 Learn thy duties, and thou should
 Nicely do them, Nectar's Son !
 48

Do thy duties great and small,—
 To thyself, to God, to all—
 Gladly, nicely, timely, all;
 Be not lazy, Nectar's Son !
 49

स्वेच्छा रोकती अग्रगमन,
जैसा गुरु का मार्ग दर्शन ।
तुम चलो मगर धीरे-धीरे,
स्वार्थ रोकता, हे अमृत सुत !
(४५)

बहुत बुरी है आत्म प्रशंसा ।
अभिमानी होता निर्धन सा ।
हैं गिरते आत्मांध गर्त में—
आज्ञा पालन, हे अमृत सुत !
(४६)

गुरु जो कहें वही मान कर,
गुरु आज्ञा का सम्मान कर ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ते जाना—
गुरु के पीछे, हे अमृत सुत !
(४७)

गुरु का करो पूर्ण अनुसरण,
अनुशासित हों तन-मन-जीवन ।
कर्त्तव्य ज्ञान पाकर गुरु से—
कर्त्तव्य करो, हे अमृत सुत !
(४८)

लघु-गुरु, सारे कर्त्तव्य करो,
सानंद करो, ना आलस्य करो ।
प्रभु का, सबका, अपना भी—
सही समय पर, हे अमृत सुत !
(४९)

Be not lazy, sloth thou kick;
 Love not ease, nor comfort seek.
 Iron-crown of duty seek
 Ever-active, Nectar's Son !

50

Ever active, busy be,
 Smallest time must not lose ye,
 Have thou patience, reason free,
 Mind thy duties, Nectar's Son !

51

Must become thou moral first,
 Blameless be thou, shun thou must
 Work and word and thought unjust,
 Shun all *ripus*, Nectar's Son !

52

Ripus six all must shun ye;
 Purest, honest, justest be;
 Self control must ever ye,
 Seek thou health, O Nectar's Son !

53

Laws of health thou must not kick,
 Selfishness thou must not seek,
 Be sincere and truthful, meek;
 Guard thy tongue, O Nectar's Son !

54

जीवन कठोर, आलस्य त्याग,
 काँटों का ताज, मेहनत की आग ।
 कर्मठ रहना, आराम न कहना—
 बस क्रियाशील, हे अमृत सुत !
 (५०)

क्रियाशील और व्यस्त बनो,
 तुम क्षण भर भी ना पस्त बनो ।
 धैर्य धरो और कारण भूल—
 कर्तव्य करो, हे अमृत सुत !
 (५१)

मन-वचन-कर्म से न्यायी हो,
 तुम नैतिक-अमृत पायी हो ।
 अवगुण रहित, हो चरित्र महान—
 शत्रु दमन करो, हे अमृत सुत !
 (५२)

षटरिपु, सभी का दमन करो,
 उचित, अनुचित का मनन करो ।
 आत्म नियंत्रण भी करना है—
 स्वस्थ रहो तुम, हे अमृत सुत !
 (५३)

स्वास्थ्य नियम रखना सब याद,
 करना पहले स्वार्थ का त्याग ।
 निष्ठा, सत्य, दीन स्वभाव—
 नियंत्रित जिह्वा, हे अमृत सुत !
 (५४)

Let not thy tongue loosely run,
Unbecoming words all shun,
Needless talk shun, blame thou none,
Be not talk-big, Nectar's Son !
55

Talk-big men are very light;
They have not the might to fight.
Barking dog would seldom bite.
Be thou grave, O Nectar's Son !
56

Reverent and grave be ye.
Polite in thy manners be.
Talk not of thy piety.
Be thou selfless, Nectar's Son !
57

Selfish motives give up all;
Live for Lord, and live for all;
Serve thou all, serve Lord in all,
Serve with love, O Nectar's Son !
58

Love thou Lord, His Glory see;
Feel His Mercy, Wisdom ye;
Think on Name of Nectar- Sea;
Only Truth He, Nectar's Son !
59

जिह्वा न बन जाए मंथरा,
 बोल न बोलो, कटु छल भरा ।
 असत्य, नाहक, वचन न बोलो—
 क्यों बड़बोले, हे अमृत सुत !
 (५५)

बड़बोला हल्का होता है,
 वह हर मुकाबला खोता है ।
 केवल भौंके वह क्या काटे—
 गंभीर बनो बस, हे अमृत सुत !
 (५६)

बस धीर बनो, गंभीर बनो,
 नम्र, मृदुल बस दीन बनो ।
 न अपनी जय जयकार करो—
 निःस्वार्थ बनो, हे अमृत सुत !
 (५७)

स्वार्थ सोच सारी तू त्याग,
 सबकी खातिर निशि दिन जाग ।
 ईश्वर सेवा, कर्म तुम्हारा—
 सबमें ईश्वर, हे अमृत सुत !
 (५८)

करुणामय ज्ञान-गुण आगर,
 कृपा-प्रकाश और अमृत सागर ।
 नाम, नाम, हो जा नाममय—
 नाम सत्य है, हे अमृत सुत !
 (५९)

He made all, and all are He;
 In all only Truth is He.
 All without Him false must be,
 Must be bitter, Nectar's Son !
 60

When through Him thou all things see
 All things Nectar-raining be;
 All without Him paining thee !
 Lord of Love He, Nectar's Son !
 61

Through the specks of love when see
 Mysteries unfold to thee,
 Atom loving will tell thee
 Vedas, Purâns, Nectar's Son !
 62

Do thou love the Lord for ever;
 Do forget Him never, never;
 World-affections sever, sever;
 Busy with Him, Nectar's Son !
 63

Truest use of eyes to see
 Him alone by Whom they see;
 Let thine eyes alone Him see,
 See none else, O Nectar's Son !
 64

रचा ब्रह्माण्ड, रची माया,
 प्रभु बिन जग ही भूठा पाया ।
 सबमें है केवल एक सत्य—
 सब ईश्वर हैं, हे अमृत सुत !
 (६०)

ईश्वर के संग जब जाओगे,
 सब कुछ अमृतमय पाओगे ।
 प्रभु बिन जग तो दुःख का सागर—
 प्रभु तो प्रेमानंद, अमृत सुत !
 (६१)

प्रेम चक्षु से प्रभु देखा जब,
 खुले रहस्य सब, तब के तब ।
 कण-कण से प्रेम सुनाएगा—
 वेद पुराण, हमें अमृत सुत !
 (६२)

हो प्रेम लक्ष्य प्रभु के चरण,
 बस छूटे नहीं प्रभु की शरण ।
 जग आसक्ति टूटे-टूटे,
 रम जा उसमें, हे अमृत सुत !
 (६३)

तब हो दृष्टि की सार्थकता,
 राम से सिर्फ राम निहारता ।
 बस निरख राम, दृष्टि राममय—
 देख न और कुछ, हे अमृत सुत !
 (६४)

Truest use of minds to think
 Him alone by Whom they think;
 Let thy mind alone Him think,
 Think none else, O Nectar's Son !
 65

Think Him, feel Him everywhere;
 See Him far and see Him near;
 See Him ever, see with cheer
 Viswa-mûrti, Nectar's Son !
 66

Forming eyes all sees through them,
 Planting ears all hears through them,
 Making minds all thinks through them,
 Works all bodies, Nectar's Son !
 67

All the bodies are but His,
Thou and *thine* are surely His,
 Give up all to Him, be His,
 Melt in love, O Nectar's Son !
 68

Full of love thou worship Him,
 From the scriptures read of Him,
 Ever do rely on Him,
 Be thou holy, Nectar's Son !
 69

मन मष्तिष्क में जिसकी शक्ति,
 मन मष्तिष्क में उसकी भक्ति ।
 मन में सदा प्रभु रूप-अरूप,
 ना ठौर और को, हे अमृत सुत !
 (६५)

विचार भी है, विश्वास भी,
 'प्रभु' दूर भी है, पास भी ।
 देख प्रसन्न मन सदा प्रभु को—
 विश्व मूर्ति वे, हे अमृत सुत !
 (६६)

सब रूप देखती, प्रभु दिखाते,
 मृदु-कटु ध्वनि सब प्रभु सुनाते ।
 बधिर सुने, गिरि लंघे पंगु—
 चले देह उससे, अमृत सुत !
 (६७)

तेरा ही प्रभु, तन-मन मेरा,
 प्रभु मैं तेरा, मेरा तेरा ।
 तेरा तुझको अर्पण कर दें—
 प्रभु का हो जा, हे अमृत सुत !
 (६८)

प्रेम डूब, कर प्रभु का अर्चन,
 शास्त्रों से कर प्रभु का वाचन ।
 राम भरोसे कर अपने को—
 हो जा पावन हे अमृत सुत !
 (६९)

Being holy, selfless thou
Do thy duties duly now.
Leave not duties half-done thou;
 Know thy duties, Nectar's Son !
 70

Daily, yearly duties all,
Other duties sacred all,
Ceremonies holy all
 Do them duly, Nectar's Son !
 71

Stagnant life is not for you;
Progress claims that you must do
Introduce some changes too
 In thy duties, Nectar's Son !
 72

When to do it, how to do
Learn thou from thy teacher true;
Give effect to changes you;
 Duties do well, Nectar's Son !
 73

Duties well-done pureness bring;
Vivek, *virâg* both then spring;
Both these weak ; to duties cling;—
 Purer thus be, Nectar's Son !
 74

होकर पवित्र, होकर निःस्वार्थ—
कर्म करो, गीता के पार्थ ।
ना कोई कर्म अधूरा छूटे—
संपूर्ण करो, हे अमृत सुत !
(७०)

दैनिक, वार्षिक सारे कर्तव्य,
अन्य कर्तव्यों का भी महत्त्व ।
तीज, त्यौहार और लोकाचार—
सब करने हैं, हे अमृत सुत !
(७१)

नदियाँ बनना, न रुका नीर—
अग्रगमन कर धीर वीर !
कर आवश्यक परिवर्तन भी—
जीवन शैली में, अमृत सुत !
(७२)

कब और कैसा परिवर्तन ?
जैसा हो गुरु का निर्देशन ।
परिवर्तन को लागू करके—
कर्तव्य करो तुम, हे अमृत सुत !
(७३)

कर्म से ही जागता है धर्म,
धर्म से होता चित्त शुद्धतम ।
हैं फिर विवेक, विराग जागते—
बस कर्म करो, हे अमृत सुत !
(७४)

कर्तव्य जनित जब विवेक विराग,
 मन शक्ति जगे और जगे त्याग ।
 दृढ़ संकल्प, विश्वास अकल्प—
 आत्म परिचय हो, हे अमृत सुत !
 (७५)

विवेक उज्ज्वल शुद्ध और दृढ़,
 देता अवश्य श्रद्धा अडिग ।
 सात्विक पवित्रता, दृढ़ संकल्प—
 गुरु कृपा भी, हे अमृत सुत !
 (७६)

पवित्र आचरण, विचार पवित्र,
 हो सच्चरित्र, हो योग मित्र ।
 वास्तव में योग करो जब,
 हो चित्त शांत तब, हे अमृत सुत !
 (७७)

जब हो जाता है चित्त शांत,
 दुःखमय जीवन का हो सुखांत ।
 प्रभु कृपा की अविरल वर्षा—
 कृपा विशेष ये, हे अमृत सुत !
 (७८)

पीकर कृपा सुधा आसव,
 सत्योगी बन जाता मानव ।
 मधुर प्रेममय तेरा जीवन—
 शांत समर्पित, हे अमृत सुत !
 (७९)

Grace Divine then favours you,—
 Shining Lord doth come in view !
 Happy you, how happy you !
Bhakti grows, O Nectar's Son !

80

Bhakti's stream then keeps a-flowing—
 Life-refreshing, soothing, nobling,
 Sweetly cooling, clearest drinking;
 Drink it deep, O Nectar's Son !

81

Bhakti sweet, devotion pure
 Gives you *virâg* strong and sure—
 Calm and fearless, *samsâr*-cure,
 Calm entirely, Nectar's Son !

82

When is ripe the *virâg* fine,
 Then doth charming flash and shine
 Light eternal, Bliss Divine,
 All- pervading, Nectar's Son !

83

Knowledge this of Blissful Light,
Vijnân called by sages right,
 Grows and grows by *yoga's* might;—
 More and more Light, Nectar's Son !

84

दैवी कृपा से कृपा वृष्टि,
 प्रभु दीखें ये कृपा दृष्टि ।
 प्रसन्न चित्त कितना हो जाता—
 भक्ति जगे तब, हे अमृत सुत !
 (८०)

गोमुख पर गंगा जल निर्मल,
 जीवन दायी उतना भक्ति जल ।
 शीतल शांति, मिटे सब क्लान्ति—
 डटकर पी ले, हे अमृत सुत !
 (८१)

श्रद्धा, भक्ति और अनुराग,
 भर देते मन में विराग ।
 पीड़ा हरते, निर्भय करते—
 संपूर्ण शांति, हे अमृत सुत !
 (८२)

परिपक्व विराग की आग चढ़े,
 अन्तरमन दिव्य आनंद बढ़े ।
 नित्य प्रकाश, अद्भुत विश्वास—
 सर्वव्यापी भी, हे अमृत सुत !
 (८३)

चिदानंद प्रकाश का ज्ञान,
 सत संत कहें ये ही विज्ञान ।
 योग शक्ति से बढ़े-बढ़े ये,
 प्रकाश प्रखर तर, हे अमृत सुत !
 (८४)

Chit-ful Light doth all outshine,
 Making all things live and shine,
 Self-effulgent, causeless, fine,
 Blissful *Chit*, O Nectar's Son !

85

Shows thee then this knowledge sound
Pati, *Pâsh*, and *Pashu* bound;
 Thou art then with laurel crowned,—
 Mind unminded, Nectar's Son !

86

Perfect *vijnân*'s lustrous glow,
 Sweetest *bhakti*'s mighty flow,
 Ripest *virâg*'s strongest blow
 Drive illusion, Nectar's Son !

87

Mind unminded, error gone,
 Oneness doth upon you dawn;
 Brighter hue then you put on !—
 Ceaseless practise, Nectar's Son !

88

Oneness feel, the elseless One,
 One in all, and all in One,
 All are One, the spotless One,
 Partless One, O Nectar's Son !

89

चिन्मय प्रकाश सबसे ऊपर,
जीवंत करे, देदीप्ति से भर ।
स्वप्रकाशित कारण रहित—
आनंदमय चित, हे अमृत सुत !
(८५)

तब गहरे ज्ञान का हो दर्शन,
पति, पाश और पशुबंधन ।
कल्प वृक्ष की छाया मिलती—
होता मन अमन, हे अमृत सुत !
(८६)

संपूर्ण ज्ञान की उज्ज्वल राह,
मधुर भक्ति का अथाह प्रवाह ।
परिपक्व विराग, पाकर तीनों—
भ्रांति मिटाओ, हे अमृत सुत !
(८७)

मन निश्चल-निर्मल हो जाता,
द्वैत हटे, केवल हो जाता ।
कृपा ओढ़नी ओढ़, योग कर—
अभ्यास निरंतर, हे अमृत सुत !
(८८)

सब एकमय, सब में एक,
अनेक एक और एक अनेक ।
निष्कलंक एक वह अखंड नेक—
एकाकार हो, हे अमृत सुत !
(८९)

Oneness feel thou everywhere,
 In and out, both far and near,
 Everywhen doth One appear,
 One Eternal, Nectar's Son !
 90

Oneness shines ; —no time, no space,
 Neither body nor life-race,
 Mind and thought beyond all trace.—
 Thou that One, O Nectar's Son!
 91

Thou that One dost ever shine,
 Absolute, beyond all sign,
Brahman, endless Bliss Divine,
 Pure and perfect, Nectar's Son !
 92

Perfect thus, oh, then thou be,
Yog perform, and make thee free;
Yog begin with zeal and glee
 Now and here, O Nectar's Son !
 93

Yog is sameness of thy self
 With Supremest, boundless Self
 Well known by *samâdhi*'s help.
 Yog is sameness, Nectar's Son !
 94

चहृदिक देखो, 'एकाकार'—
 कितना छोटा है संसार ।
 हर समय एक, हर कहीं एक—
 शाश्वत एकमय, हे अमृत सुत !
 (९०)

स्थान-काल से परे एकमय,
 शरीर-प्राण से परे एकमय ।
 मन विचार से ऊपर उठकर—
 तुम्हीं एक हो, हे अमृत सुत !
 (९१)

यात्री, नाविक, तुम्हीं नाव,
 परम एक और परम भाव ।
 ब्रह्म अनंत, दिव्य आनंद—
 पावन पूर्ण, हे अमृत सुत !
 (९२)

पूर्ण बनो होकर संयुक्त,
 योग करो और हो जाओ मुक्त ।
 योगारंभ उत्साह के साथ—
 अभी यहीं पर, हे अमृत सुत !
 (९३)

योग दे प्रभु से समानता,
 असीम परमतम महानता ।
 बिन व्याधि के योग समाधि में—
 योग समभाव, हे अमृत सुत !
 (९४)

Yog is recognizing, knowing
 That it has been e'er One Being,
Chit-ful, Blissful, boundless Being,
 E'er the One Self, Nectar's Son !

95

Yog is sameness, oneness true,
 Yog is also ways thereto;
 Ways are many, one for you;
 Many are ways, Nectar's Son !

96

Ways of *Prânâyâm* and *dhyân*,
 Ways of *karma*, *bhakti*, *jnân*,
 Other ways too ; all do run
 To the same Goal, Nectar's Son !

97

By thy *yog* thou *doshas* shun;
Yog controls thy mind and *prân*;
 Goal by help of *yog* is won;
Yog gives power, Nectar's Son !

98

Lord by help of *yog* is seen;
 Knowledge *yog* doth help thee win;
Yog makes many-ness unseen;
Yog drives *Mâyâ*, Nectar's Son !

99

योग-ज्ञान और पहचान,
हैं सदा एक जाता-संतान ।
आनंदमय, असीम, पूर्ण चित—
हो आत्म एक, हे अमृत सुत !
(९५)

समभाव योग करता है एक,
ज्ञान, भक्ति, कर्म हैं पथ अनेक ।
बस चुने एक पथ, हर साधक—
अपने योग्य जो, हे अमृत सुत !
(९६)

प्राणायाम और ध्यान के पथ,
कर्म-भक्ति और ज्ञान के पथ ।
और दूसरे पथ भी जाते—
सभी लक्ष्य तक, हे अमृत सुत !
(९७)

योग करे मन-प्राण नियंत्रण,
मिल जाते हैं कर्ता-कारण ।
दोष मुक्ति और लक्ष्य प्राप्ति—
देता ऊर्जा, हे अमृत सुत !
(९८)

योग दिलाता प्रभु के दर्शन,
योग से होता ज्ञान का अर्जन ।
बहुरूप मिटे, फिर माया भागे—
सत समभाव, हे अमृत सुत !
(९९)

Prem by help of *yog* obtain;
 Peace and Bliss unending gain;
Moksha by thy *yog* attain;
Yog gives all, O Nectars' Son !
 100

Though each *yog* doth give these all,
 Every path is not for all;
 At the feet of teacher fall,
 Know thy *yog*, O Nectar's Son !
 101

Learn thy *yog* from teacher kind;
 World-affairs all leave behind;
Yog begin with body, mind,
 Now and here, O Nectar's Son !
 102

Now and here begin thou must;
 What now favours may not last,
 Strength and vigour will be past,
 Death will come, O Nectar's Son !
 103

Death may come at every time;
 How then put off *yog* sublime ?
 Try soon height of *yog* to climb;
 Don't you tarry, Nectar's Son !
 104

योग से पा प्रेम अनुराग,
 शांति, आनंद लोकहित त्याग ।
 योग, मोक्ष का दाता भी है—
 सब कुछ पा ले, हे अमृत सुत !
 (१००)

लक्ष्य की ओर जाते सारे मग,
 पर सबके पथ हैं अलग अलग ।
 गुरु चरणों में शीश नवाकर—
 राह जान ले, हे अमृत सुत !
 (१०१)

दुनियादारी पीछे छोड़,
 मन को गुरु चरणों से जोड़ ।
 तन-मन देकर योग शुरु कर—
 यहीं अभी तू, हे अमृत सुत !
 (१०२)

सामर्थ्य, शक्ति नश्वर ना भूल,
 अनुकूल बने कब प्रतिकूल ।
 अभी यहीं पर योग शुरु कर—
 काल सामने, हे अमृत सुत !
 (१०३)

जाने कब आ जाए काल,
 परम योग को कभी न टाल ।
 योग शिखर पर चढ़ जा तू—
 देर ना कर अब, हे अमृत सुत !
 (१०४)

Don't you tarry ; mind it you,
 Yog is nobler, better true
 Than the other works you do.
 World enjoy not, Nectar's Son !
 105

World-enjoyments bondage sad,
 Gave you all the births you had;
 Yog gives freedom, makes you glad,
 Endless glad, O Nectar's Son !
 106

Yog will give thee Endless Bliss;
 Why for pleasures small thou miss
 Chances now for doing this ?
 Do this first, O Nectar's Son !
 107

Boundless Self from *yog* thou get;
 Why then don't thou shun direct
 Temp'ral, transient happy-state ?
 So-called happy, Nectar's Son !
 108

E'en an atom if thee chain
 Thou can never Goal obtain;
 So then, must thou Goal attain
 Leaving all else, Nectar's Son !
 109

देर ना कर, अब चिंतन कर,
 योग है उत्तम, सत्य व सुंदर ।
 बाकी तो बस पशु सा जीवन—
 ना पशु बनना, हे अमृत सुत !
 (१०५)

बस बंधन है संसार भोग,
 दे जन्म मरण से मुक्ति योग ।
 योग जोड़ता है लक्ष्य से—
 हर्ष अनंत दे, हे अमृत सुत !
 (१०६)

अनंत आनंद का दाता योग,
 लक्ष्य तुम्हारा लाता योग ।
 माया के झूठे चक्कर में—
 छूटे मौका, हे अमृत सुत !
 (१०७)

योग से पा लो असीम विराग,
 लौकिक क्षणिक आनंद को त्याग ।
 योग मिलन परमानंद से—
 योग सदानंद, हे अमृत सुत !
 (१०८)

गति वैसी, मति जैसी जाकी,
 कण से भी गर बंधन बाकी ।
 नहीं सफलता हासिल होगी—
 छोड़ और सब, हे अमृत सुत !
 (१०९)

For created earthen ball
 How reject thou Lord of all,
 Who creates the ball and all ?
 Fie to thee, O Nectar's Son !
 110

Gracious Giver of all good—
 Blissful Lord thou don't exclude
 For some atoms ; but thou should
 Try to get Him, Nectar's Son !
 111

Lord of all does all for thee;
 Why then do thou doer be ?
 I-ness bondage—know this ye.
 Only see Him, Nectar's Son !
 112

Gard'ner of the world still is,
 Cares for all these bodies His;—
 Think not body ; but, in peace,
 Him remember, Nectar's Son !
 113

He alone thy friend for ever,
 Friend and guide and prop for ever;
 By thy *yog* do seek His favour;
 Yog perform, O Nectar's Son !
 114

प्रभु जनित हर जीव बुलबुला,
जीव के कारण प्रभु को भूला ।
रचा जीव भी, रचा सबको—
शर्म करो तुम, हे अमृत सुत !
(११०)

कृपालु, दयालु सब कुछ का दाता,
प्रभु से ही क्यों टूटे नाता ।
कण-दो कण, पल-दो पल भूठे,
मिलन योग से, हे अमृत सुत !
(१११)

ईश्वर ही जब तेरा भर्ता,
क्यों बनता तू तेरा कर्ता ।
'मैं' और 'मेरा' केवल बंधन—
ईश देख बस, हे अमृत सुत !
(११२)

जड़ चेतन का गजब बगीचा,
माली एक, उसी ने सींचा ।
मन को भूठी चिंता देह की—
सच्चा माली, हे अमृत सुत !
(११३)

मात, पिता और तात वही है,
गुरु-ज्ञान और ज्ञात वही है ।
पा लो योग से कृपा-दया,
योग करो तुम, हे अमृत सुत !
(११४)

Yog alone can drive out fear;
Yog alone removes thy tear;
Yog begin then now and here,—
 Peaceful thus be, Nectar's Son !
 115

Does it suit thee beast-life leading,
 Carnal pleasures so much seeking ?
 Self remember, world forgetting;
Yogin be thou, Nectar's Son !
 116

Why not thou, like *yogins* old,
 Give up world with heart so bold,
 And get Peace and Bliss untold
Yog performing, Nectar's Son ?
 117

Manful be, become true man,
 Use the now as best thou can,
 Heed not any thing or man,
Yog begin, O Nectar's Son !
 118

Special right of MAN it is—
Moksha gain, get endless peace.
 MAN thou art now,—lose not this
 Rarest chance, O Nectar's Son !
 119

योग अकेला भय का नाशक,
दुःख मिटाता हृदय विदारक ।
आनंद, शांति का दाता है—
ना देर करो तुम, हे अमृत सुत !
(११५)

पशु जीवन भी क्या जीवन है ?
दैहिक विषय भोग बंधन है ।
जग भूल, स्वयं को याद करो—
योगी बन जा, हे अमृत सुत !
(११६)

सिद्ध योगियों से ना तुम क्यों ?
दुनियादारी में ही गुम क्यों ?
पा अनसुनी शांति और आनंद—
योग के द्वारा, हे अमृत सुत !
(११७)

बन तू मनुष्य, पौरुष से भरकर,
ना जी वस्तु-जीव से डरकर ।
अधिकतम उपयोग समय का—
कर योगारंभ, हे अमृत सुत !
(११८)

मानव का विशेष अधिकार,
पाना मोक्ष आनंद अपार ।
बिरला मानव जन्म व्यर्थ क्यों ?
करो सार्थक, हे अमृत सुत !
(११९)

If by losing pice or two
Lord forgot by restless you,
How regard thou Goal the true ?
Think of this, O Nectar's Son !
120

When a street-boy does thee blame,
When thou join or lose a game,
When thou hanker after fame,
Lose thou Lord then, Nectar's Son !
121

Sad thy plight ! Oh, fie to thee !
Thus regardest Mercy's Sea !
How would cross the *samsâr* ye ?
Think of this, O Nectar's Son !
122

So-called friends bewitching you
For whose sake all things you do
Are but fetters,—know this true;
Mire not thee, O Nectar's Son !
123

Those for whom thou roll in mire
For whom thou be sinner, liar
Help thee not in suff'rings dire
For thy sins, O Nectar's Son !
124

केवल कण या दो कण खोकर,
 लक्ष्य भुलाया विचलित होकर ।
 कैसी निष्ठा, निश्चय कैसा ?
 सोच जरा तू, हे अमृत सुत !
 (१२०)

यश-अपयश से सुख-दुःख जागे—
 जीत-हार की चिंता लागे ।
 विचलित चित्त विचलित करता है—
 दूर लक्ष्य से, हे अमृत सुत !
 (१२१)

दयनीय दशा, तुमको धिक्कार,
 कैसे होगा संसार पार ?
 नाविक, नौका, ये ही मौका—
 जरा विचारो, हे अमृत सुत !
 (१२२)

इष्ट-मित्र का लंबा घेरा—
 उनमें लगा समय सब तेरा ।
 पर ये तो दलदल औ बंधन—
 फँसना ना तुम, हे अमृत सुत !
 (१२३)

अपना कहते, सहते आँच,
 करते पाप औ भूठ साँच ।
 ऐसे अपनों ने बाँटा कब—
 कर्मों का फल, हे अमृत सुत !
 (१२४)

Though thou suffer for their sake,
 They thy sufferings don't partake;
 Thy true progress they do check,
 Shun them all, O Nectar's Son !

125

Shun them all; and know it too—
 Lord thy only friend the true;
 Life is wasted when thou do
 Him forget, O Nectar's Son !

126

If thou die with *Brahman's* thought,
Samsâr thou to enter not;
 Mind prepare now, as thou ought,
 For last moment, Nectar's Son !

127

Mind unruly, hard to break,
 Its control much time may take;
 Least delay then do not make,
 Yog begin now, Nectar's Son !

128

If while thinking worldly thought
 Luckless thou by death be caught,
 Wretched sure thy future lot !
 Busy with Lord, Nectar's Son !

129

तेरे दुःख में उनका हाथ—
 पर ना देते वे दुःख में साथ ।
 तेरा विकास रुका उनसे—
 उन्हें छोड़ दे, हे अमृत सुत !
 (१२५)

उन्हें छोड़ दे, ये जान तू—
 तात एक ही, यही मान तू ।
 जीवन मिथ्या हो जाता है—
 उसे भूलकर, हे अमृत सुत !
 (१२६)

अंतकाल हो ब्रह्म विचार—
 मोक्ष मिले, छूटे संसार ।
 कर लो तन-मन को तैयार—
 अंत हेतु तुम, हे अमृत सुत !
 (१२७)

उदंड मन का नियंत्रण कठिन,
 है अंत पास, क्या गिनता दिन ।
 न एक पल भी देर करो अब—
 योग शुरु कर, हे अमृत सुत !
 (१२८)

हो चल रहा संसार नाटक,
 गर काल आ जाए अचानक ।
 हत भाग्य तेरा, बस अंधेरा—
 प्रभु में रम जा, हे अमृत सुत !
 (१२९)

Busy with Lord be for ever;
 Waste thy time thou never, never;
 For thy *yog* thou spare no labour,
 Spare no pain, O Nectar's Son !
 130

For thy *yog* thou spare no pain;
 Pain for *yog* is surely gain.
 Small pain kills thy endless pain;
 Fear not pain, O Nectar's Son !
 131

Fear not pain thou, care not pain;
 Count not transient loss or gain;
 Pilgrim thou to Nectar's Main,—
 Heed not prickles, Nectar's Son !
 132

Feeling thirst thou running fast
 To the Spring of Nectar just,—
 How can heed the little dust
 Touching thy feet, Nectar's Son ?
 133

If for fear of pain do ye
 Give up *yog* and worldling be,
 Can thou ever make thee free
 From the pains, O Nectar's Son ?
 134

समय अमूल्य निधि, ना नष्ट कर,
 योग हेतु प्रयास, हर कष्ट कर ।
 मिलन हेतु बस योग राह है—
 राही बन जा, हे अमृत सुत !
 (१३०)

योग के लिए सहना सब कष्ट,
 योग सत राह, तू तो पथभ्रष्ट ।
 अनंत कष्ट का अंत योग से—
 ना डर कष्ट से, हे अमृत सुत !
 (१३१)

ना डर पीड़ा से, ना दे ध्यान,
 लाभ हानि सब क्षणिक ही जान ।
 परमामृत का यात्री तू है—
 बाधा-ना डर, हे अमृत सुत !
 (१३२)

प्यास मिटानी कर सुधापान,
 गर्मी-धूल से क्यों परेशान ?
 छोटे मोटे कष्ट देख ना—
 लक्ष्य बड़ा है, हे अमृत सुत !
 (१३३)

मन में पीड़ा का भय भारी,
 योग छोड़ बन गए संसारी ।
 कब और कैसे मुक्ति मिलेगी—
 इस पीड़ा से, हे अमृत सुत !
 (१३४)

Think of Jesus' sufferings ye,
Haridâs how suffered see.
Do compare their sufferings ye
 With thine own, O Nectar's Son !
135

Past pain and guess'd future pain
Linking both to present pain
Thou art thinking that thy pain
 Can't be borne, O Nectar's Son !
136

Sad delusion is this sure;
Pain the present can't be more
Than what thou can now endure;
 Wise and kind Lord, Nectar's Son !
137

Ever art thou bearing pain;
Never dost thou die of pain;
What right hast thou to complain
 Of pain too much, Nectar's Son ?
138

Don't increase thy pain by jumble,
Don't thou growl and don't thou grumble,
Don't thou scold and don't thou rumble;
 Be thou patient, Nectar's Son !
139

सीता, ध्रुव और प्रह्लाद,
 जीसस, मीरा या हरिदास ।
 इनकी पीड़ा से बढ़कर क्या—
 तेरी पीड़ा-हे अमृत सुत !
 (१३५)

भूत और भविष्य की पीड़ा,
 इस क्षण की अवश्य की पीड़ा ।
 तीनों को जोड़ देखो जब—
 सहना मुश्किल, हे अमृत सुत !
 (१३६)

पीड़ा सहन शक्ति से ज्यादा,
 सहन शक्ति से ज्यादा लादा ।
 ये मिथ्या भ्रम, नहीं प्राकृतिक—
 सर्वज्ञ-नेक प्रभु, हे अमृत सुत !
 (१३७)

पीड़ा-पीड़ा बस करता तू,
 है पीड़ा से कब मरता तू ।
 फिर क्यों ये दुःखड़ा रोता है ?
 अति पीड़ा का, हे अमृत सुत !
 (१३८)

मन ! पीड़ा-पीड़ा जपने से,
 मन ! पीड़ा बढ़ती अपने से ।
 ना बड़-बड़ कर, ना गड़बड़ कर—
 धैर्य धरो तुम, हे अमृत सुत !
 (१३९)

How much pain can whole world bring ?—
 Nothing 'tis, if longing cling
 To thy Goal that thee would bring
 Endless Bliss, O Nectar's Son !

140

When thou think that all the pain
 Does but come from Mercy's Main,
 How complain of seeming pain
 Come from Dearest, Nectar's Son ?

141

If thou ever Oneness see,
 Pain does pain-ness lose for thee;
 If resign to Deity ye,
 No complaint then, Nectar's Son !

142

Thou who bodies dost defy,
 Thou who dost the world deny,
 How can pain thee terrify ?
 Think of this, O Nectar's Son !

143

Thou *asangam* *Âtman* free,
 Changeless, absolutest ye;—
 How can ever pain touch thee ?
 Thou beyond pain, Nectar's Son !

144

इस पीड़ा का कारण मोह,
 अभाव नाम या नाम विछोह ।
 तू लक्ष्य उन्मुख होकर पा ले—
 आनंद अनंत, हे अमृत सुत !
 (१४०)

बच्चों से कष्ट, कब माँ कहती,
 अपनों की पीड़ा, हँस के सहती ।
 गर प्रभु ने दी पीड़ा हमको—
 प्रभु तो अपने, हे अमृत सुत !
 (१४१)

एक चित्त हो, देख एकमय,
 हो जाए प्रभु में पीर विलय ।
 अपने प्रभु में पूर्ण समर्पण—
 कष्ट न बाकी, हे अमृत सुत !
 (१४२)

देह करो तुम अस्वीकार,
 मिथ्या मानों जब संसार ।
 पीड़ा कैसे पीड़ा देगी—
 सोच जरा ये, हे अमृत सुत !
 (१४३)

निर्विकार और परम धीर,
 कैसे छू सकती है पीर ?
 तुम असंगम मुक्त आत्मा—
 पीर परे हो, हे अमृत सुत !
 (१४४)

Fear not pain, thou heed not pain;
 Rather should thou welcome pain.
 Pain doth bring for thee much gain;
 Pain is gain, O Nectar's Son !

145

Pain doth check thy cravings bad,
 Pain corrects mistakes all sad,
 Makes thee pure and peaceful, glad,
 Guards thee ever, Nectar's Son !

146

Thou remember Lord in pain,
 Powers hid unfold by pain,
 Pain doth make thee prudence gain,
 Pain thy friend, O Nectar's Son !

147

Pain thy friend, do welcome pain;
 From pain dost thou *virâg* gain;
 Pain doth make thee Goal attain,
 Pain kills pain, O Nectar's Son !

148

Fear not pain, but welcome pain;
 March thou on and break the chain;
 Yog begin with might and main,
 Now and here, O Nectar's Son !

149

मन ! पीड़ा से कैसा डरना ?
 मन ! पीड़ा का स्वागत करना ।
 पीड़ा लाभ का सौदा है—
 पीर प्राप्ति है, हे अमृत सुत !
 (१४५)

ये भूलों का करती सुधार,
 देती शांति का है उपहार ।
 ललक, लालसा रोके पीड़ा—
 पीड़ा पहरा, हे अमृत सुत !
 (१४६)

पीड़ा में करते हम स्मरण,
 आत्म शक्ति का होता स्फुरण ।
 ज्ञान-भक्ति का होता जागरण—
 पीड़ा साथी, हे अमृत सुत !
 (१४७)

कर स्वागत, पीड़ा है मीत,
 विराग जगाते इसके गीत ।
 लक्ष्य प्राप्ति सहज पीड़ा में—
 दर्द मारता दर्द, अमृत सुत !
 (१४८)

पीड़ा से ना हो भयभीत,
 सुख, दुःख दोनों जाएं बीत ।
 जन्म-मरण का बंधन काटो—
 योग अभी कर, हे अमृत सुत !
 (१४९)

For thy *yog* a site thou find
Good for body, good for mind,
Holy, lonely where combined;
Loneness needed, Nectar's Son !
150

On that site, where loneness reign,
Temple, cave or hut obtain,
Good for sun and wind and rain,
Safe and harmless, Nectar's Son !
151

In that dwelling make a seat,
Long and broad as does befit
Posture wherein thou wilt sit
Facing north, O Nectar's Son !
152

Strong, unshaking seat, thou see,
Half as high as broad should be,
On that seat then do spread ye
Āsan proper, Nectar's Son !
153

Hermitage keep very clean;
Let no thought there base and mean;
Let not take place vice and sin;
Keep it holy, Nectar's Son !
154

शुचिता, एकांत दोनों से युक्त,
 तन-मन दोनों को उपयुक्त ।
 हो स्थल उचित योग का ऐसा,
 एकांत जरूरी, हे अमृत सुत !
 (१५०)

योग के लिए एकांत कमरा,
 मंदिर, कूटिया या शांत कंदरा ।
 धूप, हवा, वर्षा में ठीक—
 स्थल सुरक्षित, हे अमृत सुत !
 (१५१)

तैयार करो वास में आसन,
 आसन साधना का साधन ।
 जितना चौड़ा, आधा ऊँचा—
 उत्तर मुख कर, हे अमृत सुत !
 (१५२)

मजबूत सशक्त भी हो आसन,
 पावन आसन, तो मन पावन ।
 कुश-मृगचर्म या कंबल की—
 कर विछात, हे अमृत सुत !
 (१५३)

वास में पाप न पापाचरण,
 रख नीच विचारों पर नियंत्रण ।
 साफ-स्वच्छ, वास को रखना—
 रखना पावन, हे अमृत सुत !
 (१५४)

Sit on *âsan* just as told;
 Reverently hands thou fold,
 Bow to God and guides of old,
 Thine own guide too, Nectar's Son !
 155

Let then be thy *yog* begun;
 Needless movements must thou shun
 Of thy body, mind and *prân*;
 Work as taught, O Nectar's Son !
 156

Yog then does tend to secure
 Total mental calmness pure;
 This requires thee sever sure
 World-connections, Nectar's Son !
 157

World-affairs all must shun thou,
 Company all do shun now,
 All possessions disallow;—
 Bring unrest they, Nectar's Son !
 158

Ownership of every kind
 Brings unrest to body, mind,
 Down to world does tightly bind;
 Shun them all, O Nectar's Son !
 159

सब गुरुजनों को कर प्रणाम,
हाथ जोड़कर हो निष्काम ।
मुद्रा गुरु निर्देशन जैसी—
आसन ग्रहण, हे अमृत सुत !
(१५५)

कर योगारंभ अब हे साधक !
ना करना हिलडुल तुम नाहक ।
गुरु आज्ञानुसार हो स्थिर—
तन, मन, प्राण, हे अमृत सुत !
(१५६)

करता मन को पूर्ण निश्चल,
हृदय निष्काम, बुद्धि को निर्मल ।
नीरव मानस, योगी तापस—
जग से दूर, हे अमृत सुत !
(१५७)

सांसारिक मामले छोड़कर,
रिश्ते-नाते सब तोड़कर ।
संपत्ति त्याग, अपना अपरिग्रह—
ये लाते दुःख, हे अमृत सुत !
(१५८)

अपनत्व और स्वामित्व भाव,
अशांति लाना इनका स्वभाव ।
माया बेड़ियों में जकड़े—
इनसे बचना, हे अमृत सुत !
(१५९)

All possessions do reject;
 More than needful don't accept;
 Simplest life for thee select
 Pure, content, O Nectar's Son !
 160

Live content and pure life thou;
 Thoughts, desires disallow;
 Useless talks all stop thou now;
 Past forget, O Nectar's Son !
 161

All the past forget thou must;
 Thinking future should not last;
 Present use as needed just;—
 Use no more, O Nectar's Son !
 162

Use no more than needs require
Indriyas; they busy fare !
 Ruleless them thou guard with care;
 Out keep world, O Nectar's Son !
 163

Objects out thou take not in;
 In already sweep thou clean;
 Thoughts intruding stab within;
 Calm thy mind, O Nectar's Son !
 164

ना पास कोई भी थैली हो,
सरलतम जीवन शैली हो ।
अनावश्यक कुछ भी ना छूना—
तोष बढ़ा धन, हे अमृत सुत !
(१६०)

तुष्ट-सात्विक, जियो जागकर,
विचार, इच्छाएं सब त्याग कर ।
बंद करो नाहक की बातें—
विगत भूलकर, हे अमृत सुत !
(१६१)

भूल संपूर्ण व्यतीत भूत,
भविष्य क्षणिक ना हो अभिभूत ।
वर्तमान से भी लेना बस—
जितना चाहिए, हे अमृत सुत !
(१६२)

जरुरत से अधिक ना कर संग्रह,
सावधानी से कर इंद्रिय निग्रह ।
मन निश्चल, योगी का संबल,
दुनिया से दूर, हे अमृत सुत ।
(१६३)

अंतर में जगते जो विचार,
बाहर से आते उन्हें मार ।
भीतर-बाहर खाली कर लो—
हो निर्विचार, हे अमृत सुत !
(१६४)

Calm thy mind by *yogik* work;
 Evil in all objects mark;
Vichâr must thou never shirk
 And *titikshâ*, Nectar's Son !
 165

Evil in all good and bad,
 Birth and death and lives thou had
 See, and feel distress so sad;
 Seek thou freedom, Nectar's Son !
 166

Free thou thee from pains the three,
 Make thyself from *Mâyâ* free,
Brahm eternal, elseless be;
 Seek thou *Moksha*, Nectar's Son !
 167

Seeking *moksha* would require
 Killing *rajas*, *tamas* dire,
 Leading *sâttwik* life entire;
Sâttwik be thou, Nectar's Son !
 168

In thy fooding, clothing all,
 In thy seeing, hearing all,
 In thy doings, thinkings all
 Be thou *sâttwik*, Nectar's Son !
 169

दुर्गति होती सकाम स्वार्थ की,
 देख ! बुराई हर पदार्थ की ।
 कभी न छोड़ो विवेक-विचार,
 और तितिक्षा, हे अमृत सुत !
 (१६५)

मन ! सब कुछ जग में नश्वर देख,
 मन ! जन्म-मृत्यु का चक्कर देख ।
 मोद-क्रीड़ा है बस पीड़ा—
 मुक्ति खोज तू, हे अमृत सुत !
 (१६६)

दैहिक, भौतिक, दैविक तीन,
 सब भोगें, समृद्ध और दीन ।
 कर्मों का फल हरते ताप—
 मोक्ष खोज अब, हे अमृत सुत !
 (१६७)

रजस-तमस ना अच्छे विचार,
 रजस-तमस ना अच्छा आहार ।
 मोक्ष हेतु दोनों को त्याग—
 हो जा सात्विक, हे अमृत सुत !
 (१६८)

भोजन-वसन में नहीं प्रदर्शन,
 सात्विक विचार, सात्विक साधन ।
 तीनों बंदर बन गांधी के—
 सत्त्व तत्त्व अपना, हे अमृत सुत !
 (१६९)

In all let thy *sattwa* grow,
 Let the other two off go.
 Then thou be as pure as snow,—
 Purely *sâttwik*, Nectar's Son !

170

When the *sattwa* purest be,
 This will very soon leave thee;
 Thus becomest lucky ye
 Gunâtita, Nectar's Son !

171

So, by all means, *sâttwik* be;
 Let not Tempter conquer thee.
 He doth come, remember ye,
 To the *yogins*, Nectar's Son !

172

In the guise of *siddhis* all,
 Comforts, name and fame and all,
 In the guise of kindness all
 Tempts he *yogins*, Nectar's Son !

173

Some accept him and do fall,
 Like the Satan fall and fall;
 Others turn to Tempter's call
 Deafest ear, O Nectar's Son !

174

कर दृढ़ता से सत्त्व का संग्रह,
 रजस-तमस दोनों से विग्रह ।
 तब हो जा तू हिम सा पावन—
 शुद्ध-सात्विक, हे अमृत सुत !
 (१७०)

तम मिटता जब तम मिटता,
 प्रभु की रज से रज मिटता ।
 शुद्ध सत्त्व भी खो जाता—
 हो गुणातीत, हे अमृत सुत !
 (१७१)

हाँ ! नहीं प्रलोभन में पड़ना,
 ना माया बंधन में पड़ना ।
 तप भंग को माया आती—
 याद रहे यह, हे अमृत सुत !
 (१७२)

सिद्धियों के छद्म वेष में,
 यश-पद-धन-शक्ति के भेष में ।
 ललचाती योगी को आकर—
 तप भ्रष्ट न होना, हे अमृत सुत !
 (१७३)

जो भी फँसता है लालच में,
 बचता नहीं गिरता है सच में ।
 हो अधोगति बस पतन-पतन—
 कान बंद कर, हे अमृत सुत !
 (१७४)

Buddha kicked the tempting *Mâr*,
 Jesus kicked the Satan far;
 But when *yogins* weakish are
 Tempter binds them, Nectar's Son !

175

Easily doth Tempter find
 Finest weak-holes of the mind;
 Through them enter, tightly bind
 Down to hell, O Nectar's Son !

176

Save thee from temptations strong
 Doing right, avoiding wrong,
 Being moral all along
 And desireless, Nectar's Son !

177

Craving-seeds, unseen first though,
 Into big trees doubtless grow,
 Let some *yogins* fall so low,
 Though advanced, O Nectar's Son !

178

One desire doth thousand grow;
 Small desire for atom, lo,
 Throws down *yogin*, risen though.
 Get thou *virâg*, Nectar's Son !

179

लालच ने जब-जब ललचाया,
 बुद्ध-जीसस ने ठुकराया ।
 पर योगी अधकचरे फँसते—
 फिर से बंधते, हे अमृत सुत !
 (१७५)

खोज मानस के छिद्र कमजोर,
 घुसता घर में जैसे चोर ।
 बाँध पाश में ले जाता है—
 घोर नरक में, हे अमृत सुत !
 (१७६)

बचना तुम हर प्रलोभन से,
 अच्छे-बुरे आकर्षण से ।
 हो इच्छाहीन, तम-रज विहीन—
 नैतिक जीवन, हे अमृत सुत !
 (१७७)

छोटा दीखे, ये विष व्याल,
 अंकुर छोटा, होता विशाल ।
 इच्छा एक बनती हजार—
 बस बंटाधार, हे अमृत सुत !
 (१७८)

वृक्ष बड़ा गिराता इक भोंका,
 साधना नष्ट करे इक धोखा ।
 फिसला पांव अगर योगी का—
 गिरे गर्त में, हे अमृत सुत !
 (१७९)

Being ever *virâg*-ful
Cross with ease the tempting pool;
Can't go out of *Mâyâ*'s rule
 With desires, Nectar's Son !
 180

Virâg strong and *bhâkti*'s flow
Give temptations sure death-blow,
Make thy doubt and fear off go.
 This remember, Nectar's Son !
 181

Doubts and fears both great and small
To the faithless come they all;
Faithless, loveless bound to fall;
 Proud and vain too, Nectar's Son !
 182

Many men are proud and vain,
Practise *yog*, but all in vain !
I-ness, *abhimân* till reign
 No hope, no hope, Nectar's Son !
 183

“Know I way, I have my way;
Needn't obey what others say;
Care not I the asses' bray.”—
 Abhimân this, Nectar's Son !
 184

हाथ में ले विराग का दिया,
 कर लो पार लोभ की नदिया ।
 इच्छ्राएं जब तक रहती हैं—
 माया रहती, हे अमृत सुत !
 (१८०)

दृढ़ विराग और भक्तिभाव,
 प्रलोभन पर नाशक प्रभाव ।
 भय-संदेह-संशय मिट जाते—
 स्थिर प्रज्ञ हो, हे अमृत सुत !
 (१८१)

श्रद्धाहीन नारी और नर,
 वे शंका-संशय-भय के घर ।
 प्रेम-धर्म बिन, दंभी-क्रोधी—
 गिरते ही हैं, हे अमृत सुत !
 (१८२)

दंभी-अभिमानी खोखले,
 योग हेतु बस योग पथ चले ।
 'मैं' 'मेरा' और अभिमान—
 असफल करे, हे अमृत सुत !
 (१८३)

“मेरा रास्ता मैं ही जानता,
 और कहे मैं नहीं मानता ।”
 अति उत्साह, नहीं परवाह—
 अभिमान यही, हे अमृत सुत !
 (१८४)

“*Karttâ, bhoktâ* sure am I;
That is mine, and this is I;
My position is so high!”—
I-ness this too, Nectar’s Son !
185

“Men called ‘wise’ by reas’nless all,—
Reason rarest, if at all, —
So-called wise they,—senseless all !”—
This too I-ness, Nectar’s Son !
186

“If would have been followed sure
My advice kind, I assure,
World could make much progress pure.”—
I-ness this too, Nectar’s Son !
187

“I did this so nice, so fine !”
“Such a bad work can’t be mine.”—
These and thousand ways doth shine
Abhimân, O Nectar’s Son !
188

“Much I know and all I know;
Highly pious am I oh !”—
I-ness this is greatest foe !
Be thou careful, Nectar’s Son !
189

“कर्ता-भोक्ता सब मैं ही हूँ,
वह भी मेरा, यह मैं ही हूँ।
मैं ही श्रेष्ठ, मैं ही महान”—
ये भी अहम है, हे अमृत सुत !
(१८५)

अविवेकी से चतुर कहावे,
बुद्धिमान का तमगा पावे।
औरों को मूर्ख मानते—
अभिमानी वे, हे अमृत सुत !
(१८६)

“दुनिया मेरी बात मानती,
लोहे की लकीर जानती।
दुनिया कितनी आगे होती”—
ये भी अहम, हे अमृत सुत !
(१८७)

“मैंने किया, कितना सही,
काम खराब, मेरा नहीं।
मैं ठीक सदा, सफल सदा।”
ये भी अहम, हे अमृत सुत !
(१८८)

“जानू बहुत, सब कुछ जानू,
औरों की क्यों फिर मैं मानू।
मैं ही पावन, मैं ही ज्ञानी”—
ये भी अहम, हे अमृत सुत !
(१८९)

I-ness, my-ness makes thee move
In the *moha*'s charming groove,
Makes thee ever restless move,
Restless, peaceless, Nectar's Son !
190

I-ness, my-ness makes thee still
Move in ever-turning wheel;
I-ness, my-ness must thou kill,
Kill at once, O Nectar's Son !
191

If thyself can't kill it sure
Pray to Lord with heart so pure;
Ever pray—"O Lord, do cure
This disease of helpless son !"
192

Thine own trumpet never blow;
Be not wiseling, pompous, lo !
Shun thou all things that may grow
Abhimân, O Nectar's Son !
193

Shun thou rich food and rich clothing,
Shun thou must high style of living,
Shun thou must all comfort-seeking;—
Grow they I-ness, Nectar's Son !
194

‘मैं’, ‘मेरा’ और अभिमान,
 मोह नगर में लाते तान ।
 करे अशांत, भ्रांत और क्लांत
 दे बेचैनी, हे अमृत सुत !
 (१९०)

‘मैं’, ‘मेरा’ सब कुछ ही नश्वर,
 जन्म-मृत्यु का चक्र निरंतर ।
 ‘मैं’ मारो, ‘मेरा’ मारो अब—
 चक्कर छूटे, हे अमृत सुत !
 (१९१)

खुद से मरे नहीं अभिमान,
 दीन बंधु का करना ध्यान ।
 ‘ये रोग मिटे’, कहना प्रभु से—
 आँखें भरकर, हे अमृत सुत !
 (१९२)

ज्ञानी-दंभी बनना मत,
 आत्म-प्रशंसा करना मत ।
 जो अभिमान को दे पोषण—
 उन्हें छोड़ दो, हे अमृत सुत !
 (१९३)

छोड़ो, महंगा भोजन-पोशाक,
 जीवन शैली महंगी नापाक ।
 आराम खोजना बंद करो अब—
 अहम बढ़ाए, हे अमृत सुत !
 (१९४)

Grow they I-ness, bad they are,
 Do increase desires far;
 Health of mind and body mar;
 Mar they *yog*, O Nectar's Son !
 195

Marring *yog* is name and fame;
 Seek not praise thou, hate not blame.
 Let what come, remain the same.
 Hide thy self, O Nectar's Son !
 196

Best art is to hide thy self;—
 Ever hid Supremest Self !
 Perfect be by hiding self.
 Beg not praises, Nectar's Son !
 197

E'en of poorest beggars ye
 Begging praises, fame for thee
 How, with what face puffed up be
 With the pride, O Nectar's Son ?
 198

Thou art begging praise of *Râm*,
 Begging smiling lips of *Syâm*,
 Begging treatment kind of some;—
 Begging of all, Nectar's Son !
 199

अहम बढ़ाये, काम जगाये,
तन-मानस में रोग बुलाये ।
इच्छा बढ़ती, सिर पर चढ़ती—
हो योग भ्रष्ट, हे अमृत सुत !

(१९५)

घृणा-बड़ाई, निंदा-प्रशंसा,
इनसे योगी की दुर्दशा ।
इनसे बचो, अपने में छुपो—
बस रहो सम, हे अमृत सुत !

(१९६)

सबसे अच्छा छुप कर रहना,
परमात्मा की भक्ति में बहना ।
नाम, प्रशंसा नहीं खोजना—
छुपकर जीना, हे अमृत सुत !

(१९७)

ना पद, ना नाम की भीख,
ना बन याचक, सच्ची सीख ।
याचक का सिर सदा झुका—
ऐसे ना झुक, हे अमृत सुत !

(१९८)

मांग गुणों का गान राम का,
मधुरम-मधुरम रूप श्याम का ।
विनय मांग और मांग दया—
जीवन सुधरे, हे अमृत सुत !

(१९९)

Ever beggest of all ye;—
 Where is then thy liberty ?
 Vainest is thy vanity !
 Shame to thee, O Nectar's Son !
 200

Shame to thee ! Oh, fie to thee !
 Be not beggar, proud not be.
 Ever with the Lord thou be.
 Ever be meek, Nectar's Son !
 201

When thou meek and humble be,
 Secret path will ope to thee,
 Glory of the Lord then see;
 Foes beware of, Nectar's Son !
 202

Kâm and *krodh* and breath and fear,
 Sleep—these foes in thee appear;
 Drive these *doshas*, drive with cheer;
 Spoil they *yog*, O Nectar's Son !
 203

Vivek, *virâg*, *dhyân* —these three,
Bhâkti fourth will make thee free
 From these *doshas* staining thee;—
 Some means more too, Nectar's Son !
 204

हर याचक हो जाता परतंत्र,
 ज्यों जंग लगा जीवन संयंत्र ।
 उत्साह हीन, कितना दीन—
 शर्म करो तुम, हे अमृत सुत !
 (२००)

शर्म तुम्हें, तुमको धिक्कार,
 ना बन याचक, ना अहंकार ।
 प्रभु चरणों में सदा सर्वदा—
 दीन भाव से, हे अमृत सुत !
 (२०१)

दीन-सहज और विनय भाव,
 रहस्य खुले सब मिटे दुराव,
 प्रभु की महिमा देख सको तुम—
 खबरदार दुश्मन, अमृत सुत !
 (२०२)

काम-क्रोध-श्वास और भय,
 मद, ईर्ष्या, आलस्य, संशय ।
 दोष अनेकों घेर घार कर—
 बुद्धि बिगाड़ें, हे अमृत सुत !
 (२०३)

विवेक, विराग, ध्यान और भक्ति,
 देते भव-चक्कर से मुक्ति ।
 षटरिपुओं को मार गिराते—
 रक्षा करते, हे अमृत सुत !
 (२०४)

Samkalp giv'n up, *kâm* doth go;
Kshamâ conquers *krodh* the foe;
Prânâyâm controls, thou know,
 Breath and sleep, O Nectar's Son !
 205

When thou Oneness ever see,
 Fear and *krodh* will both leave thee.
 Busy with Lord, careful ye
 Sleep o'ercome, O Nectar's Son !
 206

Heart when anxious—Lord not seen,
 Pain of *samsâr* felt too keen,
 Fire without and fire within,—
 Sleep would rare be, Nectar's Son !
 207

When in Sea of *Chit* merge ye,
 Darkest sleep can't come to thee;
 When in *dhyânam*, Lord thou see
 Sleep won't come, O Nectar's Son !
 208

Prânâyâm and prayer true,
 Will-force, *dhyânam*, *vichâr* too—
 All these doubtless will make you
 Free from *doshas*, Nectar's Son !
 209

संकल्प छोड़ दो, काम नियंत्रित,
श्वास, निद्रा प्राणायाम नियंत्रित ।
क्षमा होती है क्रोध जयी—

भय भी भागे, हे अमृत सुत !

(२०५)

तुम हो जाते जब एकाकार,
होता क्रोध भय का उपचार ।
सतर्क, मगन प्रभु में होकर—
निद्रा जयी हो, हे अमृत सुत !

(२०६)

जब हृदयाकुल, प्रभु ना दीखें,
हो पीड़ा अतुल, प्रभु ना दीखें ।
भीतर ताप, बाहर राप—
नींद न आए, हे अमृत सुत !

(२०७)

चित सागर में डूबो जब तुम,
ध्यान मगन प्रभु में हो तब तुम ।
आलस्य नींद छूते नहीं तब—
प्रभु दीखते, हे अमृत सुत !

(२०८)

जप-ध्यान और प्राणायाम,
विवेक, विचार, प्रभु को प्रणाम ।
ये सारे दोष मिटा देते—
दोष मिटा ले, हे अमृत सुत !

(२०९)

All these *doshas* will be stronger,
Mind impurer, health will suffer,
If thy food be bad, improper;
Take thou fit food, Nectar's Son !
210

Take thou only *sâttwik* food
For thy mind and body good,
Which is fresh or freshly cooked;
Take not rot food, Nectar's Son !
211

Take alone the purest food
Cooked and served by men so good;
Take the food in purest mood;
Think *prasâd*, O Nectar's Son !
212

Lord's *prasâd* take it to be,
Or in food the Lord thou see,
Or to Lord within, think ye,
Offering this, Nectar's Son !
213

Never should thou eat for taste;
Chew food well, eat not in haste;
Keeping silence would be best
During meals, O Nectar's Son !
214

अनुचित, गलत, गरिष्ठ आहार
जब लेते हम अनिष्ट आहार ।
स्वास्थ्य बिगड़ता तन का, मन का—
ले युक्ताहार, हे अमृत सुत !
(२१०)

पाना केवल सात्विक आहार,
ये ही तन-मन-जीवन आधार ।
ताजा-शुद्ध-निरोगी भोजन,
ना खा बासी, हे अमृत सुत !
(२११)

शुद्ध, पवित्र, सात्विक आहार,
सात्विक हाथों से तैयार ।
प्रसन्न चित्त हो भोजन पाना—
प्रसाद समझकर, हे अमृत सुत !
(२१२)

प्रभु प्रसाद समझकर पाना,
या फिर उसमें प्रभु को पाना,
या अंतर प्रभु को अर्पण हेतु—
भाव यही ले, हे अमृत सुत !
(२१३)

सुस्वादु और रसना-तुष्टि,
आवश्यकता ये नहीं संतुष्टि ।
धीरे-धीरे, चबा-चबा कर,
भोजन चुपचाप, हे अमृत सुत !
(२१४)

One meal day-time, one in night
Are for mind and body right.
But, for *yogin* day or night
One meal better, Nectar's Son !

215

Just before meal, body clean,
Put on clean dress, mind serene.
Till thou feel the hunger keen
Take not food, O Nectar's Son !

216

Mitâhâr is ever good ;
Stuff not stomach with thy food;
Needless food avoid thou should,—
Harms it much, O Nectar's Son !

217

Night-meal should be ever light;
Food forbiddên shun outright.
If thou want the Inner Light
Lobh control, O Nectar's Son !

218

Lobh as long as stays in thee,
Ripus all six will rule thee;
Fallên from *yog* thus thou be;
Careful be, O Nectar's Son !

219

भोजन सुबह-शाम दो बार,
शुद्ध-सात्विक और मिताहार ।
योगी पाये दिन या रात,
एक बार ही, हे अमृत सुत !
(२१५)

पहले स्नान, ले फिर भोजन,
हो शांत चित्त और स्वच्छ वसन ।
जब तक क्षुधा न जागे पूरी—
खाना नहीं, हे अमृत सुत !
(२१६)

खाना बुरा है ठूस-ठूस कर,
अनावश्यक भोजन रोगों का घर ।
है मिताहार नैसर्गिक नुस्खा—
बचो रोग से, हे अमृत सुत !
(२१७)

भोजन हो हलका शाम का,
निषिद्ध, अखाद्य नहीं काम का ।
अंतर ज्योति गर पानी हो तो—
लोभ नियंत्रण, हे अमृत सुत !
(२१८)

लोभ पर जबतक नहीं नियंत्रण,
छः शत्रु करते रहते आक्रमण ।
योग पतित हो जाते यों तुम—
सावधान हो, हे अमृत सुत !
(२१९)

Just as bad is too-much eating,
 So too, bad is too-much sleeping;
 Very bad is day-time sleeping;—
 Bring disease they, Nectar's Son !
 220

Six hour sleep for many good.
 Much less sleep the *yogins* should.
 Slowly this control thou should;
 Kill not rashly, Nectar's Son !
 221

After-supper, mind it ye,
 Should be one whole hour for thee;
 Go to bed with *Brahm*-thought ye,
 Think not world then, Nectar's Son !
 222

In the quarter last of night
 Think thou Self-existent Light.
 Fooding, sleeping — all aright
 Do in fixed times, Nectar's Son !
 223

In the fixed time should thou do
Prânâyâmik practice too,
 Do it in the manner due,
 Not in haste, O Nectar's Son !
 224

बहुत बुरा होता अति भोजन,
बुरा बहुत होता अति शयन ।
दिवा शयन तो लाता रोग—
अति बुरा, बचो, हे अमृत सुत !
(२२०)

बस सोना घंटे छः अधिकतम,
योगी को तो इससे भी कम ।
समय नियंत्रण धीरे-धीरे,
नहीं हड़बड़ी, हे अमृत सुत !
(२२१)

संध्या भोजन के पश्चात्,
बीते घंटा एक, निज साथ ।
जग भुला, ब्रह्म विचार मन में ले—
सोने जाना, हे अमृत सुत !
(२२२)

हर रात्रि के अंतिम प्रहर में,
अपने को देखो ईश्वर में ।
भोजन, सोना नियत समय पर—
इक दिनचर्या, हे अमृत सुत !
(२२३)

नियत समय पर प्राणायाम,
नियत समय पर जप और नाम ।
आसन क्रिया निर्देशानुसार—
समय लगाकर, हे अमृत सुत !
(२२४)

Yam and *niyam* practise first;
Âsans, *mudrâs* learn thou just;
 Train thy mind and body must;
 Love the Lord, O Nectar's Son !
 225

With the help of teacher kind,
 With a peaceful, cheerful mind
 Do thy *prânâyâm* and bind
 Vital airs, O Nectar's Son !
 226

When are vital airs the two
 Well controlled by steady you,
 Surely *chakras* six come too
 Under power, Nectar's Son !
 227

Then *sahasrâr* conquer thou,
 Nectared moon thou do get now,
 Then get absolute Self thou,
 Be absorbed then, Nectar's Son !
 228

Be absorbed thou in the Self,
 Absolute, Supremest Self;
Siv-absorbed be *Siv* thyself,
 Shine thou Real, Nectar's Son !
 229

यम, नियम से शुरु अभ्यास,
 आसन-मुद्रा, श्वास-प्रश्वास ।
 फिर सिखलाना तन को मन को—
 प्रभु से प्रेम, हे अमृत सुत !
 (२२५)

गुरु कृपा का लेकर सहारा,
 नियमित प्राणायाम के द्वारा ।
 प्रफुल्ल शांत मन, निश्चल जब हो—
 साधो प्राण, हे अमृत सुत !
 (२२६)

प्राण का नियंत्रण अभ्यास से,
 साधो प्राण, अपान प्रयास से ।
 प्राण सधे छः चक्र भी सधते—
 जग जाते हैं, हे अमृत सुत !
 (२२७)

फिर खिलता है कमल सहस्रार,
 अब मिल जाती है, अमृत धार ।
 परम आत्म को पा लो अब तुम,
 आत्म समाहित, हे अमृत सुत !
 (२२८)

हो जा परम में आत्म-सात,
 खो जा परमात्म में दिन रात ।
 शिव समाहित, शिव हो जा तू—
 यथार्थ दीप्त, हे अमृत सुत !
 (२२९)

Only real, blissful Self,
 Shine alone eternal Self,
 Shine thou partless, spotless Self;—
Mâyâ fades, O Nectar's son !
 230

World and *Mâyâ* fade and fade,
 Into nothingness they fade;
 Life of steady *yog* be led,
 And be *Keval*, Nectar's Son !
 231

Be thou *Keval*, try for this,
 Try with heart and soul for this;
 Chances present do not miss;
Prânâyâm do, Nectar's Son !
 232

Artful aid of this thou take,
Sâstras' orders never break,
 Pureness thine let nothing shake,
 Shake off badness, Nectar's Son !
 233

Lay the axe at root of all
 Habits bad and harmful all.
 Harmful sure are *vyasans* all,
 Eighteen *vyasans*, Nectar's Son !
 234

केवल सत्य आनंदमय आत्मन,
ज्योतित करे परमात्म सनातन ।
अखंड-निष्कलंक आत्मा जागे—
माया अस्त, हे अमृत सुत !
(२३०)

संसार-माया का अस्त-अस्त,
जीवन योगमय नित अभ्यस्त ।
शून्य समाहित होते दोनों—
हो जा केवल, हे अमृत सुत !
(२३१)

प्रयास करो, होना है केवल,
प्रयासरत, कर आत्मा निर्मल ।
अवसर व्यर्थ न जाने देना—
कर प्राणायाम, हे अमृत सुत !
(२३२)

कभी न तोड़ना शास्त्र निर्देश,
सदा खोजना, शास्त्र संदेश ।
कभी न खोना शुचिता अपनी—
मिटा बुराई, हे अमृत सुत !
(२३३)

समूल नष्ट कर बुरी लतें,
छोड़ सारी गलत आदतें ।
व्यसन लूटते, तन-धन-जीवन,
अठारह व्यसन, हे अमृत सुत !
(२३४)

Too-much reading harmful, mind;
 To those books remain confined
 Chosên by thy teacher kind.
 Read not all books, Nectar's Son !
 235

Getting from books needful lore
 For thy *yog*, thou read no more.
 Mind thy *yog* then, *viññān* store;
 Read not, talk not, Nectar's Son !
 236

While thou talk,—the Lord thou miss,
 Lose thou power, time and bliss,
Yog is *brokên*; so, in peace,
 Mauni be, O Nectar's Son !
 237

Maun of *vāk* and mind have ye;
 Like the deaf and blind move ye;
 Be like dead thou, mind-less be;—
 Shines Divine then, Nectar's Son !
 238

When Divine but once doth shine,
 Give not up then practice thine;
Adhyās staying with *me*, *mine*,
 Take no rest, O Nectar's Son !
 239

बहुत पढ़ना भी अपकारी,
ना पढ़ना पुस्तकें सारी ।
गुरु द्वारा सुभाई पुस्तकें—
पढ़ना मात्र, हे अमृत सुत !
(२३५)

पुस्तक से ले जरूरी ज्ञान,
योग से होगा संचित विज्ञान ।
नाहक ना पढ़, व्यर्थ बेकार—
ना बातें कर, हे अमृत सुत !
(२३६)

बोलो, समय शक्ति का अपव्यय,
बोलो, जागे प्रभु प्रति संशय ।
योग रुके और शांति मिटे—
मौनी बन तू, हे अमृत सुत !
(२३७)

मन से मौन, वाक से मौन,
न जाने तू है ही कौन ।
बस बन जा शव, बधिर नीरव—
दिव्यालोक तब, हे अमृत सुत !
(२३८)

देख भूलक बस एक आलोक की,
भूल अभ्यास ना, चिंता लोक की ।
“मैं”, “मेरे” संग रहते अध्यास,
भूल न थकना, हे अमृत सुत !
(२३९)

Take no rest, with *yog* go on,
 Till is *adhyâs* fully gone;
 Till in *Bhûmâ* merge, go on ;
 Kick thou *alpam*, Nectar's Son !
 240

Only *Bhûmâ* gives thee Bliss;
Alpam does not give thee peace;
Alpam painful, fearsome this;
 Don't want *alpam*, Nectar's Son !
 241

Wanting *alpam* do thou miss
 Fearless *Âtman*'s endless Bliss;
 Give up *alpam*, and get Peace,
 Peace eternal, Nectar's Son !
 242

Many *yogins*, *alpam* getting,
 Give up practice comfort seeking,
 Pose as teachers *chelâs* making,
 Restless be, O Nectar's Son !
 243

Restless be they, peaceless too;
 Harms to selves and others do;
 Run in *Mâyâ*'s net, 'tis true,
 Hither, thither, Nectar's Son !
 244

विश्राम नहीं बस योगाभ्यास,
जबतक न मिट जाएं अध्यास ।
जब तक ना हो भूमामय तू—
अभ्यास करो, हे अमृत सुत !
(२४०)

अल्प भयावह और दुःखदायी,
अल्प से कब शांति है आयी ?
केवल भूमा देता आनंद—
ना थोड़ा अल्प, हे अमृत सुत !
(२४१)

अल्प लिया तो प्रभु रूठेंगे,
शांति और आनंद छूटेंगे ।
अल्प नहीं, चाह अनंत को—
पा नित्य शांति, हे अमृत सुत !
(२४२)

कई साधक बस पाकर अल्प,
योग त्याग, कर काया कल्प ।
गुरु बनते, बनाते चेले—
तृप्ति क्षणिक ये, हे अमृत सुत !
(२४३)

हो अधीर और अशांत, अनिष्ट,
अपना, सबका करते अनिष्ट ।
माया जाल में भागम-भाग,
इधर उधर बस, हे अमृत सुत !
(२४४)

Mâyâ false, enjoy it not;
 Busy be with *Brahman's* thought;
 Let illusions all be shot,
 Shot and killed, O Nectar's Son !
 245

“*Jiv* and *Siv* by nature two,
 Quite distinct and different too;
 Never can be one, 'tis true.”—
 First illusion, Nectar's Son !
 246

“*Âtman* ever is free doer,
 He enjoyer, he is knower,
 He desirer, his all power.”—
 Second illusion, Nectar's Son !
 247

“*Jiv* is tied to bodies three,
 Tied and bound for ever he;
 Thus ‘*attached*’ is he, thou see.”—
 Third illusion, Nectar's Son !
 248

“Great and Mightful Cause of all,
Brahman made, became this all ;
 ‘*Vikârin*’ Him thus we call.”—
 Fourth illusion, Nectar's Son !
 249

माया मिथ्या, क्यों तू मस्त ?
 ब्रह्म विचार में हो तू व्यस्त ।
 भ्रांति भाव का कर विनाश—
 मिटा छलावा, हे अमृत सुत !
 (२४५)

“हमें सिखाती है, माया ठग,
 शिव और जीव है अलग-अलग ।
 एक नहीं हो सकते दोनों ।”
 प्रथम भ्रांति ये, हे अमृत सुत !
 (२४६)

“आत्मा ही तो स्वतंत्र कर्ता है,
 सारा ब्रह्मांड इससे डरता है ।
 भोक्ता, ज्ञाता, अभिलाषी ये”—
 भ्रांति दूसरी, हे अमृत सुत !
 (२४७)

“तीन शरीरों से जीव बँधा,
 जकड़ा अकड़ा रहता सर्वदा ।
 स्थूल, सूक्ष्म या सूक्ष्मतम”—
 भ्रांति तीसरी, हे अमृत सुत !
 (२४८)

“है बड़ा, बली, सबका कारण,
 ये सब हुआ, कारक ब्रह्मण ।
 प्रभु तो विकारी, अविवेकी ब्रह्म”—
 चौथी भ्रांति, हे अमृत सुत !
 (२४९)

“Independent of *Brahm*, oh,
World’s existence real, know;
Not apparent, not false show.”—
Fifth illusion, Nectar’s Son !
250

When illusions all leave you,
Doubt and fear both bid adieu,
Vijnân shines more clear and true,
See *Parâbar*, Nectar’s Son !
251

Brahm Parâbar when thou see,
Karma’s force is lost in thee;
Moltên in *prem* merge then ye
In *Parâtpar*, Nectar’s Son !
252

Brahm Parâtpar full of Bliss,
Full of ceaseless, endless Peace—
Merge in This thou, melt in This,
Melt entirely, Nectar’s Son !
253

Melting thus is open sure
To all men of *ashrams* four;
But is surer, easy more
For the *bhikshu*, Nectar’s Son !
254

“बिन ब्रह्म ही जग का अस्तित्व,
लगे सत्य-यथार्थ, असार तत्त्व—
न लगे अवास्तविक या मिथ्या ।”
भ्रांति पांचवी, हे अमृत सुत !
(२५०)

जब भ्रांतियों से छुट्टी पायी,
शंका-भय की तब हो विदाई ।
विज्ञान उदय स्पष्टतर होता—
देख पराबर, हे अमृत सुत !
(२५१)

जब देखो तुम ब्रह्म पराबर,
प्रेम में मिल, पाते परातपर ।
कर्म प्रभाव सघनता मिटती,
मिटती पीड़ा, हे अमृत सुत !
(२५२)

ब्रह्म परातपर आनंद का सागर,
अनंत शांति है, ब्रह्म परातपर ।
डूब जा, घुल जा इसमें तू—
पूरा घुल जा, हे अमृत सुत !
(२५३)

चारों आश्रम के नारी-नर,
पा सकते हैं ब्रह्म परातपर ।
पर सुगम संन्यासी के लिए—
है परातपर, हे अमृत सुत !
(२५४)

For true *bhikshus* easier;
Āshram fourth is saviour,
 Safer, surer, happier
 Than the others, Nectar's Son !

255

Safer, surer, though 'tis purer,
 Thou should not this *āshram* enter
 Ere thou can get *virāg* stronger,
 Sādhanas four, O Nectar's Son !

256

Till is stronger *virāg* got,
 Stay at home and do as taught;
 Paths of others follow not;
 Do thy own work, Nectar's Son !

257

Every medicine not for all;
 Nectar to him, to thee gall;
 Every rule is not for all ;—
 Rule for progress, Nectar's Son !

258

Every rule is not for thee;
 Counsel of thy guide seek ye;
 Do his bidding, try to be
 Selfless *grihī*, Nectar's Son !

259

संन्यासाश्रम है मुक्तिदाता,
 संन्यासी परातपर है पाता ।
 दूसरे आश्रमों से अधिक—
 सुरक्षित, निश्चित, हे अमृत सुत !
 (२५५)

गृहस्थ बनकर करना अभ्यास,
 बस यों ही ना लेना संन्यास ।
 विराग जगाना, भक्ति जगाना—
 चतुर्साधन, हे अमृत सुत !
 (२५६)

घर पर रहकर गुरु अनुसार,
 जीतो मन को, जीतो संसार ।
 ना इधर उधर भटकाना मन—
 निज कर्म करो, हे अमृत सुत !
 (२५७)

हाँ ! हर रोगी की अलग दवा,
 एक को जहर दूजे को सुधा ।
 न होते नियम सबके लिए एक—
 अपना नुस्खा, हे अमृत सुत !
 (२५८)

ना तेरे लिए हर उपचार,
 गुरु परामर्श के अनुसार ।
 मार्ग पकड़ कर बनना है बस—
 निःस्वार्थ गृही, हे अमृत सुत !
 (२५९)

When a *grihî*, ever keep
 Wistful eye on Nectar-Deep.
Doshas all thou try to sweep,
 Live thou best life, Nectar's Son !
 260

Live that thou may soonest be
 Fit to cut the *samsâr*-tree
 By the *virâg*, and be free,
 Endless happy, Nectar's Son !
 261

Happy if thou want to be,
 Fill not then thy coffers ye.
 Curb thy *kâm*, content thou be.
 Live thou plain life, Nectar's Son !
 262

Money earn in honest way;
 Means dishonest shun for aye;
 Money spend in proper way,
 Spend judicious, Nectar's Son !
 263

Wasteful must thou never be.
 Be not miser, close-fist ye;
 Miserable sure is he
 Bent on saving, Nectar's Son !
 264

भक्ति भाव की पकड़ सोपान,
 ले लक्ष्य एक बस अमृत पान ।
 गृही ! दोष मिटा कर अपने—
 उत्तम जीवन जी, अमृत सुत !
 (२६०)

अर्जित कर लो इतना विश्वास,
 तुम काट सको संसार-पाश ।
 होकर वैरागी, अबाध मुक्त—
 पा परमानंद, हे अमृत सुत !
 (२६१)

अगर परम आनंद है पाना,
 तब ना भरना अपना खजाना ।
 काम निरोध, हो संतुष्ट, तृप्त—
 सादा जीवन, हे अमृत सुत !
 (२६२)

कर इमान्दारी से अर्थ अर्जन,
 ना छूना बेइमानी का धन ।
 उचित कार्य पर करना व्यय—
 सविवेकी हो, हे अमृत सुत !
 (२६३)

कभी न बनना तुम अपव्ययी,
 ना मुट्ठी बंद, कृपण कतई ।
 वे जन होते हैं दयनीय—
 जो बचतातुर, हे अमृत सुत !
 (२६४)

Pleased alone in hoarding, he
 Much distresses Self, thou see,
 Others too; is peaceless he
 Ever selfish, Nectar's Son !

265

Selfish he, and deaf his ear,
 Cries of woe he does not hear;
 Blind he sees not others' tear,
 Others' needs, O Nectar's Son !

266

Tâmas, narrow ever he;
 Void of self-respect is he;
 Pains, disgraces bears all he
 For his saving, Nectar's Son !

267

Mâyâ's chains him tightly bind.
 Be not miser, be thou kind.
 Be thou ever broad in mind;
 Love thou all, O Nectar's Son !

268

Let all needy men do share
 Any pittance thou can spare.
 Kindly heart can ever spare,
 Finds it way, O Nectar's Son !

269

जो करता केवल जमाखोरी,
जमाखोरी जिसकी कमजोरी ।
स्वयं दुःखी, दुःख दे औरों को—
सदा स्वार्थी, हे अमृत सुत !
(२६५)

ना सुने, बधिर, रुदन-विलाप,
सुनकर भी रहता चुपचाप ।
अंधा क्या देखे, पर आँसू—
पर आवश्यकता, हे अमृत सुत !
(२६६)

तामस, संकीर्ण, सदानुदार,
आत्म सम्मान रहित बेकार ।
बचत के बदले सहता केवल—
पीड़ा-लज्जा, हे अमृत सुत !
(२६७)

रखती माया बाँध कृपण को,
प्रभु मिलते जो प्रस्तुत अर्पण को ।
बनो विशाल हृद, दयावान—
सबसे प्रेम, हे अमृत सुत !
(२६८)

थोड़ा-बहुत बचाकर बाँटो,
हाथ बढ़ाओ, कभी ना नाटो ।
करुण हृदय तो सदा बाँटता—
खुद भूखा रह, हे अमृत सुत !
(२६९)

If thou too poor to give be
Serve with mind and body ye.
Feel for all as feel for thee,
Self -forgetful, Nectar's Son !
270

Self- forgetful, selfless, kind
Serve thou all with heart and mind.
Service-chances when thou find
Use them well, O Nectar's Son !
271

Use them well, and thank thy star
Thou could worship Mother dear
In all forms,—all forms of Her;
All are She, O Nectar's Son !
272

All is She, thou worship Her
In all ways that poss'ble are;
Offer all thou have to Her,
Offer with love, Nectar's Son !
273

Love no bargain knows—thou see,
Lose thee in the Nectar-Sea;
Separateness do lose ye;—
One alone, O Nectar's Son !
274

इतने दीन कि ना दे पाओ,
मन शरीर में सेवा लाओ ।
सबमें देखो, खुद को देखो—
आत्म विस्मरण, हे अमृत सुत !
(२७०)

जब पाओ सेवा के अवसर,
सेवा करो भाव से भरकर ।
आत्म विस्मरण और निःस्वार्थ—
उपयोग करो, हे अमृत सुत !
(२७१)

प्रभु इच्छा से मिलते अवसर,
करनी पूजा तो सेवा कर ।
दीन, दुःखी सब रूप उसी के—
उनको पूजो, हे अमृत सुत !
(२७२)

सब कुछ माँ, तू पूज शक्ति को,
बना पुजापा सत्य भक्ति को ।
माँ का सबकुछ, माँ को अर्पण—
प्रेम, विनय से, हे अमृत सुत !
(२७३)

प्रेम न जाने है सम्भौता,
डुबा मन को, खोने का न्यौता ।
हो जा अभिन्न, खोकर खुद को—
बस एकाकार, हे अमृत सुत !
(२७४)

Oneness shining in all same,—
 What is praise and what is blame ?
 What is censure, what is fame ?
 What is anger, Nectar's Son ?
 275

Who is good and who is bad ?
 Who is glad and who is sad ?
 Who is wise and who is mad ?—
 One alone, O Nectar's Son !
 276

What is hate and what affection ?
 What is action, what inaction ?
 What is bondage, liberation ?—
 All that One, O Nectar's Son !
 277

What accept and what reject ?
 What give up and what select ?
 Who does harm, whose fault detect ?
 Equal-mind be, Nectar's Son !
 278

Equal-mind be, peaceful, calm,
 Ever same whate'er may come;
 Ever busy do become
 With the *Brahman*, Nectar's Son !
 279

एक चमकता, सबमें एक सा,
 है निंदा वही, वही प्रशंसा ।
 नायक भी वह, खलनायक भी—
 समभाव धरो, हे अमृत सुत !
 (२७५)

जीवित कौन है, कौन निःश्वास ?
 प्रसन्न कौन है, कौन उदास ?
 कौन मूरख है, ज्ञानी कौन ?
 एक अकेला, हे अमृत सुत !
 (२७६)

क्या घृणा और क्या अनुरक्ति ?
 क्या है बंधन, क्या है मुक्ति ?
 कार्य, अकार्य और कारण—
 एक वही है, हे अमृत सुत !
 (२७७)

क्या दृश्य है और क्या दृष्ट ?
 क्या अनिष्ट है, क्या उत्कृष्ट ?
 किस की भूल, कौन अनुकूल ?
 समभावी हो, हे अमृत सुत !
 (२७८)

हो सदा शांत और समभाव,
 ना किसी और का हो प्रभाव ।
 ब्रह्म में व्यस्त, सदा आश्वस्त—
 ब्रह्म मिलेंगे, हे अमृत सुत !
 (२७९)

Busy with the *Brahman* be,
 Everywhere thou Oneness see,
 With that Shining Oneness ye
 Cover all things, Nectar's Son !
 280

Meditate thou Oneness ever,
 Saturate thee with One ever,
 Lost in Oneness be for ever;—
 I-ness melts, O Nectar's Son !
 281

When the I-ness melts and gone,
 Ignorance is wholly gone,
 Intuition then doth dawn;
 Intuit *Brahman*, Nectar's Son !
 282

Intuit thus the *Brahman* ye,
 Knowing *Brahman*, *Brahman* be;
 Thou art *Brahman*, *Brahman* ye.
 Intuit *Brahman*, Nectar's Son !
 283

One *samādhi* will not do;
 Full of zeal thou *yog* pursue;
 Break not practice, break not you,
 Seeking comfort, Nectar's Son !
 284

व्यस्त ब्रह्म में, एकाकार,
 एक देख और एक निहार ।
 प्रदीप्त एक की शीतल छाया—
 ढक ले सबको, हे अमृत सुत !
 (२८०)

उसी एक पर ध्यान धरो,
 तन-मन एक मय प्राण करो ।
 खो जाओ, एकमय हो जाओ—
 'मैं' मिटता है, हे अमृत सुत !
 (२८१)

'मैं', 'मेरा' मिटता जब है,
 अज्ञान चला जाता तब है ।
 अनुभूति प्राप्त होती है—
 अनुभूत ब्रह्म कर, हे अमृत सुत !
 (२८२)

ब्रह्म जान कर, ब्रह्म बनो,
 तुम्हीं ब्रह्म हो, ब्रह्म बनो ।
 परम ब्रह्म से योग हुआ जब—
 अनुभूत ब्रह्म कर, हे अमृत सुत !
 (२८३)

है एक समाधि से क्या होना,
 योग सागर में नित डुबोना ।
 अभ्यास न टूटे, तुम ना टूटो—
 आराम न चाहो, हे अमृत सुत !
 (२८४)

Seeking comfort, loving ease,
 For light pleasures, friends to please,—
 Anyhow thou must not cease

Work of *yog*, O Nectar's Son !

285

Nothing do depend upon;
Anapeksha thou go on
 With thy work of *yog* anon,
 With thy worship, Nectar's Son !

286

If thou worship *Krishna-Syâm*,
Kālī, Tārā, Siv or *Rām*—
 Every One is *samsâr*-balm—
 Love thy Deity, Nectar's Son !

287

Deity thy Lord, Lord of all,
 Deity made, became this all,
 Deity is He, She and all
 Deity *Brahman*, Nectar's Son !

288

Worship Deity, He does all,
 Worship Him in temples all,
 Worship Him in forms the all,
 In all things, O Nectar's Son !

289

न हावी हो आलस्य आराम,
 कष्ट, भोग, मित्रों का नाम ।
 योग छोड़ने के कारण ये—
 सिर्फ बहाना, हे अमृत सुत !
 (२८५)

नहीं किसी पर होना आश्रित,
 पूजा ये योग है अमृत ।
 अनापेक्षा निष्काम करो तुम—
 पूजा योग, हे अमृत सुत !
 (२८६)

अगर पूजते राधे-श्याम,
 काली, तारा, शिव या राम ।
 सभी रूप हैं एक बीज के—
 आराध्य पूज, हे अमृत सुत !
 (२८७)

प्रभु ही देव, देवाधिदेव,
 सब देवों में, प्रभु एक मेव ।
 शिव वही है, शक्ति वही है—
 हर मूरत ब्रह्म, हे अमृत सुत !
 (२८८)

हर मंदिर प्रभु का मंदिर है,
 हर रूप में प्रभु ही स्थिर है ।
 सबको पूजो, सबमें पूजो—
 जड़-चेतन में, हे अमृत सुत !
 (२८९)

See how fine the sky He colours !
 See how nice He makes the flowers !
 See how cooling rain He showers !
 See His glory, Nectar's Son !
 290

On that tree, see; He is cawing,
 In boy yonder He is crying,
 In the kitchen He is frying;—
 Where not He, O Nectar's Son ?
 291

He unseen the plant grows there,
 Whitens here the old man's hair,
 Ever is He moving air,
 Sweetly smiling, Nectar's Son !
 292

Ever is He nearest thee,
 All thy doing does He see,
 All He knows whate'er think ye;
 He thy guide, O Nectar's Son !
 293

Ever moves thy *prân* within;
 Ever moves thy blood, unseen;
 He digests food taken in;
 All He does, O Nectar's Son !
 294

रंगों का वह कुशल चितेरा,
 अदभुत क्यों है शाम सवेरा ।
 रंग बिरंगे फूल न गिन सको—
 महिमा उसकी, हे अमृत सुत !
 (२९०)

खग के कुंजन में भी गाता,
 बच्चे के मुख पर मुस्काता ।
 खेत, खलिहान, रसोई में,
 कहाँ नहीं वह, हे अमृत सुत !
 (२९१)

चलती बयार, प्रभु ही कारक,
 सागर का ज्वार, प्रभु ही कारक ।
 हँसना-रोना, जगना-सोना,
 प्रभु ही कारक, हे अमृत सुत !
 (२९२)

हर समय तुम्हारे पास है,
 वो गुरु-ज्ञान, विश्वास है ।
 जो भी सोचो, वो जाने है—
 जो करो, देखता, हे अमृत सुत !
 (२९३)

हर्ष-विषाद और भूख-प्यास,
 उससे ही चलती है श्वास ।
 खून दौड़ता, हृदय धड़कता—
 सब वो करता, हे अमृत सुत !
 (२९४)

He does all, and all for thee;
Mighty, loving, all-know He;
He thy prop and guide, Him see;
Loving be, O Nectar's Son !
295

See Him ever, think Him ever,
Him forget not, Him remember;
Chant His name, and worship ever
In and out, O Nectar's Son !
296

Goes to office He with thee;
By the side, see, lies down He.
Eats He first, *prasâd* take ye.—
Think this way, O Nectar's Son !
297

Busy with Him, full of Him,
Be thou lost in love for Him
Then thou see the lucent Him,
See Him, know Him, Nectar's Son !
298

Then thou see Him in all form,
Many forms and formless form;
Get entire Him as perform
Ceaseless *yog*, O Nectar's Son !
299

बली, प्रेममय सब जाने है,
 तुझको वो अपना माने है ।
 करता सब तेरे खातिर ही,
 गुरु तेरा वह, हे अमृत सुत !
 (२९५)

सदा याद कर, सदा ध्यान कर,
 हर पल बस नाम का गान कर ।
 बसा ले सांसों की गति में—
 भीतर-बाहर, हे अमृत सुत !
 (२९६)

घर या अफिस, रख प्रभु को साथ,
 सुख, दुःख में सरपर प्रभु हाथ ।
 प्रभु पाते हैं, फिर मिले प्रसाद—
 ऐसा सोचो, हे अमृत सुत !
 (२९७)

डूब उसी में, व्यस्त उसी में,
 खोकर हो जा मस्त उसी में ।
 फिर देख मोहिनी मूरत को—
 देखो, जानो, हे अमृत सुत !
 (२९८)

पशु, पक्षी, कीट-रूप उसी के
 पर्वत, सागर, अरूप उसी के ।
 पूरा पा लो, तुम अपना लो—
 योगी बन कर, हे अमृत सुत !
 (२९९)

Get Him, be absorbed in Him,
Be absorbed in Pure Supreme,
Be thou lost in Self Supreme,
 Lost in *Pûrnam*, Nectar's Son !
300

Lose thyself by *yoga*'s might,
Yog perform in earnest right;
Patience makes thy labours light;
 On with *yog*, O Nectar's Son !
301

On and on, with *yog* go on,
Keep it secret, or 'tis gone;
Hide thy *mantram* thou anon,
 Mantram holy, Nectar's Son !
302

Mantram is Lord blissful, fine;
Mantram is His name and sign;
Mantram gives thee Lord benign;
 Mantram gives all, Nectar's Son !
303

Get from guide thou *mantram* thine;
Do remember *mantram* fine;
Sanctifies it system thine;
 Don't forget it, Nectar's Son !
304

हैं सागर में मिलती नदियाँ,
 ब्रह्म में खो जाती सदियाँ ।
 तुम मिल जाओ, तुम खो जाओ—
 पूर्णम में ही, हे अमृत सुत !
 (३००)

‘मैं’ मिटेगा, करो अभ्यास,
 योग बुझाए, अमृत की प्यास ।
 धैर्य करता सब आसान—
 योगी बन तू, हे अमृत सुत !
 (३०१)

गोप्य मंत्र का होता प्रभाव,
 गोप्य नहीं तो खोता प्रभाव ।
 मंत्र, विधि, सब गोप्य रहे—
 मंत्र तो पावन, हे अमृत सुत !
 (३०२)

‘मंत्र’, आनंदमय है भगवान
 ‘मंत्र’, प्रभु का ही गुणगान ।
 मंत्र मिलाता करुणानिधि से—
 मंत्र सफलता, हे अमृत सुत !
 (३०३)

गुरु से पाना है गुरुमंत्र,
 सचेष्ट, ध्यान से शुरु मंत्र ।
 कलुषित अंतर का कलुष मिटे—
 नहीं भूलना, हे अमृत सुत !
 (३०४)

Mantram holy ever utter
 Loudly, by mind, or in whisper;
 Loud is good, and whisper better,
 Mental best, O Nectar's Son !
 305

Jap perform of *mantram* ye,
 How-so-ever may thou be;
 Lose no breath, with each must ye
 Say the *mantram*, Nectar's Son !
 306

By thy *prânas* coming, going,
 By the blood-drops ever flowing,
 By the atoms bodies forming
 Mantram be sung, Nectar's Son !
 307

Let whole nature *mantram* sing,
 Air and water *mantram* sing,
Jad and *chetan* *mantram* sing,
 Let all sing this, Nectar's Son !
 308

Mantram be sung, *mantram* dear,
 In and out, both far and near,
 Everywhen and everywhere;
 Only *mantram*, Nectar's Son !
 309

सस्वर कंठ से तापस ! जप,
 ओठों से या मानस जप ।
 सस्वर से नीरव अच्छा—
 मानस उत्तम, हे अमृत सुत !
 (३०५)

अब जप करो, जप ही समर्थ,
 ना करो एक भी श्वास व्यर्थ ।
 जैसे भी हो, हर श्वास साथ—
 गुरुमंत्र जपो, हे अमृत सुत !
 (३०६)

आती जाती हर श्वासन के साथ,
 रक्त प्रवाह, हिय धड़कन के साथ ।
 ये कोशिकाएँ बनाती जब देह—
 गुरुमंत्र जपो, हे अमृत सुत !
 (३०७)

करे सारी प्रकृति मंत्र पाठ,
 सारी कृति संस्कृति मंत्र पाठ ।
 भू, पावक, जल, वायु, नभ—
 जपें मंत्र सब, हे अमृत सुत !
 (३०८)

मंत्रों का जप, मंत्रों का गान,
 हर समय रहे मंत्रों का ध्यान ।
 भीतर-बाहर या दूर पास—
 बस मंत्र जपो, हे अमृत सुत !
 (३०९)

Nothing but it, merge in this,
 This alone, oh, bliss and bliss !
 No intrusion, mind thou miss:—
 Lord appears, O Nectar’s Son !
 310

Lord’s seen in *samadhi*’s peace:—
 Splendourful, Source of all this,
 Refuge of all, endless Bliss,
 Pure and boundless, Nectar’s Son !
 311

Transient this *samâdhi*-state;
 Soon does vanish Lord thou met
 Like the flash of lightning yet.
 See Him oft, O Nectar’s Son !
 312

See Him longer, get more Light,
 Calming mind by *yoga*’s might;
 More thou fight, the more the Light;—
 On with practice, Nectar’s Son !
 313

Practise, practise; mind control
 That thou ever see the Goal,
 That thou ever be the Goal;
 Stop not practice, Nectar’s Son !
 314

और नहीं कुछ, इसमें पैठो,
 खड़े-खड़े या जब भी बैठो ।
 गुरुमंत्र जपो, जप ही तप है—
 प्रभु प्रकटेंगे, हे अमृत सुत !
 (३१०)

करुण हृदय और ज्योतिर्मय,
 असीम आनंद, सबका आश्रय ।
 ऐसे दर्शन हों समाधि में—
 ओंकार रूप, हे अमृत सुत !
 (३११)

रहती क्षणिक समाधि अवस्था,
 प्रभु का लोप और लुप्त आस्था ।
 दामिनी की क्षणिक चमक सा—
 बारंबार दर्शन, हे अमृत सुत !
 (३१२)

प्रभु स्थिर जब, पाओ प्रकाश,
 मन-बुद्धि शांत कर योगाभ्यास ।
 जितना अभ्यास, उतना प्रकाश—
 अभ्यास करो, हे अमृत सुत !
 (३१३)

अभ्यास, अभ्यास, मन का नियंत्रण,
 जब तक ना हो ध्येय का दर्शन ।
 अभ्यास करो नित प्रयास करो—
 ध्येय तुम्हीं हो, हे अमृत सुत !
 (३१४)

Stop not practice; know it right,—
 Best *samâdhis* give true Light,
 None but them have got that might;
 Vain inferring, Nectar's Son !

315

Vain book-learning, reasons fine !—
 Enter not they Land Divine !
 They, of course, are helpers thine,
 Take their help, O Nectar's Son !

316

Help they most thee, when thou do
 Mind control and senses too,
 Even-minded *yog*-work do;
 Selfless work, O Nectar's Son !

317

Selfish men are bent on gain,
 Mental calmness don't obtain,
 Concentration can't attain,
 Can't have *yog*, O Nectar's Son !

318

With thy study, reason calm,
 Thoughtfulness and *prânâyâm*,
 Concentration's surest balm
 Train thy *buddhi*, Nectar's Son !

319

समाधि लगे जब बारंबार,
 परम प्रकाश से एकाकार ।
 प्रयास करो नित, अभ्यास करो—
 फल विचार व्यर्थ, हे अमृत सुत !
 (३१५)

किताबी ज्ञान अधूरा थोथा,
 तर्क-संवाद भी अधूरा होता ।
 केवल सहायक ये योग के—
 नहीं मुख्य ये, हे अमृत सुत !
 (३१६)

सहायक होते, ये करते प्रेरित,
 हों जब मन-इन्द्रिय नियंत्रित ।
 हो समभाव कर योगाभ्यास—
 निःस्वार्थ कर्म, हे अमृत सुत !
 (३१७)

स्वार्थी सदा पाने को आतुर,
 लय विहीन उसके सातों सुर ।
 शांति मिले ना मिले एकाग्रता—
 योग अयोग्य, हे अमृत सुत !
 (३१८)

गुरु कृपा, अध्ययन, तर्क शांत,
 मन में गीता के दृष्टांत ।
 प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान—
 साधो बुद्धि, हे अमृत सुत !
 (३१९)

Buddhi sharpen, keenest make,
 Self-control thou must not break,
 Help of teacher do thou take,
 Learn the Truth then, Nectar's Son !
 320

Learning Truth from teacher thou
 Do apply thy reason now;
 Must take help of teacher thou,
 Doubts remove thus, Nectar's Son !
 321

Thus the teacher's information
 Will grow into firm conviction;
 Then thou thirst for direct vision
 Of the Truth, O Nectar's Son !
 322

But thy reason, be it fine,
 Enters not Domain Divine;
 Then thy *yog* and love combine,
 Quench thy thirst, O Nectar's Son !
 323

Karans sleeping, thou do get
 Pure Truth in *Samādhi*-state,
 When thy mind thou concentrate
 To perfection, Nectar's Son !
 324

प्रयास करो, हो बुद्धि तीक्ष्णतम,
 आत्म नियंत्रण भी हो ना कम ।
 ज्ञानचक्षु गुरु, उनसे देखो—
 सत्य देख लो, हे अमृत सुत !
 (३२०)

पढ़कर गुरु से सत्य के पाठ,
 तर्क करो अब, आठ या साठ ।
 संशय, शंका मन में आए—
 समाधान गुरु, हे अमृत सुत !
 (३२१)

ऐसे पा गुरु प्रदत्त ज्ञान,
 है होता सुगम लक्ष्य संधान ।
 सत्य दर्शन की इच्छा जगती—
 प्रत्यक्ष दर्शन, हे अमृत सुत !
 (३२२)

जैसे भी हों तर्क तुम्हारे,
 ले जाते ना प्रभु के द्वारे ।
 योग-प्रेम मिलकर करते तब
 तृषा-तृप्ति, हे अमृत सुत !
 (३२३)

परम सत्य मिलता समाधि में,
 सहस्रार खिलता समाधि में ।
 एकाग्रचित्त, दसों इंद्रियां सुप्त—
 मन में शून्यता, हे अमृत सुत !
 (३२४)

Thus the force of concentration
 Knowledge gives of intuition,
 Of Truth gives true direct vision.

Long for this, O Nectar's Son !

325

Long for this; move active on,
 Persevering, cautious on;
 Restless, fretful can't go on;
 Patient move on, Nectar's Son !

326

Patient move thou on thy way,
 'Can't I', 'Fail I' never say.
 Rome was not built in a day.
 Stick to thy work, Nectar's Son !

327

Stick to work and push ahead,
 World is not a roses' bed,
 Life-blood must for *yog* thou shed,
 Hero be thou, Nectar's Son !

328

Hero be thou, battle gain;
Yog alone thy business main;
 Love for work removes all pain,
 Lightens burden, Nectar's Son !

329

ऐसी एकाग्रता की द्युति,
देती स्वयं को सत्यानुभूति ।
समाधि लगे और प्रत्यक्ष दीखें—
यही लालसा, हे अमृत सुत !
(३२५)

यही लालसा आगे बढ़ना,
डटकर चौकस होकर चढ़ना ।
होते असफल-व्यग्र, चिड़चिड़े—
हो धीर बढ़ो, हे अमृत सुत !
(३२६)

दूर कूल, ना होगी पार,
मन में क्यों प्रतिकूल विचार ।
बूँद-बूँद से घट है भरता—
रहो कर्मरत, हे अमृत सुत !
(३२७)

जग यों ही गुलाब सा लागे,
तू कर्मलीन हो, बढ़ आगे ।
सारी शक्ति लगा, योग में—
नायक बन जा, हे अमृत सुत !
(३२८)

नायक बन जा, युद्ध जयी,
कार्यानुरक्ति दे शक्ति नयी ।
योग कर्म है, योग धर्म है—
बोझ हो हल्का, हे अमृत सुत !
(३२९)

Love thy *yog* and love thy Goal;
 Play the man in life thy whole;
 This time must thou save thy soul,
 Die the last death, Nectar's Son !

330

Let not this death new birth bring;
 Let not death for thee have sting;
Âtman fearless ever sing;
 Up and doing, Nectar's Son !

331

Up and doing, up and doing;
 Cling to practice, ever cling;
 Ring thee up, oh, up thee ring;
 Practise *yog*, O Nectar's Son !

332

Good for practice do select,
 Bad for practice do reject,
 Compromises don't accept,
 Strong in mind be, Nectar's Son !

333

Strong in mind, unmind thy mind;
 Don't, like craven, lag behind;
 Many like thee height have climbed;
 Wake and rise, O Nectar's Son !

334

योग और लक्ष्य से लगाव,
जीवन भर मानव सा वर्ताव ।
मानव जीवन, कर आत्म मुक्त—
अंतिम मृत्यु मर, हे अमृत सुत
(३३०)

ना पुनर्जन्म हो, ये अंतिम मरण,
डंक न बने अब अंतिम क्षण ।
निर्भय आत्मा योगमयी कर—
सचेष्ट, सक्रिय, हे अमृत सुत !
(३३१)

सक्रिय-सचेष्ट, सक्रिय-सचेष्ट
लग कर सदा अभ्यास यथेष्ट ।
तैयार करो, उद्धार करो—
योगाभ्यास, हे अमृत सुत !
(३३२)

सत गुण अभ्यास के लिए चुन,
छोड़ सारे रजस-तमस गुण ।
ना कर सम्भ्रौता स्वीकार—
मन सशक्त हो, हे अमृत सुत !
(३३३)

मानस को खोलो, कर खाली,
तुम जैसों ने मंजिल पा ली,
तुम भी पा लो, ना अब टालो—
जागो-उठो, हे अमृत सुत !
(३३४)

Rise, and with thy might and main
 Best *samâdhis* do obtain;
 Therefrom perfect Truth thou gain;
 Test thy knowledge, Nectar's Son !
 335

Vedas holy, teacher seer—
 How they state the Truth do hear;
 When those statements same appear
 As thy knowledge, Nectar's Son !—
 336

Then and then alone be sure
 Thou hast got the Truth the pure;
 Be thou then established sure
 In the Truth, O Nectar's Son !
 337

Truth is absolute, Divine,
 Boundless *Brahman* blameless, fine.
 Birthless, deathless, changeless Shine,
 Chit eternal, Nectar's Son !
 338

Self-effulgent, splendent Shine,
 Formless, nameless, past all sign,
Dik-less, *kâl*-less, *gun*-less, fine,
 Bliss unending, Nectar's Son !
 339

ध्यानस्थ पूर्ण समाधि लगाओ,
उससे सनातन सत्य को पाओ ।
क्या पाया या क्या खोया, कर—
ज्ञान परीक्षा, हे अमृत सुत !
(३३५)

गुरु महान वेद भी पावन,
दोनों की व्याख्या कर श्रवण ।
दोनों की व्याख्या, अपना ज्ञान—
जब एक लगे, हे अमृत सुत !
(३३६)

तब ही केवल होना आश्वस्त,
तुम्हें सत्य मिला, माया ध्वस्त ।
तब सत्य में हो स्थापित—
सत्य बन जाना, हे अमृत सुत !
(३३७)

सत्य है दिव्य और सनातन,
असीम-निष्कलंक ब्रह्म ही पावन ।
जन्म मृत्यु से परे, पीड़ा हरे—
शाश्वत चित है, हे अमृत सुत !
(३३८)

आत्म सत्व भी प्रकाश तत्व,
रूप-नाम अतीत, है देवत्व ।
है दिक्-काल-गुण अतीत ये—
अनंत-आनंद, हे अमृत सुत !
(३३९)

पुरातनतम पर हो नित नूतन,
 तुम हो अखंड भी ब्रह्म अकारण ।
 सत्य एक है, वह तुम्हीं हो—
 योगी जाने, हे अमृत सत !
 (३४०)

अमृत सुत ! तुम्हीं अमृत सत्य हो,
 तुम्हीं एक परम अस्तित्व हो ।
 मायातीत भी केवल तुम ही—
 तुम्हीं मात्र हो, हे अमृत सत !
 (३४१)

ना ही जड़ तुम, ना ही चेतन,
 ना निर्जीवन, ना ही जीवन ।
 ना अच्छे हो, ना ही बुरे—
 परम पुनीत, हे अमृत सत !
 (३४२)

केवल तुम ही परम पुनीत,
 और तो बस होते प्रतीत ।
 तुम शाश्वत, शुद्धतम चित—
 परम आत्मा, हे अमृत सत !
 (३४३)

तुम्हीं श्रोत, सबके आश्रय,
 तुमसे प्रकटे, स्थान-समय ।
 चौदह भुवन समाहित तुभ्रमें—
 सभी तुम्हीं हो, हे अमृत सत !
 (३४४)

All are Thou and Thou art all,
All in Thee and Thou in all,
None but Thee in worlds the all,
Thee they move in, Nectar true !

345

Worlds unnumbered in Thee moving,
Many rising, many setting,
Many playing, past all counting,
Thou all these, O Nectar true !

346

All-pervading Cause of all,
Verily, Thou art the all;
In Thee happen movements all,
Still Thou changeless, Nectar true !

347

Still Thou perfect, pure and blameless,
As before, still Thou art boundless,
As before, still Thou art changeless,
Vikârless Thou, Nectar true !

348

Vikârless, became Thou all—
Being and non-being all,
Moving and non-moving all,
Good and bad too, Nectar true !

349

तुम में सब हैं, सबमें तुम,
 तुम में रब है, रब में तुम ।
 सब लोकों में तुम ही व्याप्त—
 लोक तुम्हीं में, हे अमृत सत !
 (३४५)

विश्व अनगिनत तुम में चलते हैं,
 उगते अनेक, अनेक ढलते हैं ।
 हैं कई खेलते, गिनते विगत—
 ये सब तुम ही, हे अमृत सत !
 (३४६)

सबका कारण, सबमें व्यापी,
 तेरी सीमा, तुमने नापी ।
 होती तुम में गतिविधि सारी—
 फिर भी निर्गति, हे अमृत सत !
 (३४७)

अब भी पूर्ण पावन अरिहंत,
 पूर्ववत् तुम अनादि-अनंत ।
 ना परिवर्तन-बस सनातन—
 निर्विकार प्रभु, हे अमृत सत !
 (३४८)

सारे जड़ और चेतन भी तुम,
 निर्जीव सभी, जीवन भी तुम ।
 निर्विकार, निराकार, अरूप—
 ये भी, वो भी, सब अमृत सत !
 (३४९)

Goodness, badness Thou art all,
 Abstract, concrete Thou art all,
Jad and *chetan* Thou art all,
 Time and space too, Nectar true !
 350

Time and space Thou, *bhubans* all,
 Day and night and seasons all,
Tamas, *rajas*, *sattwa* all,
 What not Thou, O Nectar true !
 351

Mâyâ, *Jiv* and *Siv* Thou all,
 Energy, force, power all,
Baddhas, *muktas*, *sâdhaks* all
 All Thou art, O Nectar true !
 352

Ichchhâ, *kriyâ*, *jnân* Thou art;
 Thou art whole and Thou art part;
 Work and rest Thou; science, art;
 Thou art all, O Nectar true !
 353

In the sun Thou brightly shining,
 In the river swiftly flowing,
 In the flower sweetly smelling,
 Everywhere Thou, Nectar true !
 354

अमूर्त तुम्हीं हो, मूर्त तुम्हीं,
 अजर-अजन्मा स्वस्फुर्त तुम्हीं ।
 तुम्हीं अच्छाई और बुराई—
 समय-स्थान भी, हे अमृत सत !
 (३५०)

प्रभु तुम ही हो सारे भुवन,
 तमस, रजस, सत्व साध्य साधन ।
 ऋतुएँ तुम हो, दिवा-रात्रि भी—
 सब कुछ तुम हो, हे अमृत सत !
 (३५१)

तुम रक्षित और रक्षक सारे,
 हो बद्ध, मुक्त, साधक सारे ।
 माया, जीव, शिव, ऊर्जा, शक्ति—
 बल, संबल तुम, हे अमृत सत !
 (३५२)

हो तुम इच्छा-ज्ञान-क्रिया,
 तुम्हीं हरिहर-तुम्हीं हरिप्रिया ।
 श्रम-विश्रांति, वेद-विज्ञान भी—
 सब तव रूप, हे अमृत सत !
 (३५३)

तुम जलधारा की कल-कल हो,
 पूनम की चांदनी शीतल हो ।
 रंग-गंध फूलों में तुम हो—
 सूरज की उष्मा, अमृत सत !
 (३५४)

Roar as lion, cat Thou mew,
Hare Thou run, as dog pursue,
Thou art old and Thou art new,
Thou art all, O Nectar true !

355

Thou art good and Thou art bad,
Thou art glad and Thou art sad,
Thou art son and Thou art dad,
Thou art all , O Nectar true !

356

Thou art seeing, seen and seer;
Thou art doing, done and doer;
Thou art knowing, known and knower;
All Thou art, O Nectar true !

357

Thou art living, Thou the dead;
Thou the feeder, Thou the fed;
Thou the leader, Thou the led;
Maker, made Thou, Nectar true !

358

In the serpent bitest Thou,
In the bitten suffer Thou,
In the doctor treatest Thou,
Thou in medicine, Nectar true !

359

तुम्हीं प्राचीन, तुम्हीं नवीन,
जंगल में सिंह, जल में मीन ।
हुंकार तुम्हीं, जल क्रीड़ा भी—
सब प्रभु रूप, हे अमृत सत !
(३५५)

तुम्हीं निंदा, तुम शाबासी,
तुम्हीं प्रसन्नता, तुम्हीं उदासी ।
पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं पुत्र—
तुम्हीं सब कुछ हो, हे अमृत सत !
(३५६)

दर्शन, दृष्टा, तुम्हीं दर्शक
कृत, कर्ता, तुम्हीं कारक ।
ज्ञान, ज्ञाता, ज्ञेय तुम्हीं—
त्वमेव सर्वम, हे अमृत सत !
(३५७)

नियति तुम्हीं, हे भाग्य विधाता,
तुम्हीं याचक, दान, दाता ।
जीवित, मृत, पालक, पालित—
स्रष्टा, तुम्हीं सृष्टि, अमृत सत !
(३५८)

बीमारी और बीमार में तुम,
चिकित्सक, औषधि, उपचार में तुम ।
पीड़ादाता में, पीड़ा में—
पीड़ाहर में भी, अमृत सत !
(३५९)

All- devouring death Thou art;
 Nursing infants mother art;
 Covering all darkness art;
 What not Thou, O Nectar true !
 360

Love and hate Thou, hunger, thirst,
 Truth and mercy, malice, lust;
 Future, present, Thou art past;
 Hill and dust Thou, Nectar true !
 361

Body, mind and *prân* art Thou;
 Flesh and blood and bone art Thou;
 Word and thought and doing Thou;
 All art Thou, O Nectar true !
 362

Great Thy world-form, grandest, fine !
 Formless dost beyond it shine;
 Melt in Formless world-forms thine,
 Formless lastest, Nectar true !
 363

Formless, changeless, boundless ever,
 Spotless, partless, elseless ever,
Gun-less, *dik*-less, *kâl*-less ever,
 Chit and Bliss Thou, Nectar true !
 364

सर्जक-पालक, काल-विकराल,
 हो तुम ही तो निर्बल की ढाल ।
 दूध पिलाती मैया तुम हो—
 क्या नहीं तुम, हे अमृत सत !
 (३६०)

हो प्रेम-घृणा औ भूख-प्यास,
 हो दया-राग-द्वेष-संत्रास ।
 भूत-भविष्य-वर्तमान तुम्हीं,
 राई-पर्वत, हे अमृत सत !
 (३६१)

मन-मष्तिष्क, श्वास-प्रश्वास,
 देह-रुधिर, अस्थि और मास ।
 शब्द-कर्म-विचार भी तुम हो—
 सब कुछ तुम ही, हे अमृत सत !
 (३६२)

महान विश्वरूप अति अदभुत,
 दीप्त, निराकार हैं अच्युत ।
 छिन में सगुण, छिन में निर्गुण—
 निर्गुण रहता, हे अमृत सत !
 (३६३)

निर्दोष और निर्विकार सदा,
 असीम, अखंड, निराकार सदा ।
 गुण-दिक-काल परे तुम केवल—
 चित आनंद भी, हे अमृत सत !
 (३६४)

All receive their force from Thee,
 All receive their light from Thee,
 All reveal Thou, none doth Thee,
 Thou beyond all, Nectar true !

365

Mind is minded though by Thee,
 Senses work all though by Thee,
 None of them, ay, graspeth Thee,
 Thou past all, O Nectar true !

366

E'en with body bod'less ever,
 E'en in death Thou deathless ever,
 E'en in changes, changeless ever,
 Pure thou ever, Nectar true !

367

Life and death, oh, seek Thou not,
 Action, inaction seek Thou not,
 Goodness, badness seek Thou not,
 Calm and changeless, Nectar true !

368

Pâpam, Punyam touch Thee not;
 Pain and pleasure touch Thee not;
 Worldly waves all touch Thee not;
 Pure and changeless, Nectar true !

369

सब निज प्रकाश तुमसे पाते,
 सब शक्ति विश्वास तुमसे पाते ।
 तुम्हें ना करे, तुम सर्व परे—
 प्रकटे तुमसे, हे अमृत सत !
 (३६५)

तुम्हसे ही इंद्रियाँ गतिशील,
 मन भी होता तुम्हसे मतिशील ।
 ना तुम्हको सब पकड़ सकें—
 सबसे आगे, हे अमृत सत !
 (३६६)

सदेह हो फिर भी सदा विदेह,
 संदेह दीखता पर निस्संदेह ।
 मृत्यु में भी, मृत्यु अतीत—
 विशुद्ध सदा हो, हे अमृत सत !
 (३६७)

न मांगो अब तुम जनम-मरण,
 ना कर्म-अकर्म का करो चयन ।
 ना अच्छे-बुरे का वेश धरण—
 शांत-शाश्वत, हे अमृत सत !
 (३६८)

न छूता पूण्य, न छूता पाप,
 न छूता मोद, न छूता ताप ।
 सांसारिक गतिविधि ना छूती—
 तुम निर्विकार, हे अमृत सत !
 (३६९)

Pure and changeless shining ever;
 All alone Thou shining ever,
Mâyâ, two-ness ceasing ever,
 Shine Thou Real, Nectar true !
 370

Shine Thou Self eternal, true,
Chit, the Bliss, the Perfect too,
 Spotless, partless, elseless you !
 Shine Thou *Brahman*, Nectar true !
 371

Shine Thou *Brahman*, Nectar pure !
Svaprakâsham, *Amrit* sure,
Param'pad shine ever-more,
 Thou art *Aum*, the *Amritam* !
 372

Suddham, *Buddham*, *Muktirûp*,
Siv-âdvaitam, *Sântirûp*,
Triptirûpam, *Turyarûp*,
Brahm param, *Parâmritam* !
 373

Nityam, *kev'lam*, *Mâyâtît*,
Satyam, *Pûrnam*, *Param'siv*,
Brahm Parâtpar, *Turyâtît*,
Ekam Paramâmritam !
 374

नित निर्विकार, शुद्ध-देदीप्त,
 तुम एक रूप हो, तुम अलिप्त ।
 माया-दुविधा मिट जाती है—
 सत्य चमकता, हे अमृत सत !
 (३७०)

देदीप्यमान हो आत्म सनातन,
 चिदानंद परिपूर्ण सुदर्शन ।
 श्वासातीत और खंडातीत—
 अन्यातीत ब्रह्म, अमृत सत !
 (३७१)

ब्रह्म जागरण कर, शुद्धामृत,
 स्व प्रकाश ही, अवश्यामृत ।
 सदैव परमपद सा ज्योति पुंज—
 ओंकारनाद हो ब्रह्मामृत ।
 (३७२)

शुद्ध, बुद्ध और मुक्ति रूप,
 शिव, अद्वैत और शांति रूप,
 तृप्ति रूप और तुरीय रूप—
 ब्रह्म परम हो, हे परामृत !
 (३७३)

नित्य केवल और मायातीत,
 सत्य, पूर्ण और परम शिव ।
 ब्रह्म परातपर, तुरीयातीत हो—
 है एक ही परमामृत ।
 (३७४)

YOGA AND PERFECTION

PART II

Mânava ! Child of Eternal Light !
 Child of Bliss ! Thou Child of Might !
 Formless, boundless, blameless, bright,
 Self immortal, *Chit*-ful Light !

1

Self-effulgent, shining Light !
 How forget thou Self outright ?
Âtman thou, Supreme Delight,
 Bodies not thou, know it right.

2

Whence has come this cheerless sight ?
 Whence has come this helpless plight ?
 Whence has come this causeless fright ?
 Whence is ignorance's night ?

3

Does it suit thee sob and sigh ?
 Does it suit thee weep and cry ?
 Does it suit thee restless lie ?
 Does it suit thee die and die ?

4

साधना और सिद्धि

खण्ड - २

मानव ! नित्य प्रकाश ही जाता,
सर्वशक्ति, आनंद से नाता ।
निराकार, असीम, निष्कलंक—
धाता तेरा, तुम ही धाता ।

(१)

देह नहीं हो, ये जान लो,
आत्मा की सत्ता पहचान लो ।
स्वयं प्रकाशित ज्योति पुंज हो—
ईश्वर का ही अंश मान लो ।

(२)

है कब होती अज्ञान की जय ?
है कब होता अकारण भय ?
निरीह अवस्था होती कब ?
बनता हिय है दुविधालय ?

(३)

उचित नहीं सुबकना रोना,
आँसुओं से जीवन भिगोना ।
मरना, हर पल मरना अनुचित—
अशांत, दुःखी विचलित होना ।

(४)

Self remember, Self regain,
 Fearless, painless Self regain;
 Self Supreme be thou again;—
 This alone thy business main.

5

Birthless, deathless, changeless you,
Chit eternal, partless too,
 Bliss unending, formless you,
Âtman absolute and true.

6

Wondrous is thy *Mâyâ* ! Ye
 Plunging in oblivion-sea
 Boundless *Âtman* do not see !
 Ignorance has covered thee !

7

By the force of *Mâyâ* now
 Think thyself so little thou !
 Tied to bodies anyhow
 'I' and 'my' and 'all' allow !

8

Karttâ, *bhoktâ* thinkest thee,
 Good and bad both do thou see,
 Love and hate both do get ye,
 All desires peep in thee !

9

आत्म प्राप्ति और आत्म स्मरण
 अनास्था, पीड़ा, भय, विस्मरण ।
 पुनः परम आत्मा बनना अब—
 है लक्ष्य एक बस ईश्वर शरण ।
 (५)

हो चित सनातन, खंडातीत,
 हो निर्विकार, मरणातीत ।
 हो सत्य शाश्वत आत्मा परम—
 अनंत-आनंद हो रूपातीत ।
 (६)

माया तेरी खेल खेलती,
 अज्ञान सागर में ढकेलती ।
 अज्ञान वश आत्मा दीखे ना—
 देह ही तो पीड़ा भेलती ।
 (७)

माया का जोर है जितना,
 छोटा समझे खुद को कितना ।
 मानव तो बस देह बँधा है—
 'मैं', 'मेरा', 'सब', बस इतना ।
 (८)

भला-बुरा और प्रेम घृणा,
 जगती सारी सोई तृष्णा ।
 कर्ता-भोक्ता स्व में देखे—
 अज्ञान यही कहते कृष्णा !
 (९)

Loaded with desires' chain—
 Creature in the *Mâyâ*'s pen,
 Creature-comforts getting then—
 Move in *karma*'s darkest den !

10

Bound by *Mâyâ*'s charming spell
 Thou thyself to *Moha* sell;
 Led by *karma*'s chain so fell
 Whirl about in heaven, hell !

11

Thus the *Mâyâ* ties thee tight
 Causing birth and death and fright,
 Bringing darkest sorrow's night,
 Giving thee this gloomy sight !

12

Mâyâ makes thee roll in mire !
 Burn thou her with knowledge-fire.
 Knowledge 'lone is sure destroyer
 Of this conjuror so dire.

13

Knowledge yielding *Moksha*'s Bliss
 Get thou in *samâdhi*'s peace.
 For this thou must make mind cease;
 Mind unmind thou, make mind cease.

14

इच्छा की जंजीर में जकड़े,
माया की अंगुली को पकड़े,
कर्मों के लम्बे चक्कर में—
जाल बनाता जैसे मकड़े ।

(१०)

फँसा माया के आकर्षण में,
मोह-माया केवल जीवन में ।
ना चौरासी का चक्कर टूटे—
बस आना-जाना, क्षण-क्षण में ।

(११)

ऐसे माया बाँधती कसकर,
जन्म-मरण के लगते चक्कर ।
भय, घृणा, अवसाद, मोह, दुःख—
दे काम, क्रोध, मद और मत्सर ।

(१२)

माया तो है गहरा दलदल,
उसे जलाता बस ज्ञानानल ।
जादुगर का भयावह जादू—
है ज्ञान-भक्ति ही रक्षक केवल ।

(१३)

योग दिखाता आदि-अनादि,
लक्ष्य तुम्हारा शांत समाधि ।
मन भागता रहता हर क्षण—
मन शांत कर, मिट जाए व्याधि ।

(१४)

This to do, now, must have you
 Concentration perfect, true,
 Which you get when you pursue
 Samest *Yog* that doth suit you.

15

To be fit for *Yog* so pure
Indriyas control thou sure,
 Have *Sadâchâr* blameless, pure,
 Oust immoral all impure.

16

How to do it, what to do
 Sages, *Sâstras* will tell you.
 Them approach with *Sraddhâ* true,
 I-lessness and patience too.

17

I-less first of all thou be,
 Heaven's gate then opes to thee.
 Hand Divine in works all see;—
 Doer be not, I-less be.

18

I-less be, shun 'me' and 'mine'.
 Ceaseless rain of Grace Divine
 Does not enter system thine,
 'T' remaining ad'mantine !

19

मन शांति चाहे एकाग्रता,
 अपने ध्येय में पूर्ण तन्मयता ।
 गुरु आज्ञा की राह पकड़ लो—
 समझ ठीक बस योग रास्ता ।
 (१५)

सदाचार का कर अनुसरण,
 छोड़ अनैतिक, अपावन लक्षण ।
 योग-योग्य होना हो तो कर—
 सबसे पहले इंद्रिय नियंत्रण ।
 (१६)

क्या-क्या करना, कैसे करना,
 शास्त्रोक्त विधि हो वैसे करना ।
 गुरु-संतों की आज्ञा जैसी—
 'मैं' का मरना, धीरज धरना ।
 (१७)

हो सबसे पहले 'मैं' विहीन,
 खुद को खोकर, प्रभु में लीन ।
 खुलते तब ईश्वर के द्वार—
 जब तुम होते कातर-दीन ।
 (१८)

जब तक रहता 'मैं' का घेरा,
 ना होता है कृपा सवेरा ।
 योग उचित पथ बन सकती है—
 जब साथ न हों 'मैं' और 'मेरा' ।
 (१९)

'I remaining, know this too,
 Seer's, *sâstra*'s advice true
 Can't be grasp'd, obeyed by you,
 Can't thou hope for progress true !

20

Truth of truths all this, mind you,—
 Lord alone is doer true;
 'Gainst His will can never do
 E'en the smallest action you.

21

'Lord does all, I nothing do.' —
 This is wisdom sound and true.
 'I have done that, this I do.'—
 Ignorance it, know this too.

22

Be resign'd, and do deny
 Petty 'I' and 'me' and 'my'.—
 This the way to be, know ay,
 Biggest, purest *Soham-I*.

23

If thou want the progress sure,
 Drive thou must from system your
 I-ness, self-ness, whims impure,
 Self-conceit, thy en'my sure.

24

जब तक तुझमें 'मैं' है शेष,
 ये 'मैं' नहीं है, है यह क्लेश ।
 पहुँच-समझ से दूर रहेंगे—
 गुरु-शास्त्रों के उपदेश ।

(२०)

परम सत्य ये शाश्वत उज्ज्वल,
 प्रभु ही कर्ता, एकल-केवल ।
 प्रभु इच्छा विपरीत प्रयास तू—
 कर ले पर हो सदा विफल ।

(२१)

'मैं' कुछ नहीं, सब प्रभु की सत्ता—
 है अकेली सच्ची बुद्धिमत्ता ।
 "मैं करता हूँ" - यह तो अज्ञान,
 बिन प्रभु के ना हिलता पत्ता ।

(२२)

जग कर्ता-धर्ता, एक परम,
 छोड़ 'मैं', 'मेरा' और 'मम' ।
 यही राह है, यही ज्ञान है,
 सोहम, सोहम, सोहम, सोहम ।

(२३)

हैं सबसे बड़े शत्रु-अहंकार,
 ममत्व, स्वार्थ, अपावन विचार ।
 इनको जीवन शैली से तुम—
 करके दूर, लो जन्म सुधार ।

(२४)

Dance on snake of vain conceit,
Dance and dance and this defeat.
Pedantry is self-deceit;
Thou art not best, do mind it.

25

Seek not honour, praise for thee,
Honour all, do honour ye;
Modest, meek, polite be ye,
Sweet in words and conduct be.

26

Sweet in words and conduct be;
Have good manners chastened ye;
Have thou love for all thou see,
Love all ardent, selfless ye.

27

Love thou all both great and small;
Lord hath made and loveth all !
Incommodethou none at all,
Harm thou none whate'er befall.

28

Harm thou none, but serve thou all,
Serve thou Lord the dear in all.
Happy, if thee death befall
At the selfless service' call !

29

विद्या अभिमान भी है अज्ञान,
 आग-नाग है व्यर्थ अभिमान ।
 इनका फल तो सदा असफलता—
 ना सर्वश्रेष्ठ तू, ये भी जान ।
 (२५)

क्यों खोजते बड़ाई, आदर ?
 आदर चाहिए तो आदर कर ।
 बन दीन, विनीत, नम्र और—
 बोली व्यवहार में मिठास भर ।
 (२६)

मीठी बोली, मीठा व्यवहार,
 सात्विक, अच्छा, शिष्ट आचार ।
 जिनको देखो, सबसे प्रेम—
 सबसे उत्कट-निःस्वार्थ प्यार ।
 (२७)

प्रभु की रचना ये संसार,
 छोटे बड़े सबसे कर प्यार ।
 ना किसी को कष्ट-पीर दे—
 न किसी से कृत्तिल व्यवहार ।
 (२८)

सबकी सेवा, ना कर नुक्सान,
 प्रभु सेवा, सबमें प्रभु जान ।
 खुश, काल आ जाए अगर जब—
 निःस्वार्थ सेवा का आह्वान ।
 (२९)

Serve thou selfless, be thou pure;
 Pure will see God certain, sure.
 Lord not seen in heart impure;
 Thou let nothing thee allure.

30

Pure in thought and deed thou be;
 Try to feel for ever ye
 In the living presence be
 Of the Lord so holily.

31

Holiest of Holy He;
 Think of Him, and holy be.
 Don't thou think or hear or see,
 Touch or do what poisons thee.

32

Worldly-minded, God-less men,
 Men immoral, selfish men,
 Miser-men, and many men—
 Shun these all, shun all bad men.

33

Badness shun, and pure be ye,
 Stainless, blameless, guiltless be;
 Lord is blameless, purest He;—
 Pure thou be, and Him thou see.

34

शुद्ध हो, कर सेवा निःस्वार्थ ,
 परम दीखते, कर परमार्थ ।
 अशुद्ध हृदय में प्रभु ना बसते—
 ना करे आकर्षित कोई पदार्थ ।
 (३०)

शुद्ध हों तेरे कर्म विचार,
 बस लक्ष्य एक हो परोपकार ।
 सब में पाओ प्रभु को साक्षात्—
 इतना पावन प्रभु का विस्तार ।
 (३१)

पावनतम से भी वह पावन,
 कर देता पावन प्रभु चिंतन ।
 तुझको ही विषाक्त करें जो—
 ना छू, ना सुन, ना कर दर्शन ।
 (३२)

संसारी तो सारे सांसारिक,
 हैं स्वार्थ लिप्त सारे अनैतिक ।
 धन कृपण, मन कृपण औ बहुत—
 बचना उनसे जो हैं नास्तिक ।
 (३३)

बुराई छोड़ हो जा पावन,
 निरपराध, निष्कलंकित जीवन ।
 हैं प्रभु पावन, पावनतम प्रभु—
 होकर पावन, कर ले दर्शन ।
 (३४)

Who their passions don't restrain,
 Love of world in whom doth reign,
 Who are bent on worldly gain—
 They will never peace obtain.

35

Covetousness, pride—these two,
 Lust and anger, gluttony too,
 Sloth and envy—sins shun you,
 Deadly seven these shun you.

36

Fortitude and faith—these two,
 Justice, temp'rance, prudence too,
 Charity and hope gain you;—
 Principal se'en virtues true.

37

Moral be and mind control,
Indriyas control thou whole;
 This the way to save thy soul.
 Men immoral reach not Goal.

38

Purest innocence ye get,
 Be thou truthful, falsehood hate;
 Liars move in *Mâyâ's* net;
 Goal the Truth by truth thou get.

39

जग आसक्ति में उलझा इंसान,
विषय भोग को ही लक्ष्य मान ।
ऐसे अंधों को दुनिया में—
शांति मिले न मिले भगवान ।

(३५)

काम, क्रोध, मोह, अहंकार,
ईर्ष्या, आलस्य, अति आहार ।
घातक पाप सात ये छोड़ो—
जीवन को करते निस्सार !

(३६)

संयम, दान, विश्वास, विवेक,
धर्म, धैर्य, न्याय हैं नेक ।
प्रमुख सद्गुण सात अपना लो—
और हो जाओ, लक्ष्य से एक ।

(३७)

प्रभु प्राप्ति ही तेरा अभिप्राय,
नैतिकता, सद्विवेक उपाय ।
इंद्रिय निग्रह और गुरु कृपा—
न और उपाय, इनके सिवाय ।

(३८)

परम सत्य ही तेरा लक्ष्य,
मिथ्या पर माया आधिपत्य ।
सदा सत्य पर रहना अडिग तुम—
सत्य प्राप्ति, साधन भी सत्य ।

(३९)

Goal the Truth do thou attain
Doing duties might and main;
Never lazy do remain;—
Devil's workshop idle brain.

40

Idlers harm their selves, 'tis true,
Incommode they ever do
Company and others too.
Prompt and busy must be you.

41

Be thou busy as a bee.
Shun procrastination ye,
Thief of time this, do thou see.
Work in time , and active be.

42

Active be thou, patient be,
Have endurance firmest ye,
Persevering ever be,
Never lose thy patience ye.

43

Petulant, impatient men
Ever grumble they in vain;
Never do success they gain;
Never do they peace obtain !

44

जीवन से आलस्य को त्याग,
होता शैतान, खाली दिमाग ।
सत्य तो पावन पावक है—
सोने सा तप जलाकर राग ।

(४०)

न होना तू आलस्य से जड़,
आलसी जलाते अपना घर ।
साथी को, औरों को पीड़ा—
तुम रहो सदा व्यस्त और तत्पर ।

(४१)

मधुमक्खी सा रहना व्यस्त,
टाल-मटोल आदत अस्वस्थ ।
काम समय पर, सक्रिय होकर—
इक आलस करे लक्ष्य को ध्वस्त ।

(४२)

तन क्रियाशील और वीर-धीर,
अति सहनशील और गंभीर ।
दृढ़-अटल सदा, हर अवसर पर—
कभी न टूटे, धैर्य प्राचीर ।

(४३)

न कभी सफलता पाते हैं,
अशांति ही पास बुलाते हैं ।
चिड़चिड़े, अधीर मनुष्य सारे—
व्यर्थ में ही बुदबुदाते हैं ।

(४४)

If a small pain can't endure,
If a sound upset thee sure,
Sad is thy life, peaceless sure !
Be thou patient, calm and pure.

45

If the will of others do
Irritate thee, then, know you,
World is not a place for you;
This is not thy kingdom, true.

46

Thou to mix with many a mind,
To do works of many a kind;
How can peaceful calm thou find
If all things annoy thy mind ?

47

Being ever honest, just,
Harmonize with all thou must;
Or, be down on luck thou fast,
And annoy all to the last.

48

In all doings, in all ye
Hand Divine, His presence see;
Welcome all as good for thee.
Ever patient, calm thou be.

49

सर्दी-गर्मी से व्यथित तन,
जो पीड़ा ना कर सके सहन ।
खट-पट से विचलित हो जाएं—
ऐसों का तो अशांत जीवन ।
(४५)

बेचैन करे औरों की इच्छा,
जगो तनाव जब मांगो भिक्षा ।
तुम नहीं इस दुनिया के योग्य,
बनो तितिक्षु, जगाओ तितिक्षा ।
(४६)

कितनों से आदान-प्रदान,
कितनों से ही जान-पहचान ।
कैसे हो सकते सुखी शांत—
मिलते ही मन हो परेशान ।
(४७)

सबसे हों मधुर सम्बन्ध,
मीठी बोली, फैले सुगंध ।
तालमेल, उचित व्यवहार—
विच्छेद नहीं, संधि और संघ ।
(४८)

सब कामों में ईश्वर का हाथ,
सब में देखो ईश्वर का साथ ।
शुभ समझ, कर स्वागत सबका—
सेवा में लग जा दिन रात ।
(४९)

If thou bear not little pain,
How can calmness ever gain ?
Greater pain and death's fell pain
Thee await;—prepare amain.

50

On the anvil of all pain
Being hammered, do thou gain
Strength and power, reason sane.
Welcome pain, and patience gain.

51

Work and pain are surest test
Of thy strength; they show thee best.
They give chance of trying best
To be faultless, pure and chaste.

52

So then, fear not trouble, pain.
Fear not failure, 'tis much gain;
Pillar of success this main.
Fight on till thou Goal attain.

53

If impatient give up fight,
Lengthen thou the sorrow's night.
Life is ceaseless, restless fight;
Patient march on, get true Light.

54

पीड़ा थोड़ी भी ना सहे,
तब शांति बयार कैसे बहे ?
मृत्यु पीड़ा भी सन्निकट हो—
योगी सहज, तैयार रहे ।

(५०)

ना दुःखी, खा पीड़ा के भटके,
कर मुकाबला डटके, डटके ।
शक्ति, धैर्य, विवेक देते हैं—
स्वागत हँस कर संकट के ।

(५१)

होती परीक्षा, जब हो काम,
या फिर जब मन में कोहराम ।
पीड़ा-श्रम तो शक्ति दिखाते—
सहो, करो, पा-बिना विराम ।

(५२)

पीड़ा, समस्या से क्यों डरना ?
असफलता सफलता का भरना ।
इनकी सीढ़ी चढ़कर बढ़ना—
लक्ष्य प्राप्ति तक कोशिश करना ।

(५३)

अधीर हो गर छोड़ी लड़ाई,
तुमने अपनी पीड़ा बढ़ायी ।
है युद्ध निरंतर, बिन विश्राम
सदा धीर ने विजय पायी ।

(५४)

Life is full of struggles sure;
They alone survive, be sure,
Who can calmly all endure,
Who are patient, calm and pure.

55

Patient, active must be thou;
Hold off ease-love here and now.
Timely, nicely do works thou;
Careless, bad work don't allow.

56

Every time in every action
Try to pay the full attention;
Do thy duties to perfection;
Be sincere in thought and action.

57

Ever at the duties' call
Do thy works thou selfless all;
All thy works both great and small
For Lord's pleasure do thou all.

58

Offering thy actions all
Do thou worship Lord of all;
Give to Him with love thy all;
Be His servant once for all.

59

जो पीड़ा को कर लेते सहन,
जिनमें हो धैर्य, शांति, लगन ।
वही जीतते जंग जीवन का—
संघर्ष भरा है हर जीवन ।

(५५)

तुम बनना धीर सक्रिय राही,
काम में न हो लापरवाही ।
सही ढंग दक्षता से समय पर—
मन को रख प्रसन्न, उत्साही ।

(५६)

हर काम करो, दे पूरा ध्यान,
हर बार कर शत प्रतिशत प्रदान ।
हर काम पूर्णता के साथ—
कर्म, विचार में निष्ठावान ।

(५७)

आत्मा को परम बनाने को,
बन निःस्वार्थ, प्रभु पाने को ।
छोटे-बड़े सब काम करो,
काम सभी प्रभु रिझाने को ।

(५८)

कर अपने कर्मों को अर्पण,
कर तू, सबके प्रभु का पूजन ।
सदा-सदा का चाकर बन जा—
कर दे अपना सर्वस्व समर्पण ।

(५९)

Be His servant ever thou,
 'Mine' and 'my' shun here and now.
 For His *samsâr* do work thou;
 Fit thyself for work thou now.

60

Full of struggles human life;
 Only fittest do survive.
 In the rosy morn of life
 Make thy system fit for strife.

61

Win thou from thy school and college
 All the diff'rent kinds of knowledge;
 Diligent thou careful' manage
 Multiplying all this knowledge.

62

Logic, philosophic writ
 By the authors special' fit
 Read thou careful, read discreet,
 Follow line of reas'ning neat.

63

History books do thou read,
 Books on good men's noble deed,
 Books on arts and science read.
 Reading good books do thou need.

64

बन सदा के लिए उसका चाकर,
 'मैं', 'मेरा' छोड़, अभी यहीं पर ।
 उसके संसार के लिए काम कर,
 अब कामों में लग हो तत्पर ।

(६०)

मानव जीवन उत्कर्ष, अपकर्ष,
 योग्यतम का ही होता उत्कर्ष ।
 जीवन के प्रभात में योग कर—
 बनो योग्य कर सको संघर्ष ।

(६१)

विद्यालय से कर विद्या-अर्जन,
 सीखो विभिन्न ज्ञान और चिंतन ।
 व्यवहार में लाकर तुम सदा—
 करो ज्ञान का सम्बर्धन ।

(६२)

विज्ञान, कला, तर्क और दर्शन,
 जो भी पढ़ो ध्यान से पाठन ।
 योग्य लेखकों की पुस्तकें—
 पढ़ करो उनका स्पष्ट अनुसरण ।

(६३)

महापुरुषों के चरित-आख्यान,
 इतिहास, कला या विज्ञान ।
 अच्छी पुस्तकें पढ़ना अच्छा—
 क्या पढ़ना ये गुरु से जान ।

(६४)

Which to read, which not to read
 In this take the teacher's lead;
 Do thou just as teacher bid;
 Never do thou bad books read.

65

Books on *vivek*'s lustrous glow,
 Books on *virâg*'s mighty blow,
 Books on *bhakti*'s charming flow—
 Read with *sraddhâ*, read and know.

66

Do remember what you read;
Srutis, *purâns*, *smritis* read.
 Do between the lines thou read;
 Study, and thy *buddhi* feed.

67

Men immoral, selfish men,
 Worldlings all in *Moha*'s den
 With their turbid *buddhi* then
Sâstras' meanings cannot ken.

68

Free thee from the *Moha*'s pen,
 Have thou purest *buddhi* then,
 Have thou mental calmness then,
 Books then read, and truly ken.

69

गंदी, गलत, पुस्तकें ना पढ़,
 दिवा स्वप्न तू पढ़कर ना गढ़ ।
 गुरु निर्देशन में पढ़कर—
 ऊपर चढ़ और आगे बढ़ ।

(६५)

पुस्तकें जो जगाएं विवेक,
 या बढ़ाएं जो विराग नेक ।
 हो श्रद्धा, भक्ति की गंगा, पढ़ना—
 हो एकाग्र, तुम होकर एक ।

(६६)

श्रुति, पुराण, स्मृति का पाठन,
 जो भी पढ़ो रखना स्मरण ।
 पढ़ना जो भी, समझकर पढ़ना—
 अध्ययन तो बुद्धि का भोजन ।

(६७)

स्वार्थों में ही पाते आनंद,
 मोह की कारा में हो बंद ।
 कैसे समझें शास्त्रों का अर्थ—
 होती संसारी की बुद्धि मंद ।

(६८)

बन जा प्रबुद्ध, बुद्धि का डेरा,
 मुक्त हो, तोड़ मोह का घेरा ।
 तब पढ़ पुस्तकें, समझ उन्हें—
 मोह मिटे, हो शांति सवेरा ।

(६९)

Read with help of learned teacher,
Read with calmness, read with *vichâr*,
Read with I-less, humble nature,
Read and hear from I-less teacher.

70

Reason sound, true observation,
Clear and thorough introspection,
Thoughtfulness and quick perception
Grow thy knowledge to perfection.

71

Thus then, thou acumen gain,
Keen intelligence obtain,
Understand all things so plain,
Power, force does mind attain.

72

Let not learning I-ness grow,
Learn not for pedantic show,
Let thy learning meekness sow,
From thy learning Goal thou know.

73

Learning tells thee what is Goal,
Tells thy duties clearly whole,
Tells thee how to save thy soul;
Learning helps to win the Goal.

74

पढ़ो, शांति-विचार के साथ,
 पढ़ो नम्र व्यवहार के साथ ।
 निर अहम गुरु से सुनो-गुनो,
 गुरु ज्ञान उपहार के साथ ।

(७०)

गम्भीर तर्क और सत्य निरूपण,
 त्वरित निर्णय और त्वरित ग्रहण ।
 स्पष्ट बोध, विवेक से कर तू—
 ज्ञान की वृद्धि और परिष्करण ।

(७१)

ऐसे हो प्रत्यक्ष ज्ञान का उदय,
 स्पष्ट होता सब, मिटता संशय ।
 नव-स्फूर्ति का होता जागरण—
 मन बनता बल-शक्ति का आलय ।

(७२)

संभल ! न बढ़े विद्या का अहम,
 शिक्षा से न बढ़े 'मेरा'-'मम' ।
 शिक्षा से बस दीनता पाओ—
 प्रभु मिलें और मिट जाए भ्रम ।

(७३)

ये लक्ष्य दिखाती मन को शोध,
 कराती पूर्ण कर्तव्य बोध ।
 हों लक्ष्य प्राप्ति में जितने भी—
 शिक्षा मिटाती सारे अवरोध ।

(७४)

Full of faith and modesty
 Follow teacher, *sâstras* ye;
 True guides they, mislead not thee;
 Don't distrust them, faithful be.

75

Acts which *sâstras* ask you do
 Nicely, timely must do you;
 Acts forbiddên must not do;
 Do thy duties honest, true.

76

Have thou love for works you do;
 Work with zeal and patience too;
 Selfless, skilful duties do
 In the way thy guide tells you.

77

Holy *brahm-muhûrtta*'s time;
 Wake thou must before this time.
 Up the progress' height to climb
 Have then thoughts Divine sublime.

78

Sing the name of Lord of Love,
 Sing His praise with heart of love,
 Sing with voice so choked with love,
 With thy whole self dyed in love !

79

श्रद्धा, विनय का पा वरदान,
 अनुसरण गुरु, शास्त्रों का ज्ञान ।
 प्रदर्शक सच्चे करें ना पथ-भ्रष्ट,
 अविश्वास न कर, हो निष्ठावान ।
 (७५)

शास्त्रानुसार सब कर्म करना,
 पर मत करना जो करना मना ।
 समय पर ही करना भली-भांति—
 बस कर्तव्य प्रति तत्पर रहना ।
 (७६)

अपने कर्तव्यों से हो लगाव,
 काम करो ले उत्साह भाव ।
 हो निःस्वार्थ-दक्ष, कर्तव्य करो—
 जैसे हों सद्गुरु के सुभाव ।
 (७७)

ब्रह्म महूर्त्त में निद्रा त्यागो,
 उससे भी पहले तुम जागो ।
 फिर जगकर प्रभु का ध्यान करो—
 दिव्य कृपा प्रभु की ही मांगो ।
 (७८)

नाम जपो, प्रभु चित्त चोर,
 स्तुति करो हो भाव विभोर ।
 रुद्ध गले से, प्रभुरंग रंग कर—
 'प्रभु-प्रभु' कर तू भोरे भोर ।
 (७९)

Name thou think on, utter, sing;
Let the name in system ring;
To Him do thou loving cling;
Be-all, End-all Him thou sing.

80

Cherished Treasure in thy heart,
Let Him wake up in thy heart !
Plunged in His thought, wash thou dirt
All the dirt from out thy heart.

81

Do recite from holy pages
Holy *mantras* of His praises.
Do remember saints and sages
Of all climes and of all ages.

82

Do remember teacher kind,
Eyes to him with love thou bind;
Bend thy head with loving mind.
Wish all well with heart and mind.

83

Then try easing nature ye,
Cleanse thy teeth then thoroughly,
Take then first bath properly;
All before the sun-rise, see.

84

गुरु मंत्र मिला, उसको जपना,
 स्पंदित हो तब तन-मन अपना ।
 प्रभु का होकर, प्रभु में होकर—
 बस जपना, सोने सा तपना ।

(८०)

हो मनचाही निधि हृदय में -
 प्रभु जागृत हों, हिय आलय में ।
 प्रभु विचार से मन निर्मल कर—
 तू क्षय हो जा फिर अक्षय में ।

(८१)

जप पावन शास्त्रों के उद्गार,
 कर प्रभु स्तुति के मंत्रोच्चार ।
 हर क्षेत्र, काल के संतों को—
 कर हाथ जोड़कर नमस्कार ।

(८२)

गुरु का भी तब करना ध्यान,
 शीश भुकाना, मन में मान ।
 सबका भला विचारना तब—
 हर दिन सुंदर प्रभु का वरदान ।

(८३)

नित कर्म हेतु जा शौचालय,
 फिर दांत मांजने का समय ।
 तू तत्पश्चात् प्रथम स्नान कर—
 याद रहे, ना हो सूर्योदय ।

(८४)

Then when few stars twinkle still,
Morning *Sandhyâ* 'gin thou will;
Think on meaning, *Brahman* feel,
Demon of sin thus thou kill.

85

Then of duties do think ye
Of the day in front of thee;
How to do them find out ye,
Time dividing properly.

86

Look to Lord for helping thee;
Beg success of Mercy's Sea.
He alone is helped, know ye,
Lord whose helper kindly be.

87

Thou resign to Lord supreme;
Do depend on none but Him;
All thou want thou ask of Him;
Him the only prop thou deem.

88

Fervent prayer Lord doth hear
Issuing of heart sincere.
Lord is softened by thy tear;
Prayer true will reach His ear.

89

फिर प्रातः संध्या को हो तत्पर—
 अर्थ समझकर, ब्रह्म अनुभव कर ।
 ब्रह्म महूर्त्त में ही हो ये सब,
 पाप मिटा ले, भीतर-बाहर ।
 (८५)

अब दैनिक कर्मों की बारी,
 करके पूरी सही तैयारी ।
 योजना बद्ध समय बाँटकर—
 खेलो एकदिवसीय पारी ।
 (८६)

मदद मांग प्रभु से साभार,
 सफलता दें करुणा आगार ।
 जिनका नाविक वो है जानो—
 जन वे ही होते भव-पार ।
 (८७)

बस एक आश्रय, अब तो जागो,
 जो चाहिए, उससे मांगो ।
 एक सहारा, यही सहारा—
 दाँए-बाँए अब क्यों भागो ।
 (८८)

पहुँचें प्रभुतक आर्त्तस्वर,
 प्रार्थना कर बस हिय भर कर ।
 आँसू सबसे बड़ा पुजापा—
 चित्त रख दे उसके चरणों पर ।
 (८९)

Prayer sure doth reach His ear,
 Lord of Mercy ever near;
 Prayer drives away thy fear;
 Pray and pray, and be of cheer.

90

If thou want not earthly thing,
 For His grace to Him thou cling;
 "Give me, Lord, Thy Grace", thou sing
 "Grace by which pure *prem* will spring."

91

Or, with warm devotion say,—
 "Lord, my Guide ! I know not way;
 Take this blind to Thee, I pray;
 Keep me at Thy feet for aye !"

92

"Can't I cross the *samsâr*-sea
 Thou unless my pilot be !
 Storms of sea control all Ye !
 On my way do Thou guide me !"

93

"Gracious, mightful, all-know Ye !
 Know not I the good for me !
 What is best for me do Ye !
 Be Thou kind to way-worn me !"

94

दया निधान हैं तेरे पास,
 प्रार्थना करती भय का नाश ।
 तृषा तुम्हारी प्रभु जल की—
 हैं प्रभु मिटाते सबकी प्यास ।
 (९०)

अगर न आए जग ये रास,
 प्रभु कृपा की तुमको प्यास ।
 हाथ जोड़कर भक्ति भाव से—
 जरूर मिलेगी, कर अरदास ।
 (९१)

प्राणार्पण कर पूर्ण समर्पण,
 “मैं अंधा हूँ, तेरी शरण—
 चरणों में ले ले, रज दे दे,
 सब के तारनहार चरण” ।
 (९२)

भयावह सागर, संसार असार,
 तू ही नाविक बन, कर दे पार ।
 तूफान बड़े हैं, तुम्हीं बचा लो—
 मेरी मंजिल तो तेरे द्वार ।
 (९३)

हे दयालु प्रभु ! तुम सर्व समर्थ,
 मेरा ज्ञान तो सारा व्यर्थ ।
 ना जानूँ भला-बुरा अपना
 अब तेरे जिम्मे अर्थ-अनर्थ ।
 (९४)

“ I resign myself to Thee !
 Nothing do I want for me.
 Keep me anyhow, like Ye;
 Let Thy will be done on me !”

95

“What I pray for ? Thou art all !
 Thou art ever doing all !
 Who am I to pray at all ?
 Silence is my prayer all !”

96

Any such or other way
 To the Lord with ardour pray;
 Prayer thine sincerely say;—
 Knows He all, He knows for aye !

97

Do then timely day's work thine;
 Every work do very fine ;
 Lose not patience, temper thine;
 Work to please the Lord benign.

98

Just before the bed-time see
 How was day's work done by thee;
 Must defects all notice ye,
 Them correct thou properly.

99

तुम्हको अर्पण मैं प्रभुवर,
 अब तेरे चरणों मे हो घर ।
 अब न चाहिए मुझे और कुछ,
 बरसे तेरी करुणा मुझपर ।

(९५)

और क्या पूजूं, तुम ही सार,
 सदा सबके कारक, ओंकार ।
 निःशब्द-मौन ही पूजा मेरी,
 नहीं अस्तित्व, मैं एकाकार ।

(९६)

कर प्रार्थना, मन में उत्साह,
 मंदिर, गिरजा या दरगाह ।
 कर निष्ठा से, प्रभु सब जाने—
 तुम ये जानो, प्रभु अथाह ।

(९७)

तब कर समय से दैनिक काम,
 बड़े ध्यान से, बिन विश्राम ।
 धीरज धर और रोष ना कर,
 सारे काम हों प्रभु के नाम ।

(९८)

शयन पूर्व पुनरावलोकन,
 दिन भर के कामों का चिंतन ।
 कमी-भूल सारी खोजकर,
 सही ढंग से कर संशोधन ।

(९९)

In thy actions all, mind ye,
Exercise true reason free.
Reasonless and rash thou be,
Fall down into danger-sea.

100

Fall down like Icarus ye;
So then, never rash should be.
Purest judgment must have ye,
Be thou careful, cautious be.

101

Let thee pitch thy aim most high;
Work at it thou live or die;
Laugh to scorn the death though nigh;
Cowards every moment die.

102

Every moment noblest live;
Duties never ill-done leave;
Greatest aim to reach thou live;
This will blessing of peace give.

103

Hope, the balm of life, have ye;
Kick off gloom of misery.
Lord of Mercy is by thee;
Ever-gracious on all He.

104

मुक्त तर्क, अपने में यकीन,
 न बनना कभी भी अलादीन ।
 अधोपतन उनका होता है—
 जो होते उतावले, तर्कहीन ।
 (१००)

रोम बना और रोम जला,
 इकारस पंखों का मोम गला ।
 सूरज का ताप न समझा वो—
 सतर्क समझकर कर फैसला ।
 (१०१)

वीर एभरेष्ट पर पग धरते,
 डरपोक बार-बार हैं मरते ।
 हो ऊँचा लक्ष्य, प्रयास अनंत—
 जीवंत मौत से कब डरते ।
 (१०२)

जीना, न खाने को जीना,
 ऊँचा लक्ष्य पाने को जीना ।
 अधूरा काम छोड़ना मत,
 वरद शांति लाने को जीना ।
 (१०३)

हैं आशा, सर्वौषधि, प्रभु तो सार,
 पा, मिटा क्लेश और अंधकार ।
 दया निधान ही तेरे साथ ।
 सदा कृपालु, कृपा आगार ।
 (१०४)

Like the gentle drops of rain
 Comes down from the Mercy's Main
 Grace to all both sane, insane
 To uplift all, kill all pain.

105

Verily, He kills all pain.
 Stick to Him;— this duty main.
 Spiritual practice sane
 Do continue might and main.

106

To the spiritual life
 Must conform thy worldly life.
 Do convert entirest life
 To one uniform good life.

107

Be thou good and honest be,
 Virtues all acquire must ye.
 Virtuous is hero, see;
 Truest man undoubted he.

108

Virtue maketh man of thee.
 Should spontaneous it be.
 E'en in dream-state must be ye
 Free from vice, impurity.

109

रिमझिम, रिमझिम बरसें बादल,
 प्रभु बरसाएँ कृपा जल निर्मल ।
 सबको उठाते, कष्ट मिटाते—
 चाहे ज्ञानी, चाहे पागल ।
 (१०५)

करते सच में सब दुःख नाश,
 प्रभु से जुड़, प्रभु आस-पास ।
 है प्रमुख कर्तव्य तुम्हारा ये,
 सदा आध्यात्मिक करो अभ्यास ।
 (१०६)

संसारी जीवन का स्वरूप,
 आध्यात्मिक जीवन के अनुरूप ।
 कर जीवन का रूपांतरण —
 एक समरूप-जीवन अनूप ।
 (१०७)

अवगुण सारे आज मिटा लो—
 सद्गुण सारे तुम अपना लो ।
 सद्गुणी ही सच्चा मानव—
 खुद को तुम सद्गुणी बना लो ।
 (१०८)

सद्गुण अपनाकर मानव बन,
 सहज स्वाभाविक, हो परिवर्तन ।
 स्वप्नावस्था में भी तेरा—
 पाप मुक्त हो जीवन पावन ।
 (१०९)

Virtues must acquire thou all.
 They need sacrificing all.
 Sacrifice thy self and all
 At the virtues' noblest call.

110

See the ceaseless sacrifice
 Nature to Lord makes so nice !
 Man's whole life is sacrifice—
 Self-denying sacrifice !

111

Sacrifice is virtue main;
 Sacrifice alone true gain;
 Sacrificing, Self regain;
 Sacrificing, Goal attain.

112

Sacrifice thyself to all,
 To the world, to Lord withal;
 Serve thou selfless, serve thou all;
 Serve the Lord, serve Him in all.

113

With thy *hom* serve *devas* all,
 With thy *svâdhyây*, *rishis* all,
 With the *srâddhas*, *tarpans* all
 Serve with faith thou *pitris* all.

114

सद्गुण सारे तुम अपना लो,
 'मैं' की 'मेरी' बलि चढ़ा लो ।
 सद्गुण तो मांगे बलिदान—
 बलिहारी हो, प्रभु को पा लो ।
 (११०)

प्रकृति का ये निरंतर बलिदान—
 है प्रभु का ही तो प्रावधान ।
 समस्त मानव जीवन ही बलि है—
 आहुत कर आत्मसत्ता-अभिमान ।
 (१११)

बलिदान करे तम की समाप्ति—
 श्रेष्ठ गुण, सद्गुणों की व्याप्ति ।
 आहुति-त्याग से लक्ष्य मिले—
 परमात्मा की हो पुनर्प्राप्ति ।
 (११२)

लोकहित में आत्म बलिदान,
 दे तन-मन-धन, कर अमृत पान ।
 सेवा सबसे बड़ा धर्म है—
 सबमें ईश्वर को पहचान ।
 (११३)

तू यज्ञ कर देवों को अर्पण,
 पितरों को श्राद्ध और तर्पण ।
 ऋषियों को स्वाध्याय, पाठ—
 शास्त्रोक्त विधि से भाव समर्पण ।
 (११४)

Helping needy, lame and blind,
 Serving patients body, mind,
 Serving *bhikshus* whom thou find,
 Serving guests thou serve mankind.

115

Serve thou *bhûtas* giving food.
 These five kinds of service good
 Do thou daily, as thou should,
 In the purest, meekest mood.

116

Do thy *sandhyâ* thrice a day;
 Three baths are good, *sâstras* say.
 Worship do as guide doth say;
 Lord remember thou for aye.

117

Him remember, be thou His;
 Make thy mind and body His;
 Think Him till thy mind do cease;
 Think Him, know Him as He is.

118

By an artless art of His
 World has He made as it is,
 Full of endless mysteries.
 He has made all, He is these.

119

ना रहे भूख, ना रहे प्यास,
 सेवा ऐसी, हँस दे उदास ।
 अतिथि देव, सब जीव ईश्वर—
 है सेवा परम धर्म, अरदास
 (११५)

सारे जीव सेवित भोजन से,
 अतिथि सेवा कर तन-मन-धन से ।
 देव, पितृ, ऋषि सेवा ही धर्म—
 सेवा सबकी, अपनेपन से ।
 (११६)

नित संध्या दिन में तीन बार,
 स्नान भी तीन, शास्त्रानुसार ।
 पूजा विधि, गुरु आज्ञा जैसी—
 बस प्रभु स्मरण, हिय में उतार ।
 (११७)

कर प्रभु स्मरण, प्रभु का बन कर,
 प्रभु के चरणों में तन-मन कर ।
 प्रभु को जानो जैसे प्रभु हैं—
 प्रभु स्मरण से मन पावन कर ।
 (११८)

जग को देखो, प्रभु ही दर्पण,
 हों दर्पण में सबके दर्शन ।
 अनोखा अभियंता नित निर्गुण—
 प्रभु ने किया निज रूपांतरण ।
 (११९)

All that seem to be are He,
 Self-existent, Blissful He;
 Think of Him and blissful be;
 Journey's truest End is He.

120

Prânâyâm and *Hath-yog* too
 Learn thou from thy teacher true;
 In his presence practise you
 With the care and caution due.

121

Bedding, clothing, *âsan* all
 Share with none, with none at all;
 Pure and clean thou keep them all;
 Be not fop in *Mâyâ*'s stall.

122

Foppish dandy be not thou;
 Luxury thou don't allow;
 With excuses lamest thou
 Don't deceive men anyhow.

123

Working selfish, mean and low,
 Insincerely do not show
 That thou selfless did it so
 For the good of all thou know.

124

परमानंद वह, कर उसे याद,
 आनंद अगर तो वह प्रभु पाद ।
 लक्ष्य वही है, सत्य वही है—
 अब तो बन जा तू प्रह्लाद ।
 (१२०)

हठ योग और प्राणायाम,
 सीखो गुरु से कर प्रणाम ।
 सीखो-समझो हो सावधान—
 गुरु उपस्थिति या गुरु के धाम ।
 (१२१)

वसन, बिछावन और आसन,
 रखना इनको स्वच्छ, पावन ।
 और किसी को कभी न देना—
 जैसा आसन वैसा ही मन ।
 (१२२)

दिखावा शैतान की सेना—
 विलासिता अपना ना लेना ।
 लंगड़े-लूले ढूँढ़ बहाने—
 ना औरों को धोखा देना ।
 (१२३)

लघु बनाता स्वार्थ-छलावा,
 बिना स्वार्थ का, भूठ दिखावा ।
 परमारथ का स्वांग रचाना—
 जान बूझ कर भूठा दावा ।
 (१२४)

Though thou think thou can deceive,
 Still thou cannot all deceive;
 Wiser, shrewder men still live,
 They thy words all don't believe.

125

Still there is the One Divine,
 Ever-wakeful, lustrous Shine !
 Knows He doubtless thoughts all thine,
 Ever-wakeful Lord benign !

126

Know — thou hast to be in bed
 Which thou hast so fondly made.
 So, sincerest life be led;
 Be thou honest till be dead.

127

Cut the throat of weakness all,
 Weakness great and weakness small.
Râg and *dvesh* will have a fall.
 Do thy duties selfless all.

128

Monthly, yearly duties all,
 Ceremonies sacred all,
 Festivals so holy all;—
 Do them nicely, timely all.

129

मन सोचे दे जग को धोखा,
 दे न सको तुम सबको धोखा ।
 ज्ञानी-ध्यानी कितने जग में—
 दे न सको तुम उनको धोखा ।
 (१२५)

फिर भी केवल एक दिव्य है,
 सदा जागृत एक सत्य है ।
 मन की बातें सारी जाने—
 सदा पुज्य है, सदा वंद्य है ।
 (१२६)

राह वही है, है वही अंत,
 बनाया जीवन को जीवंत ।
 जीवन बीते बस निष्ठामय,
 निष्ठामय हो मृत्यु पर्यंत ।
 (१२७)

राग-द्वेष से जाओगे गिर,
 कुचलो दुर्बलताओं का सिर ।
 छोटे-बड़े सब दोष मिटाकर—
 बना लो तन को प्रभु का मंदिर ।
 (१२८)

कितने पावन सारे त्यौहार,
 है कितना सुंदर लोकाचार ।
 आवधिक कर्त्तव्य करो सारे—
 समय-नियम-सामर्थ्यानुसार ।
 (१२९)

Tīrthas, holy places see;
 Full of *sraddhā* do there ye
 Special duties properly;
 Money, labour mind not ye.

130

Charity must do there thou
 Open-hand, as means allow;
 Modest, meek be ever thou;
 To the Lord in all do bow.

131

Ever holy, pious, just
 Purest life there lead thou must.
 Waste no time, be not unjust,
 Worship not desire and lust.

132

When of saintly man thou know,
 Present in hand to him go,
 Bow to him with *bhakti*'s flow,
 Serve him, hear him, nobler grow.

133

In the name of service, see,
 Thy desires serve not ye;
 Seek the *servêd*'s pleasure ye;
 Selfless, active, loving be.

134

पवित्र स्थलों का कर दर्शन,
 श्रद्धा से भर, कर तीर्थाटन ।
 विशेष कर्म जैसे तर्पण—
 कर लगा श्रम, ध्यान और धन ।
 (१३०)

करना जरूर दान, उपकार,
 खुले हाथ से, साधन अनुसार ।
 करना सुशील नम्र व्यवहार—
 हैं सबमें प्रभु, प्रभु नमस्कार ।
 (१३१)

हैं बड़ भाग, देह नर पायी—
 न समय अपव्यय, न हो अन्यायी ।
 शुद्धतम जीवन शैली हो—
 विषय, कामना तो दुःखदायी ।
 (१३२)

अगर संत का हो आगमन,
 भेंट हाथ ले करना दर्शन ।
 सभक्ति भुका शीश, कर नमन—
 सेवा करना, करना श्रवण ।
 (१३३)

लेकर पर-सेवा का नाम,
 पूरी ना कर निज इच्छा-काम ।
 सेव्य तुष्टि ही प्रसाद प्रभु का,
 हर सेव्य तो साक्षात् राम ।
 (१३४)

Selfless love alone won't do;
 Ripest reason need you too.
 Monkey had much love, 'tis true;
 How he served with sword, know you !

135

In the way of service stand
Ripus six, the devil's band.
 Works of service, do demand
 Purest heart and cleanest hand.

136

Loving worship holy, pure,
 Service true that's worship sure
 Will the *samsâr*-illness cure,
 Bring the bliss unending sure.

137

In the name of worship pure
 Don't do sin and crime, be sure;
 Don't be thou fanatic sure,
 Prince of darkness don't adore.

138

Prince of darkness don't adore;
 See not dirt in others' door,
 Ever sweep thy door before;
 Blameless, bright be evermore.

139

नहीं पर्याप्त निःस्वार्थ प्यार,
चाहिए साथ परिपक्व विचार ।
बंदर ने मालिक के हित में—
मक्खी पर चलायी तलवार ।

(१३५)

सेवा में तो अनेकों रोड़े,
रिपु छः तो शैतान के घोड़े ।
सेवा करो इन सबसे बचकर—
हिय बिछा, हाथों को जोड़े ।

(१३६)

सेवा ही है सच्चा अर्चन,
सेवा ही है पूजन पावन ।
देती परमानंद सेवा ही—
काटे ये संसार के बंधन ।

(१३७)

पूजा कर, ना पाप अपराध,
धर्म नाम पर क्यों उन्माद ?
क्यों बन जाते हैं शैतान—
स्वयं दुःखी औरों को विषाद ।

(१३८)

धूल भरे, क्यों देखें पर घर—
पहले अपना घर तो साफ कर ।
ना दोष खोज तुम औरों में—
भाँक, खोज अपने भीतर ।

(१३९)

Prince of darkness don't adore,
 Dark illusion kill by lore;
 Be not *tâmas*, high thou soar,
Vijnân into thee thou pour.

140

Prince of darkness don't adore;
 Ever Heaven's Grace implore
 For thy reaching Blissful Shore
 Where is *Mâyâ* known no more.

141

Mâyâ's show this MANY is;
 Where thou touch thou catch disease;
 Hold off *Mâyâ*, be at ease;
 Get the Lord and *Mâyâ* cease.

142

Heaven-minded thee thou hearten,
Mâyâ's nature know for certain;
 Cover her with Heaven's curtain;
 See the Lord in all thou certain.

143

See the Lord in men at arms,
 See the Lord in nature-charms,
 See the Lord in killing germs,
 See the Lord in mother-arms.

144

ना चाहो कभी शैतान को,
मारो ज्ञान से अज्ञान को ।
तमस त्यागो, जागो-जागो,
भर लो स्वयं में विज्ञान को ।
(१४०)

न चाहो कभी शैतान को,
चाहो तो बस भगवान को ।
गर चिदानंद पाना है तो—
मिटा दो माया को, अज्ञान को ।
(१४१)

माया दीखे अनंत विराट,
छूते ही हम पकड़ें खाट ।
माया छूटे-सब दुख छूटे
प्रभु द्वार के खोल कपाट ।
(१४२)

हैं ईश्वरमय मन और हृदय,
कृपा कवच तो अभेद्य-अजय ।
माया का स्वभाव जान ले,
चिदानंद जग सारा प्रभुमय ।
(१४३)

सैनिक की आहों में ईश्वर,
प्रकृति प्रदत्त चाहों में ईश्वर,
मरते कीट पतंगों में भी—
हैं माँ की बाहों में ईश्वर ।
(१४४)

See Him thou in hill and dale,
See Him thou in sea and gale,
See Him thou in rain and hail,
See Him thou in bright and pale.

145

See Him thou in hunger, thirst;
See Him thou in anger, lust;
See Him thou in just, unjust;
See Him thou in future, past.

146

See the Lord in bad and good,
See the Lord in drink and food,
See the Lord in men and wood,
See the Lord in all for good.

147

Try to see the Lord in all,
In things all, in movements all;
Him remember in times all;—
One remains in place of all.

148

Any object when thou see,
Him in realness thou see.
Where thou get else ? How else see ?
He alone is; none but He.

149

पर्वत भी प्रभु, धूल भी ईश्वर,
 शूल भी ईश्वर, फूल भी ईश्वर ।
 वर्षा-ओले, सागर-आँधी,
 लक्ष्य भी ईश्वर, मूल भी ईश्वर ।
 (१४५)

भूख-प्यास में, तू प्रभु देख ।
 आश-निराश में, तू प्रभु देख ।
 कल में ईश्वर, कल में ईश्वर,
 रुदन-हास में, तू प्रभु देख ।
 (१४६)

पानी और भोजन में ईश्वर,
 नगर, गाँव और वन में ईश्वर ।
 शुभ-अशुभ सब ईश्वर ही तो—
 तन में ईश्वर, मन में ईश्वर ।
 (१४७)

सभी काल, स्थान में ईश्वर,
 देह और प्राण में ईश्वर ।
 जड़-जीव सर्वत्र व्याप्त प्रभु—
 गुरु और ज्ञान में ईश्वर ।
 (१४८)

शांत भाव या तेवर तीखे,
 कृद्ध भी देखूँ, मैं प्रभु दीखे ।
 निशि दिन चतुर्दिक और कौन—
 दर्शन तो केवल प्रभुजी के ।
 (१४९)

Cat-form when thou seem to see,
 Think not cat, do think it He;
 See not cat, but Him thou see.
 Names and forms all are but He.

150

Atom when thou seem to get,
 'Atom'-name thou do forget;
 Feel in this the *Pûrnam* yet;
 On the *Pûrnam* meditate.

151

Uniform Continuum,
 All-pervading, changeless, calm,
Samsâr-illness' surest balm,
 Self Supremest, Shining Calm.

152

Bliss eternal, *Chit*-ful Light,
 One beyond the *Mâyâ*'s night.
 Causeless, elseless, purest, bright,
Pûrnam do remember right.

153

He alone the bodies all,
 He alone in bodies all,
 He does think in bodies all,
 He does work in bodies all.

154

पशु-पक्षी, पतंग प्रभु देखो,
विहंग नहीं, विहंग प्रभु देखो ।
नाम-रूप सब के सब ईश्वर—
हर गंध, हर रंग प्रभु देखो ।
(१५०)

कण पाकर कण को भूलें,
कण में व्यापी पूर्णम छू लें ।
पूर्णम का ही ध्यान करें—
पूर्णम का भूला भूलें ।
(१५१)

प्रभु नित निरंतर निर्विकार,
वे सर्वौषधि, रुग्ण संसार ।
एक रूप हैं - सर्व रूप हैं,
सार-असार, वे ही ओंकार ।
(१५२)

प्रभु ! चिदानंद-चिन्मय-प्रकाश,
जो काटे माया के पाश ।
हैं परम शुद्ध, निर्गुण-अनंत,
पूर्णम जैसे ये आकाश ।
(१५३)

सजीव और निर्जीवों में,
जैसे प्रकाश हो दीवों में ।
प्रभु सोचते, प्रभु देखते—
कर्ता प्रभु सब जीवों में ।
(१५४)

See thou Oneness, many kick,—
 Fear and anger shun thou quick;
Prem and *kshamā* ever seek;
Kām thou give up, truth thou speak.

155

Dharma springs from truth the firm,
 Grows by gifts and kindness' charm,
 Lives in *kshamā* — feel not harm,
 Dies by anger's poison-germ.

156

Hold thou *dharma*, pure thou be,
 Do remember Mercy's Sea.
 When thy mind doth elsewhere flee,
 Bring again to Lord's feet ye.

157

Liking some, disliking some,
 Fearing some do not become
 Thee who worship *samsâr*-balm,
Viswa-mûrti pure and calm.

158

Everywhere is samest He;
 With the same eye do all see.
Doshas all do sweep now ye;
 Pure and calm thou try to be.

159

देखो एक, बहु को तोड़ो,
 अविलंब डर, क्रोध को छोड़ो ।
 काम को भूल, हो सत्यमय—
 अब तो प्रेम-क्षमा से जोड़ो ।
 (१५५)

अडिग सत्य धर्म का जाता,
 क्षमा-दया से पोषण पाता ।
 क्रोध धर्म की जड़ काटता—
 क्रोध धर्म का कैसा नाता ?
 (१५६)

धर्म को संभाल, पवित्र बनो,
 दया करुणा के चित्र बनो ।
 मन भागे तो, वापस लाओ—
 प्रभु चरणों के मित्र बनो ।
 (१५७)

ना अच्छा, ना बुरा जग में,
 डग-मग क्या होना मग में ।
 विश्व मूर्ति, करुणा धाम को—
 बसा लिया जब रग-रग में ।
 (१५८)

सर्वत्र, व्याप्त है वही एक,
 'एक आँख', सब रही देख ।
 दोष मिटाकर अपने सारे—
 बन जा अब तू शांत नेक ।
 (१५९)

If thou go on in this way,
 I-ness will be melting away,
Chitta will be pure and gay,
Buddhi graspeth Oneness aye.

160

Vivek lustrous get then thou,
 'I am He' on thee dawns now.
Yog continue and get thou
Virâg that doth all dis'llow.

161

Practise *yog* thou little longer,—
Vivek, *virâg* will be stronger,
 Love and hate grow weaker, weaker,
Chitta clearer, calmer, purer.

162

Mâyâs magic mind not ye,
 She then has no charm for thee,
 Even-minded bear all ye,
Sraddhâ pure then comes to thee.

163

World be fire and fire to thee,
 Eager thou be to be free,
 Long for direct vision ye,
 Long for teacher perfect, free.

164

अगर चलो ये राह एक,
 है चित्त बनता पवित्र नेक ।
 'मै' मिटता है, पिघल-पिघल—
 पाते एक हैं, बुद्धि-विवेक ।
 (१६०)

उज्ज्वल विवेक तब तुम पाओ,
 'उसमें मैं हूँ,' एक हो जाओ ।
 कर योग निरंतर बिन भूले—
 ममत्व मिटाओ, विराग जगाओ ।
 (१६१)

लंबा करो योग अभ्यास,
 विवेक जगे, हो इच्छा नाश ।
 राग द्वेष होते हैं लुप्त—
 चित्त स्वच्छतर, नियमित श्वास ।
 (१६२)

माया जादू असर करे ना,
 आकर्षण अब कोई भरे ना ।
 श्रद्धा जगे मन में पवित्र तब—
 समभाव मनुष्य कभी डरे ना ।
 (१६३)

ये जग अग्नि है, जग मायानल,
 विषय भोग धोखा माया छल ।
 सद्गुरु खोजकर पानी मुक्ति—
 लक्ष्य तुम्हारा होना केवल ।
 (१६४)

Such a teacher when thou get,
 Faith in whom thou have direct,
 Free to be from *Mâyâ*'s net
 Sit at his feet, *bhakti*-wet.

165

Sit at feet of teacher kind,
 Give to him thy body, mind;
 Thou to him thyself do bind,
 Serve him, speak to him thy mind.

166

Serve him I-less with devotion,
 Patience, meekness, love-emotion;
 Follow faithful his direction,
 Learn the Truth by proper question.

167

Guide thy only friend on earth;
 Bonds all other break with mirth;
 Now thou have a newer birth,
 Give up thine old home and hearth.

168

Give up, give up all possession;
 Sever, sever all connection;
 Cut off, cut off all affection;
 World avoid in thought and action.

169

सद्गुरु का जब पा लो दर्शन,
 माया जाल का तब हो भेदन ।
 गुरु में आस्था और विश्वास—
 गुरु चरणों में तन-मन-जीवन ।
 (१६५)

तेरा आश्रय बस गुरु चरण,
 करके उनको तन-मन अर्पण ।
 मन के कोने खोल बेभ्रिभ्रक—
 संदेह रहित कर पूर्ण समर्पण ।
 (१६६)

कर शाश्वत गुरु धर्म को धारण,
 श्रद्धा-धैर्य से कर अनुसरण ।
 ममत्व मिटा, कर सभक्ति सेवा,
 सत्य जान और शक निवारण
 (१६७)

हितैषी केवल गुरु निर्देशन,
 तू तोड़-काट, विषय के बंधन ।
 अब जब मिल गया नया जीवन,
 भूल जा अपना घर पुरातन ।
 (१६८)

सारी संपत्ति अब छोड़-छोड़,
 सारे संबंध अब तोड़-तोड़ ।
 मनसा वाचा भूल जगत को—
 केवल चरणों से जोड़-जोड़ ।
 (१६९)

Furnished with four *sādhan*s thou
 Formally be *bhikshu* now;
 Truest *bhikshu* must be thou.
 Compromises don't allow.

170

Duties of this new life pure
 From thy teacher learn thou sure;
 Do observe them *samsār*-cure;
 Be thou holy, be thou pure.

171

Senses' holes all obturate,
 Earth and heaven all forget,
 Body-thought obliterate,
 Let all thoughts do mind vacate.

172

Deeper, deeper meditate,
 Mind thou fully concentrate,
 Intuition do thou get,
 Getting knowledge thee perfect.

173

Ceaseless work thou all alone,
 Self alone thou think alone.
 Only Being thou alone !
 Ever do thou be alone.

174

तेरे पास अब साधन चार,
गुरु सफलता के आधार ।
सच्चा भिक्षु बन जा विधिवत—
ना कर सम्झौते स्वीकार ।

(१७०)

नवजीवन के कर्तव्य शुद्ध,
संसार मुक्ति, माया अवरुद्ध ।
गुरु शिक्षा ले, अब बन भिक्षु—
तू पावन हो जा, हो जा बुद्ध ।

(१७१)

बंद करने हैं इंद्रिय द्वार,
स्वर्ग धरा को भी बिसार ।
देह ध्यान को भूल-भूल,
मानस कर ले निर्विचार ।

(१७२)

प्रभु हिय धर, कर भक्ति रस पान,
एकाग्र चित्त, कर गहरा ध्यान ।
पा अनुभूति होकर अनुभूत—
पा जाओगे - सच्चा ज्ञान ।

(१७३)

कर एकाकी, अभ्यास निरंतर,
खोज अकेले अपने उत्तर ।
एक अकेला, होकर केवल—
कर्म करो, एकाकी रहकर ।

(१७४)

Be alone and live alone;
 Homeless do thou move alone;
 With *titikshâ* live alone;
 None depend on, move alone.

175

Patrons or means seek thou none;
 Gold and silver must have none;
 Calm remain thou, no-where run,
 Don't enjoy thou *Mâyâ's* fun.

176

Don't enjoy thou *Mâyâs* fun,
 Things all charming must thou shun;
 Snakes in grass they,— spare they none;
 Spoil thy life they;— them thou shun.

177

Raktabīj of *kâm* do shun;
 So long as he in thee run
 Cannot peace and bliss be won
 E'en by *sanyâs*, Nectar's Son !

178

Gairik cloth and *kamandal*,
Sikhâ, sacred thread and all
 Will be vain, if thou do fall
 At the feet of passions all.

179

हो अकेला, तू रह अकेला,
 माया है दुनिया का मेला ।
 बनकर तितिक्षु जीना एकाकी—
 जीवन में क्यों रेला-पेला ।
 (१७५)

ना साधन खोज, न रक्षक, पालक,
 स्वर्ण-रजत-हीरे अनावश्यक ।
 कस्तूरी मृग सा दौड़े क्यों—
 तेरे भीतर ही सब, साधक !
 (१७६)

माया के खेल अब खेलो ना,
 बहुत भयावह, जादू टोना ।
 भारी मायावी आकर्षण—
 उनको ना सिर पर अब ढोना ।
 (१७७)

जब तक है, काम का दास,
 आनंद शांति न आए पास ।
 निष्काम कर्म बिन, हे साधक !
 बेकार योग, व्यर्थ संन्यास ।
 (१७८)

वसन गेरुए, हाथ कमंडल,
 शिखा, जनेऊ या तुलसी दल ।
 सभी व्यर्थ हैं, जब तक तेरे—
 चारों ओर विषयों का दलदल ।
 (१७९)

Don't enjoy thou *Mâyâ*'s fun;
 Things of earth thou seekest none;
 Body-bondage must thou shun;
 Fearless be thou, frighten none.

180

Body-fondness shun thou must;
 Shun thou comfort, *lobh* and lust;
 Shun thou sloth, and be thou must
 Bold and hardy, honest, just.

181

Live on *mâdhukar* food must;
 May not bad food bring disgust.
 All food samely take thou must;
Brahman see in all repast.

182

Mâdhukar beg once a day;
 Trouble *grihîs* in no way;
 Take but what themselves give they,
 Seek no more food, mind it aye.

183

Needful quantum when thou get
 Beg, accept food by no rate.
 When enough food don't thou get
 Lose not calmness, none thou hate.

184

माया के मजे, अब ना भोग,
जग-पदार्थ तो केवल रोग ।
निर्भय हो जा, निडर अब तो—
भूल तन बंधन, कर बस योग ।
(१८०)

अवश्य मिटा दे - देह आसक्ति,
और मिटा दे लोभ अनुरक्ति ।
मिटा इच्छा, मत्सर, क्रोध, अहम—
होकर समभावी जगा भक्ति ।
(१८१)

भिक्षा ही भोजन का साधन,
ना चिढ़ना पा अरुचिकर भोजन ।
ले सारी भिक्षा, हो समभाव—
भोजन में है - ब्रह्म प्रभु पावन ।
(१८२)

भिक्षाटन दिन में एक बार—
गृही पर ना बनना तुम भार ।
जितना दे, हँस करना स्वीकार,
नहीं मांगना और आहार ।
(१८३)

जब मिल जाए मात्रा आवश्यक,
अधिक नहीं लेना, हे साधक ।
ना मिले कभी भोजन पूरा—
शांत रहना, ना करना बक-बक ।
(१८४)

Be content thou, ever be.
Facing which way should eat ye,
Questions such concern not thee;—
Oneness everywhere thou see.

185

Save for timely begging food,
Nearing *grihīs* is not good.
Loneness ever seek thou should
Full of *virâg*, pious mood.

186

When are offered things to thee
Don't accept more than need ye;
More the *virâg*, less need ye;
Less thou have, thou better be.

187

Than the needful get no more;
For thy future never store.
Less thou want and higher soar.
Riches bar to Griefless Shore.

188

Do thou live with *virâg* father,
Mâdhukar the kindest mother,
Sraddhâ wife, and *bhakti* daughter,
Jnân thy son, and with no other.

189

मधुकर बनना तू, नहीं भ्रमर,
 प्रभु को सर्वव्यापी जानकर—
 जिधर भी मुख हो भोजन करना—
 पूरब-पश्चिम, दक्षिण-उत्तर ।
 (१८५)

वैरागी हो, हो मन शांत,
 गृही से दूर, स्थल एकांत ।
 गृही दर्शन जब भिक्षाटन,
 फिर एकाकी उसके उपरांत ।
 (१८६)

अगर कोई देता हो दान,
 लेना, रख जरूरत का ध्यान ।
 विराग बढ़े, जरूरत घटे—
 कम में जीना सच्चा ज्ञान ।
 (१८७)

अपरिग्रह का करो तुम प्रण,
 भविष्य के लिए नहीं भंडारण ।
 दौलत करती दूर लक्ष्य से—
 करता पास है पूर्ण समर्पण ।
 (१८८)

विराग पिता, माता मधुकरी,
 ज्ञान पुत्र और श्रद्धा सहचरी ।
 यही परिवार, इसीमें रहना—
 भक्ति सुता है आनंद भरी ।
 (१८९)

Be idealest anchorite,
Be thou ever blameless, bright,
Ever carry knowledge-light,
Do dispel ignorance-night.

190

Lose not, lose not pureness thine;
In thy nobleness do shine;
In thy excellence Divine;
Shine thou in thy goodness fine.

191

Be idealest anchorite;
Be thou grave, be never light;
Do remember Goal-post right;
Ever long for endless Light.

192

Every moment do thou see
How for Goal are trying ye.
Every moment do thou see
True things truly done by thee.

193

Lose not thee in drinking, eating;
Lose not thee in parlour-meeting;
Lose not thee in anger-heating;
Lose not thee in running, sitting.

194

आदर्श साधु बन, ले विश्वास,
सदा साथ ले ज्ञान प्रकाश ।
निष्कलंक सहज, क्रोध को तज—
काटो सारे अज्ञान पाश ।

(१९०)

नहीं छोड़ना शुचिता पावन,
सदा बरसना बनकर सावन ।
दिव्य श्रेष्ठता अपने खातिर—
बने आत्मा, तेरी योगन ।

(१९१)

बनना एक आदर्श संन्यासी,
बनना तुम गंभीर अभ्यासी ।
निशि दिन लक्ष्य आँखों के आगे—
लक्ष्य तुम्हारा घट-घट वासी ।

(१९२)

हर पल करना तुम प्रयास,
बन कर तुलसी-सूर-रैदास ।
बनना है मीरा या कर्मा—
सच्चा अभ्यास, मन में विश्वास ।

(१९३)

ना खोना खाने पीने में,
मस्ती की खातिर जीने में ।
न समय गंवाना गप्पों में—
न राग पालना सीने में ।

(१९४)

Loudly laughing, lightly talking,
 Fighting, joking, jesting, mocking,
 Graceless moving, vainly walking—
 These for hermit surely shocking.

195

Hither, thither wistful looking,
 Information needless seeking,
 Faults of others ever picking,
 Lightest pleasures ever seeking—

196

These and such things ever shun,
 Unbecoming works all shun ;
 Be thou graceful, lightness shun,
 But thy teacher mix with none.

197

Mix with none but teacher thine ;
 Seek thou ever Lord benign.
 With thy sacred *yog* divine
 Mammon-worship don't combine.

198

Every getting must shun you
 If without it you can do ;
 Sure without much can you do
 If thou have the *virâg* true.

199

ना हलकी-फुलकी बातों में,
ना ख्वाबों की काली रातों में,
हास-परिहास और उपहास,
न खोना साधक, सौगातों में ।

(१९५)

व्यर्थ इधर-उधर दौड़े नजरें,
खोजे बेमतलब की खबरें ।
खोट खोजने की आदत क्यों ?
मोद-प्रमोद, नाटक, नखरे ।

(१९६)

छोड़ो ऐसी सारी आदत,
कर्म अशोभनीय और कुलत ।
हल्कापन भी ना रखना तुम,
रहना सदा गुरु सन्मुख नत ।

(१९७)

रहना सदा गुरु सन्मुख नत,
रख मन में प्रभु की ही चाहत ।
पवित्र दिव्य योगाभ्यास से तुम—
धन पूजा को मिलाना मत ।

(१९८)

पाने की अभिलाषा तोड़ो,
पैसा-पैसा क्यों तुम जोड़ो ?
जीवन की आवश्यकता थोड़ी—
विराग जगा कर, लिप्सा छोड़ो ।

(१९९)

If the earthy charming sight
 Tie thy wistful eyes so tight,
 Lord to see they have no right
 Lord of Beauty, Lord of Light.
 200

If the earthly things do chain
 Senses and thy mind insane,
 What claim have they still to gain
 Lord of Bliss, the Nectar's Main ?
 201

Let thy eyes see Him alone,
 Let thy mind think Him alone,
 Thou be full of Him alone ;
 He alone is, He alone !
 202

Never must thou Him forget,
 Sacred duties don't forget;
 Don't to senses thee subject;
 One sick sheep doth flock infect.
 203

Ever-holy anchoret !
 Shining Self thou don't forget,
 Don't thou enter *Mâyâ's* net,
 Be not caged in bodies yet.
 204

आँखों में जग का आकर्षण,
 आँखों पर माया आवरण ।
 ऐसी आँखें देखें कैसे ?—
 ना हो उनको प्रभु का दर्शन ।
 (२००)

पागल हों इंद्रिय और मन,
 कसा कसा हो जग का बंधन ।
 कैसे सोचा फिर भी होगा—
 परमानंद प्रभु का दर्शन ।
 (२०१)

आँखें देखें प्रभु को ही बस,
 मानस सोचे प्रभु को ही बस ।
 हों परिपूर्ण प्रभु से केवल—
 प्रभु से ही बस, प्रभु को ही बस ।
 (२०२)

सपने में भी नहीं बिसार,
 पवित्र कर्त्तव्य औ एक ओंकार ।
 इंद्रियों का तुम दास न बनना—
 करे संक्रमित, भेड़ बीमार ।
 (२०३)

गुरु कृपा से जीवन सुधार,
 तुम ही सार, ये ना बिसार ।
 माया जाल में फिर ना फँसना—
 तू कैदी, देह कारागार ।
 (२०४)

Ever-holy anchoret !
 Sacred duties don't forget,
 Mind control by *yog* direct,
 Be thou blameless, thee perfect.

205

Under all conditions ye
 Calm and quiet in mind be,
 Praise and blame be same to thee,
 Gain or loss thou samely see.

206

Loss thou feel not, what lose ye ?
 Gain thou feel not, what gain ye ?
 Praise thee reach not, who praise thee ?
 Blames thee reach not, who blames thee ?

207

Thou the *Âtman* ever-free,
 Out of reach of bonds all ye,
 Self Supreme eternal ye;
 None or nothing is but Thee.

208

Love and hate and praise and blame,
 High position, name and fame —
 Meaningless, exist in name :
 Real not the *Mâyâ*'s game !

209

निष्कलंक, पूर्ण हो योग से,
मुक्त हो जा, सारे रोग से ।
नहीं भूलना पावन कर्तव्य—
मन निग्रह गुरु सहयोग से ।
(२०५)

यश-अपयश या हँसना-रोना,
समभाव देख, पाना-खोना ।
किसी हाल में अब आगे तुम—
भ्रांति-अशांति को ना ढोना ।
(२०६)

क्षति से विचलित, पर क्या खोया,
क्या पा इतराया, फिर रोया ।
यश-निंदा करता कौन कब
सबने काटा, जो-जो बोया ।
(२०७)

पंछी सी उड़ती, बंधन मुक्त,
नीड़ तुम्हारा एक उपयुक्त ।
परम सनातन, परम सत्य—
तुम्हीं आत्मा आनंद युक्त ।
(२०८)

राग-द्वेष, निंदा और ख्याति,
ऊँच, नीच तो माया बनाती ।
ये सत्य नहीं, केवल भ्रम हैं—
अर्थहीन, समझ भली-भांति ।
(२०९)

World is ignis-fat'us ay,
 All misleads both low and high;
 Shun thou must now 'my' and 'thy',
 Shun thou petty, helpless 'I'.

210

Be thou biggest *Soham-I*,
 Absolutest, *Bhumâ-I*;
 Causeless, birthless don't thou die,
 Stainless, painless, changeless ay.

211

Shame it is, oh, shame and shame,—
 Thou to *Mâyâ* has been tame !
 Thou the *Âtman* ever same ;
 Self remember, kill that dame.

212

Mâyâ does thee desecrate,
Mâyâ does thee depredate;
Mâyâ must thou deprecate,
Mâyâ must thou extirpate.

213

Mind is ever obstinate;
 Mind for fighting actuate,
 Mind first thou must animate,
 With thy mind self extricate.

214

दुनिया बस एक धोखा है,
योग से इसी ने रोका है ।
अभी छोड़ 'मैं', 'मेरा', 'तेरा'—
संभल जा अंतिम मौका है ।

(२१०)

तू बन जा विशालतम सोहम,
और बन जा भूमा परमतम ।
निस्पृह, निर्व्यथा योग में मिल—
अब बन जा प्रणव, अमर-परम ।

(२११)

सदा एक ही आत्मा नाम,
बना क्यों माया का गुलाम ?
हाँ शर्म कर, अब तू शर्म कर—
या कर माया को तमाम ।

(२१२)

माया करती पथभ्रष्ट तुम्हें,
लूट शांति दे कष्ट तुम्हें ।
तुम माया को नष्ट करो अब,
या माया करती नष्ट तुम्हें ?

(२१३)

मन ही तो भटकाता है,
इच्छा को उकसाता है ।
मन निग्रह कर, स्वमुक्त करो—
हठी, ना बस में आता है ।

(२१४)

With the wisdom-sword in hand,
 Non-attachment's armour grand,
Sraddhâ's banner, *pranav*-band
 March thou on to Blissful Land.

215

Don't thou falter, don't thou stand,
 Duties ceaseless fight demand;
 Fearless, tactful thou withstand
 All attacks of *Mâyâ's* band.

216

Don't from true path deviate,
 Let mind itself expurgate,
 Let mind itself consecrate,
 Let mind calmness generate.

217

Let mind calmness generate,
 Knowledge in *samâdhi* get ;
Mâyâ thou exterminate,
 Self Supreme become thou yet.

218

Fight thou on life-battle ye,
 Fight to last and fearless be.
 Have thou patience, faith in thee,
 Faith in *Vedas*, teacher free.

219

हाथ में लेकर बुद्धि तलवार,
 विराग कवच में हो तैयार ।
 परम लोक की ओर चलो बस—
 ले श्रद्धाध्वज, मुख में ओंकार ।
 (२१५)

ना अटकना, तुम ना रुकना,
 निडर-कुशल हो, कर सामना ।
 माया के आक्रमण सारे—
 बस लड़ते जाना, ना भ्रुकना ।
 (२१६)

ना सन्मार्ग से मन भटकाना,
 ईश्वर ध्यान में मन लगाना ।
 मन शुद्धि कर, निश्चल बुद्धि कर—
 मन में सच्ची शांति जगाना ।
 (२१७)

मन में सच्ची शांति जगाना,
 समाधि लगा, ज्ञान को पाना ।
 माया के चक्कर तोड़ कर—
 परम आत्म में तुम खो जाना ।
 (२१८)

लड़ो तुम अपना जीवन समर,
 हाँ अंत तक लड़ो होकर निडर ।
 आत्म विश्वास, धैर्य के साथ—
 गुरु-वेद में ध्यान लगाकर ।
 (२१९)

Teacher do thou obsecrate,—
 “*Mâyâ* does enthral me yet,
 Me she does intimidate ;
 Kindly, Lord, me liberate !”
 220

“Kindly, Lord, thou make me free,
 Make me blissful, peaceful ye,
 Kindly give me knowledge ye,
 May I *Âtman* truly be.
 221

“May become I *Âtman* free,
 Birthless, deathless, changeless be,
 Kindly do thou pity me,
 I resign myself to thee !
 222

“I resign myself to thee,
 Bow to thee, for ever thee;
 Show the way to Bliss to me,
 Make me perfect, ever-free.
 223

“Free me from this *samsâr*-hell,
 Mental darkness do dispel,
 Truth me kindly do thou tell,
 Tree of all my doubts do fell !”
 224

“माया का मैं अब तक बंधक,
डरा-डरा सहमा सा अब तक ।
प्रभु ! गुरु आप सा पाकर भी—
बंधक रहूँ और मैं कब तक ?”
(२२०)

प्रभु मुक्त करो, नष्ट हो क्लान्ति,
परमानंद और दो अब शान्ति ।
बना दो सत आत्मा दया से—
देकर ज्ञान मिटा दो भ्रान्ति ।
(२२१)

बन जाऊँ मैं आत्मा मुक्त,
तेरी दया कृपा से युक्त ।
हो अमर-अजन्मा-निर्विकार
मैं हो जाऊँ तुम से संयुक्त ।
(२२२)

तुझमें मेरा पूर्ण समर्पण,
मेरा सहारा, तेरे चरण ।
चिदानंद दे, पूर्ण करो अब—
स्वीकार करो मेरा वंदन ।
(२२३)

मुक्त कर, है नरक संसार,
मानस कलुषित, मिटा अंधकार ।
शंका-दुविधा के पेड़ गिरा—
अब सत्य दिखा, जग के आधार !
(२२४)

Then the teacher, kind is he,
Tells the sacred Truth to thee;
Vedas' words all does tell he.
Makes the Truth so clear to thee.

225

Secret, sacred Truth thou hear
Full of faith and full of cheer ;
Try to understand Truth dear
With the help of reason clear.

226

Bear in mind that reason your
Should conform to *Vedas* pure;
Doubts remove by reason sure,
Mind convince by reason pure.

227

Virâg-vichâr's true perfection,
On the Truth deep meditation
Make the teacher's information
Soon grow into firm conviction.

228

Then thou long for direct vision,
Perfect wisdom's pure fruition,
Long thou too for true perfection
Way to which is *nididhyâshan*.

229

तब गुरु होकर, कृपालु-उदार,
 बतलाते वेदों का सार ।
 पावन सत्य का भेद बताते—
 सत्य में होते स्वामी साकार ।
 (२२५)

पावन सत्य का भेद बताते,
 निष्ठा से ही साधक पाते ।
 स्पष्ट विवेक, निश्चल बुद्धि—
 बिन आँखों के सत्य दिखाते ।
 (२२६)

विवेक, मिटा अपने सब संशय,
 सुविवेक से ही हो मन विजय ।
 पर सावधान ! हो एक सदा—
 विवेक और वेदों का आशय ।
 (२२७)

विराग, विचार की प्रतिस्थापना,
 एक सत्य की गंभीर साधना ।
 बन जाते हैं दृढ़ विश्वास—
 गुरु का ज्ञान और सूचना ।
 (२२८)

लक्ष्य बना साक्षात् दर्शन,
 चरणामृत का रसास्वादन ।
 चाहता मन होना पूर्णतम—
 मार्ग है जिसका निदिध्यासन ।
 (२२९)

For this hermitage thou find,
 Good for *yog* and good for mind;
 All but *Brahman* leave behind,
 Sit therein with quiet mind.

230

All but *Brahman* leave behind;
 Many-ness do leave behind.
 With pure Oneness feed thy mind,
 Practise thus till *yog* thou find.

231

Meditate thou Oneness ever,
 Boundless, Shining Oneness ever ;
 By thy thoughts and doings ever
 Strengthen Oneness, two-ness sever.

232

“I am *Brahman* free and pure,
 All-pervading *Brahman* sure,
 Partless, spotless, blameless, pure,
 Causeless, boundless, elseless sure.

233

“*Soham, Soham, Self am I;*
 Shining Self Supreme am I;
 Nothing, nothing, none but I;
 Birthless, deathless, changeless I.”

234

कर अपनी कृटिया में चिंतन,
 है आसन ही तेरा साधन ।
 ले ब्रह्म साथ और सब छोड़,
 योग करो अब, कर निःशब्द मन ।

(२३०)

ब्रह्म छोड़ सब पीछे छोड़,
 बहुत्व से अब नाता तोड़ ।
 शुद्ध एकत्व में मन मिल जाए—
 कर अभ्यास, योग से जोड़ ।

(२३१)

ध्यान करो एकत्व पर सदा,
 सुखदा, शुभदा और ज्ञानदा ।
 मनसा-कर्मणा, द्वैत मिटाकर—
 दृढ़ एकत्व ही है बस फलदा ।

(२३२)

अखंड-असीम, अभय-अजीत,
 अकारण, अनन्य, मायातीत ।
 मैं ब्रह्म हूँ, केवल ब्रह्म मैं—
 हूँ सर्वव्यापी और पुनीत ।

(२३३)

सोहम, सोहम मैं स्वयम हूँ,
 अहम नहीं, मैं तो सोहम हूँ ।
 शून्य-शून्य मैं शून्य बड़ा—
 अजन्मा, अमर, अजीर्ण मम हूँ ।

(२३४)

Thus thou ever meditate,
 Thus thy mind thou concentrate,
 Mind thou ever saturate
 With the Shining Oneness yet.

235

Pratyāhār's aid do thou take,
 Nothing let thy Oneness shake,
 Nothing let thy *dhyānam* break,
 Full of Oneness mind thou make.

236

Mind to Oneness ever keep,
 Let all *karans* go to sleep,
 Blissful knowledge will then peep
 In *samādhi's* *Chit*-ful sleep.

237

Practise thou *samādhi* ever,
 Ceaseless, breakless, careful ever,
 Let intrusions cease for ever,
 Truest *yog* thou have for ever.

238

Get *samādhis* highest, fine;
 Do control *samādhis* thine,
 Be established in Divine;
 Be thou absolute Divine.

239

ऐसे सदा करना साधना,
मन-चित्त को एकाग्र बाँधना ।
मिल प्रकाशमय एक के साथ—
साधना को भी सदा जाँचना ।
(२३५)

तेरा सहायक प्रत्याहार,
न मिटें एकत्व औ एकाकार ।
ध्यान न टूटे, दुविधा छूटे—
कर एकमय मानस संसार ।
(२३६)

मन सदा अद्वैत में, ध्यान रख,
कर अपनी इंद्रियों पर बस ।
परम ज्ञान तब ही जागेगा—
चिन्मय समाधि में ना टस-मस ।
(२३७)

समाधि का करना अभ्यास,
प्रभु में, गुरु में कर विश्वास ।
वाह्य विचार को रोक दूर ही—
योग करो ले सच्चा संन्यास ।
(२३८)

उच्चतम समाधियाँ लगाओ,
समाधियों पर नियंत्रण पाओ ।
बस योग करो, योग हो जाए—
ईश्वर में ही अब मिल जाओ ।
(२३९)

Thou the *Brahman* blissful, bright,
 Omniscient, eternal Light,
 Self-effulgence, ever-bright,
 Self beyond the *Mâyâ's* night.

240

Suddham, Buddham, Turyarûp,
Sivâdvaitam, Muktirûp,
Brahma param, Sântirûp,
Sarvâtitam, Triptirûp.

241

Nityam, Kev'lam, Sarvâtît,
Satyam, Pûrnâ, Param'siv,
Brahm Parâtpar, Turyâtît,
Aum Tat Sat, Aum, Mâyâtît.

242

 Zetheyer, *Kashmir*. October 11, 1926.

तुम ब्रह्म हो, सानंद पुनीत,
सर्वज्ञाता तुम, परम संगीत ।
आत्म सात्त्विक, सदा प्रकाशित—
आत्म परम तुम मायातीत ।

(२४०)

शुद्ध, बुद्ध और तुरीय रूप,
शिव अद्वैत और मुक्ति रूप,
परम ब्रह्म और शांतिरूप,
सर्वातीत भी, तृप्ति रूप ।

(२४१)

नित्य, केवल और सर्वातीत,
सत्य, पूर्ण और परम शिव,
ब्रह्म परातपर, तुरीयातीत ।
ओम तत सत, ओम, मायातीत ।

(२४२)

काठमाण्डू, नेपाल, जून, २०१०

परिशिष्ट-A

APPENDIX-A

- अतीत - अलग, परे ।
 अध्यास - किसी भी चीज का झूठा ज्ञान ।
 अनापेक्षा - बिना अपेक्षा, उम्मीद के ।
 अलादीन - चिराग के जिन्न से सब काम करानेवाला, स्वयं कुछ नहीं करनेवाला ।
 असंगम - संग दोषों से रहित ।
 अहिल्या - गौतम-ऋषि की पत्नी जो राम के चरण स्पर्श से पथर से अपने रूप में आ गई । (रामायण)
 अक्षर - ईश्वर, वर्ण ।
 इकारस - मोम के पंख बनाकर सूर्य की ओर उड़ने से सूर्य की गर्मी से पंख गल गए और वह गिर पड़ा ।
 इंद्रिय - अवयव, १४ संख्या (५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ कर्मेन्द्रिय और ४ आंतरिक अवयव)
 कर्मा - कर्मा बाई- राजस्थान की एक बड़ी भक्त जिसके प्रसाद का भगवान ने आकर प्रत्यक्ष भोग लगाया ।
 करण - इंद्रिय ।
 कल - बीता हुआ कल - भूत; आनेवाला कल- भविष्य ।
 केवल - एक मात्र, परम - एक मेव ।
 गजराज - भगवान का भक्त जिसकी आर्त पुकार सुन ग्राह से बचाया ।
 गुणातीत - गुणों से परे ।
 गृही - गृहस्थ ।
 चित - परम-आत्मा ।
 चित्त - मन, मानस ।
 चेतन - जीव, जिसमें प्राण हों ।
 जाता - जन्म देने वाला, बनाने वाला ।
 तपस - साधना ।
 तम - तमस-तमोगुण; अंधकार ।

- तत - वह; ब्रह्म ।
 तापस - साधक ।
 तितिक्षा - सहनशीलता ।
 तुरीय - आत्मा की चौथी स्थिति जिसमें वह परमात्मा से एक हो जाती है ।
 तोष - संतोष ।
 दाता - ईश्वर ।
 नित-नित्य - सदा रहने वाला, अजन्मा-अमर ।
 निदिध्यासन - गहरा तथा निरंतर ध्यान ।
 नियम - अष्टयोग के ५ नियम - १) शौच (पवित्रता) २) संतोष ३) तप ४) स्वाध्याय ५) ईश्वर-प्राणिधान (ईश्वरार्पण) ।
 दिक् - स्थान; दिशा ।
 द्वेष - घृणा ।
 धर्म - अध्यात्म; कर्तव्य ।
 प्रणव - ओंकार ।
 पति - ईश्वर ।
 पर - उच्चतर; किंतु; दूसरा ।
 परम - उच्चतम ।
 परावर - उच्चतर और निम्न ।
 प्रत्याहार - मन तथा इंद्रियों का विषयों से निग्रह ।
 पार्थ - अर्जुन । (गीता)
 प्रेम - ईश्वर से संपूर्ण अनुरक्ति ।
 ब्रह्म - परम-पुरुष ।
 भूत - जीव; बीता हुआ ।
 भूमा - अनंत, ब्रह्म ।
 भोक्ता - भोग करने वाला ।
 मधुकर - भिक्षु; भ्रमर ।
 मायातीत - माया से परे ।
 मिताहार - अल्प एवं उचित आहार ।
 मीरा - मीरा बाई, मेवाड़ की कृष्ण में पूर्ण समर्पित रानी जिसने भक्ति में कष्ट ही कष्ट सहे-एक भक्ति कवयत्री ।

- मुक्ति रूप - साक्षात् मुक्ति ।
- मंथरा - कैकेयी की दासी जिसके कारण राम को वनवास मिला ।
(रामायण)
- यम - अष्टयोग के ५ यम - १) अहिंसा २) सत्य ३) अस्तेय ४) ब्रह्मचर्य ५) अपरिग्रह ।
- रज - रजस-रजोगुण; धूल-रेत ।
- रक्तबीज - एक असुर जिसके शरीर से गिरनेवाली रक्त की बूंद से एक और असुर रक्तबीज उत्पन्न हो जाता था ।
- राग - लगाव, आसक्ति ।
- लोभ - भोजन या किसी अन्य पदार्थ के लिए लोलुपता ।
- व्यसन - बुरी आदतें जिनकी संख्या १८ हैं ।
- विकार - परिवर्तनीयता, बुराइयां- ६ ।
- विदुरनी - भक्त विदुरकी पत्नी जिसने भगवान कृष्ण को केलों के छिलके खिलाए और केले फेंक दिए । (भागवत)
- विराग - अनासक्ति ।
- शबरी - भक्त भीलनी जिसने भगवान को चखकर जूठे बेर खिलाए । (रामायण)
- शिवाद्वैतम - एक शिव, ईश्वर ।
- सत्त्व - सतोगुण ।
- सत - सत्य ।
- समाधि - ध्यान में एक ईश्वर में पूर्ण विलय ।
- सहस्रार - हजार पंखुड़ियों वाला कमल जो कि योगी के मानस में जगता है ।
- साधन - चार साधन - १) विवेक २) विराग ३) मोक्षाकांक्षा ४) छः सद्गुण ।
- संध्या - प्रातः, अपरान्ह और सायं की तीन प्रार्थनाएँ ।
- हरिदास - चैतन्य महाप्रभु की परंपरा के भक्त जिन्हें एक मुस्लिम काजी द्वारा कोड़े लगवाए गए और मरा समझ नदी में फेंक दिया गया परंतु न वे मरे और न ही अपनी धार्मिक आस्था छोड़ी ।

परिशिष्ट-B

APPENDIX-B

- Abhimān(a)*—pride, self-conceit.
Adhyās (a)—super-imposition.
Alpam—smallness.
Amrit (am)—nectar; immortality; final beatitude; the Supreme Spirit.
Anapeksha—not minding, requiring or depending upon anything.
Āsan—a cloth or skin or any other thing, upon which one sits.
Āshrams—four orders of life ;—(1) student-life, (2) householder's life, (3) ascetic life, (4) life of complete renunciation.
Ātman—soul; the individual soul; the Supreme Self
Aum-Brahman; symbol of Brahman.
Baddha—bound.
Bhakti—devoutness ; mixed feeling of sacred love and reverence.
Bhikshu—one belonging to the fourth order of life.
Bhoktā—enjoyer.
Bhuban (as)—worlds.
Bhumā—Infinite, Brahman.
Bhūtas—living beings.
Brahma-muhurta—the period of 48 minutes just preceding the last 48 minutes of the night.
Brahman—the Supreme Being.
Buddham—All-knowing.
Buddhi—intelligence, intellect.
Chakras—mystical centres in human body.
Chelā—disciple.
Chetan(a)—animate.
Chit—Pure intelligence; Soul, the Supreme Spirit.
Chitta—mind.
Devas—gods.
Dharma—spirituality.
Dhyānam—meditation.
Dik—space, the Power causing the idea of space.
Doshas—defects.

Dvesh—hate.

Gairik—dyed with ochre.

Grih̄—a house-holder.

Gunas—the 3 constituents of Prakriti ; the 3 properties belonging to all created things.

Gunâtīta—transcending all gunas.

Haridās—a follower of Sri Chaitanya For his vaishnavism he was severely flogged by the order of a Mahomedan Kazi at 22 market-places and was thrown into a river as dead ; but he neither died nor gave up his religious convictions.

Hom (a)—offering of oblations to gods into sacrificial fire.

Ichchhā—volitional power.

Indriyas—organs, fourteen in number—five of perception, five of actions and the four internal organs.

Jad (a)—inanimate.

Jap (a)—muttering of mantras.

Jiv (a)—individual soul.

Jnan (a)—knowledge: Power causing knowledge.

Kāl (a)—Time; Power causing the idea of time.

Kām (a)—desire ; lust.

Kamandal—a water-pot used by ascetics.

Karanas—indriyas, both internal and external.

Karma—action.

karttā—doer.

Keval (am)—sole, absolute.

Kriyā—action, Power causing movements.

Krodh (a)—anger.

Kshamā—forgiveness.

Lobh (a)—hankering after food.

Mādhukar—alms collected by begging from door to door.

Mānav (a)—man, descended from Manu (thinking faculty).

Mantra—a formula sacred to any Deity.

Maun (a)—silence.

Mauni—observing silence.

Mâyā—illusion; the Power causing illusions -(Vide I. 245-233)

Mâyâtīta—beyond Mâyā.

Mītāhār—moderation in diet. Sāttwik food taken in such a quantity that the fourth part of the belly may remain empty, with the

- desire of pleasing the Lord, not the palate.
- Moḥa*—delusion, fascination.
- Moksha*—eternal liberation of the soul from pains and bondages; final beatitude.
- Mudrās*—certain positions, especially of the fingers, practised in religious worships.
- Mukta*—Who has attained final emancipation.
- Muktirup (a)*—embodiment of final beatitude.
- Nāms*—names.
- Nididhyāshan (a)*—profound and continuous meditation.
- Nityam*—eternal.
- Niyam (a)*—restraint of mind, purification, contentment, study of the scriptures and the meditation of God.
- Pāpam*—sin, demerit.
- Para*—higher.
- Parābar*—higher and lower.
- Parama*—highest.
- Pāsh (a)*—the bond which enchains the individual soul.
- Pashu*—the soul in bondage.
- Pati*—the Lord.
- Pitris*—ancestors.
- Prāna*—respiration, vital air, principle of life.
- Pranav (a)*—the sacred syllable Aum.
- Prānāyam*—restraining or suspending the breath in the proper way.
- Prasād*—remnants of food offered to God.
- Pratyāhār*—withdrawing the mind and indriyas from their objects.
- Prem*—ardent love for God.
- Punyam*—virtuous deeds, religious or moral merit.
- Purānas*—sacred works, 18 in number, supposed to have been composed by Vyāsa.
- Purnam*—perfect.
- Rāg (a)*—affection
- Rajas*—the second of the 3 gunas.
- Raktabij*—an Asura, so named because out of each drop of blood falling from his body on the ground, one Raktabij of equal strength used to be born.
- Rām*—Vishnu born as the first son of Dasharath. When he was about to pluck out one of his lotus-like eyes for the worship of

Durgâ, she appeared and gave him the desired boon of victory in his wars with Râvana.

Ripus—enemies—lust, anger, gluttony, infatuation, pride and jealousy.

Rûpas—forms.

Sadâchâr—virtuous conduct.

Sâdhaka—one practising yoga.

Sâdhanas—(1) vivek, (2) virâga, (3) longing for liberation, and (4) the group of 6 qualities.

Sahasrâr(a)—a thousand petalled lotus, perceived by the yogins in the brain.

Samâdhi—perfect absorption of thought into the one object of meditation.

Samkalpa—mental resolve.

Samsâr—mundane existence ; the world ; worldly life ; succession of births and deaths.

Sandhyâ—The morning, noon and evening prayers.

Sântirup—embodiment of Peace.

Sanyâs—formal acceptance of the fourth order. Complete renunciation of the world.

Sarvâtîta—beyond all.

Sat—existence.

Satyam—True, real, Truth.

Sattwa—the quality good, effulgent and pure, regarded as the highest of the three gunas.

Sâttwik—endowed with the quality of sattwa.

Siddhis—supernatural powers.

Sikhâ—a tuft of hair on the crown of the head.

Siv—final beatitude ; the name of a God.

Sivâdvaitam—*Siv*=final beatitude ; *advaitam*=of uniform, unchanging nature ; without a second.

So-ham—I am He (Brahman).

PUBLISHER'S NOTE

Man, ignorant of his true nature, tries to realise himself in the gratification of his mind and senses rushing towards out-ward objects. He greedily catches at the fruit of worldly happiness, but it turns into the ash of sorrow, misery and the pangs of repeated births and deaths. In that state he thinks himself to be a forlorn cast-away creature tossing to and fro like a despicable straw on the waves of the ocean of this world.

But is man so weak, so help-less as he considers himself to be ? Certainly not. He has made himself a miserable animal, he can make himself all-blessed, divine. He does not care to know how he has come to be this, far less, how to get out of this condition. He drags his weary never-ending way along the be-wildering mazes of this world and thinks that his journey will never have its end. But at every turn and every point there is an avenue by which he can escape the never-ending journey of life and death.

This poem has discussed the question and given the solution. Call it poetry, call it versified prose, it is far above both. It is the record of the experience of one, whose very life has demonstrated the highest pitch of poetic fervour. 'Poets are of imagination all compact'; but the airy imagination of the poet shrinks into nothingness before the solid realization of a *Rishi*. Prose requires clarity and cogency of arguments; but who can be more clear-sighted and more cogent than he, who has attained the all-Light and all-Knowledge?

Is the subject-matter new ? Certainly not. How many *Rishis* from time immemorial have testified to its veracity ! But like the morning-sun it is ever new. It appears old, tire-some and painful only to the diseased sight. The poem itself suggests the remedy how to cast off the disease so as to enjoy it fully and thoroughly.

The poem consists of two parts, each complete in itself; still for the proper understanding of the one, the other is also necessary.

For an easy grasp of the subject a gist of the poem is annexed here-to.

An attempt has been made in the appendix to explain the meaning of most of the Sanskrit words that have been used in the poem.

It is hoped that the book will be helpful to every aspirant after Truth. Aum.



GIST OF PART I.

(THE NUMBERS ARE THOSE OF THE SLOKAS).

In order to be able to reach the Goal, a pilgrim to the Griefless Land, a real and earnest seeker of Truth must have *viveka* and *virāga*, faith and purity, patience and endurance, calmness and contentment besides sterling honesty and blameless morality. (I-II)

Indispensable for the journey is the help of a suitable guide, to whom the aspirant must bind himself with unreserved resignation. (12-13, 45-47)

A sincere pilgrim always receives help from, and Grace of, the Divine Mother to whom he should cling with self-less and ardent love and open his heart with child-like simplicity. (17-38). Essential for the aspirant is the Divine Grace, to be favoured with which he should perform *tapas* diligently and ceaselessly. He cannot take rest; nay, his whole life and all are bitter to him till the Mercy of the Mother is showered upon him. (39-43)

In order to acquire the requisites for the journey, he, endowed with morality and pious love, should serve the world self-lessly and perform all his duties timely and nicely. (48-73)

Continuing to do his duties he will gradually acquire purity, *viveka*, *bhakti* and *virāga*. (74-82)

He will then be blessed with *Vijnān* and become perfect. (83-92)

Perfection requires a thorough knowledge of *yoga*, —*yoga* as end and *yoga* as means. Though each *yoga* can independently lead the *sādhaka* to the same Goal, still every path is not suitable for all. Every seeker must know his own *yoga* from his guide. (93-101,16)

The practice of *yoga* should be begun without the least delay and no pains should be spared to make it a complete success. Pain is gain whereas ease is ever a loss. (102-149)

For the practice of *yoga*, a suitable hermitage in a suitable place is necessary. There-in a fitting seat should be made and proper *âsan* spread there-on. The hermitage should be kept clean and holy. (150-154)

The *Sâdhaka* should then duly begin his *yoga* and try to secure total calmness of mind and thus attain *Moksha*. (155-167)

Seeking *Moksha* requires him to be entirely *sâttwik*. (168-172) . He must beware of temptations and save himself from their inroads. (172-181). He must also free himself from pride and vanity, avoid seeking name and fame, and be meek and modest. (182-202). He must drive out of his system the five principal enemies who way -lay him in course of his holy march. (203-210). To ensure success in *yoga*, he must regulate his fooding and sleeping. (210-223)

Careful and break-less practice of *prânâyâma* secures for the *yogin* the height of Kaivalyam. (224-233)

A *yogin* should neither be a book-worm nor talk much; nay, he should observe *maunam* and try to unmind his mind. (234-238). When his mind becomes entirely vacant and Divinity shines in consequence, he should continue his *yoga*, till he becomes thoroughly absorbed in *Bhûmâ*. He should in no case be satisfied with *alpam* which is always painful and fearsome. (238-244)

Illusions, five in number, must be killed before the *yogin* can merge in *Parâtpara Brahman*. (245-253)

The attainment of Perfection is open to men of all *âshramas*, although it is safer and easier for the *bhikshus*. But before a man qualifies himself for the fourth *âshram* by acquiring the four *sâdhans*, he should remain a *grihî* and perform his duties duly. (254-262). He should earn honestly and spend judiciously. He must lovingly worship the Lord

by self-lessly serving the world which is but one with Him. (263-273). He should see and feel Oneness in all things and in all movements and always fix his mind on Divinity which is the only Existence. Thus he will be able to know and become *Brahman*, if he does not break his practice for any cause. (274-286).

He who likes to worship *Krishna* or *Siva* or any other Deity will also reach Perfection, if he continues his *yoga* in the proper way. (287-301)

The practice of *mantra yoga* will also lead the *yogin* to the highest state. (302-314)

Book-learning and inferential knowledge are helpers indeed, but they of themselves cannot reveal *Brahman* (315-323). Perfection requires perfect concentration, to gain which a *yogin* should work with heart and soul. He should always and without hesitation accept for him all that are favourable for his *yoga* and reject whatever may stand in the way of his spiritual progress. (324-334). Real Knowledge is obtainable only in the highest *Samādhis*; and when knowledge is gained, its worth should be tested. When it is known beyond doubt that real and perfect knowledge of the Truth has been obtained, the *yogin* should try to be established in the highest Truth. (335-337)

Truth is absolute *Brahman*, and the *yogin* in one with That. He is ever pure and *vikārless*, although all the worlds live and move and have their being in Him. He is ever the same, ever perfect, ever Chit and Bliss eternal. Such a perfected Saint, a *Jivan-mukta* true and real is ever beyond *Mâyâ*, ever beyond all, ever shining in His own glory, in His own Supreme grandeur and excellence. (338-374)

YOGA
AND
PERFECTION
SWAMI PURNANANDA

साधना और
सिद्धि

(भावानुवाद)

जयप्रकाश अग्रवाल

ब्रजनिधि-प्रकाशन के अन्य ग्रन्थ

१. ब्रज विभव की अपूर्व श्री भक्तिमति ऊषा बहिनजी-बृहच्चरित्र
२. भगवान् निम्बार्क प्रणीत-प्रातःस्तव, मधुर रसोच्छलन
३. ब्रजभूमि मोहिनी, द्वारा-भक्तिमति ऊषा बहिनजी
४. लीलारस माधुरी (श्री राधा कृष्ण कृपा कटाक्ष), द्वारा-भक्तिमति ऊषा बहिनजी
५. ब्रज की अपूर्व श्रीभक्तिमति ऊषा बहिनजी-संक्षिप्त जीवनी
६. मधुरस निर्भर (प्रथम भाग)-भक्तिमति ऊषा बहिनजी
७. मधुरस निर्भर (द्वितीय भाग)-भक्तिमति ऊषा बहिनजी
८. मधुरस निर्भर (तृतीय भाग)-भक्तिमति ऊषा बहिनजी
९. श्रीराधा सुधा निधि (द्वितीय संस्करण), सम्पादक-भक्ति विजय
१०. जीवन-तथ्य, सम्पादक-भक्ति विजय
११. लीलारस तरंगिणी (प्रथम भाग) -भक्तिमति ऊषा बहिनजी
१२. लीलारस तरंगिणी (द्वितीय भाग) -भक्तिमति ऊषा बहिनजी
१३. लीलारस तरंगिणी (तृतीय भाग) -भक्तिमति ऊषा बहिनजी
१४. लीलारस तरंगिणी (चतुर्थ भाग) -भक्तिमति ऊषा बहिनजी
१५. लीलारस तरंगिणी (पंचम भाग) -भक्तिमति ऊषा बहिनजी
१६. प्रेमपीयूष धारा -सम्पादक एवं संग्रहकर्ता -भक्ति विजय
१७. प्रेमसुधा धारा-सम्पादक एवं संग्रहकर्ता-भक्ति विजय
१८. श्रीकृष्ण लीला आलोक-सम्पादक एवं संग्रहकर्ता-भक्ति विजय
१९. श्री कृष्ण कर्णामृतम्-श्री-श्री लीलाशुक विल्वमंगल कृत-टीका सहित
- सम्पादिका सुश्री दर्शन देवी अग्रवाल